اُتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾

(४५) जो किताब आपकी ओर प्रकाशना (वह्यी) की गयी है उसे पढ़िये [1] तथा नमाज़ स्थापित कीजिए (निश्चित रूप से पढ़िये) | [2] निःसंदेह नमाज़ निर्लज्जा तथा दुराचार से रोकती है, [3] निःसंदेह अल्लाह का स्मरण बहुत

---

[1]क़ुरआन करीम के पाठ के अनेक उद्देश्य हैं। मात्र प्रतिकार तथा पुण्य के लिए, उसके अर्थ एवं भावार्थ पर विचार एवं चिन्तन के लिए, शिक्षा-दीक्षा के लिए तथा भाषण एवं व्याख्या के लिए, पाठ के आदेश में ये सभी प्रकार सम्मिलित हैं।

[2]क्योंकि नमाज़ से (यदि नमाज़ हो) मनुष्य का विशेषरूप से सम्बन्ध अल्लाह से हो जाता है, जिससे मनुष्य को अल्लाह तआला की सहायता प्राप्त होती है, जो जीवन के प्रत्येक मोड़ पर उसकी दृढ़ता एवं स्थिरता का कारण तथा मार्गदर्शन का साधन सिद्ध होती है। इसीलिए क़ुरआन करीम में कहा गया है,

﴿ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِیْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ﴾

"हे ईमानवालो ! धैर्य एवं नमाज़ से सहायता प्राप्त करो।" (*सूर: अल-बक़र:-१५३*)

नमाज़ तथा धैर्य कोई भौतिक (दृश्य) वस्तु तो नहीं कि मनुष्य उसे पकड़कर सहायता प्राप्त करे। यह तो अगोचर वस्तु है। इसका अर्थ यह है कि मनुष्य का इनके द्वारा अपने प्रभु से विशेष सम्बन्ध एवं लगाव हो जाता है। वह पग-पग पर उसकी सहायता एवं मार्गदर्शन करता है, इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रात्रि के एकान्त में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने पर बल दिया गया, क्योंकि आपके ऊपर जो महान कार्य सौंपा गया था, उसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह की सहायता की अत्यधिक आवश्यकता थी। यही कारण है कि स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी जब कोई महत्वपूर्ण समस्या का सामना होता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ का प्रयोजन करते। «إِذَا حَزَبَهُ أَمْرٌ فَزِعَ إِلَى الصَّلَاةِ» (मुसनद अहमद तथा अबू दाऊद)

[3]अर्थात असभ्यता एवं बुराई को रोकने का साधन बनती है, जिस प्रकार औषधियों के विभिन्न प्रभाव हैं तथा कहा जाता है कि अमुक औषधि अमुक रोग को रोकती है तथा वास्तव में ऐसा होता है, परन्तु कब ? जब दो बातों को ध्यान में रखा जाये। एक तो औषधि को नियमित रूप से उस नियम तथा प्रतिबंध के साथ प्रयोग किया जाये, जो वैद्य, हकीम अथवा डाक्टर ने बताया है। दूसरा परहेज़ अर्थात ऐसी वस्तुओं का प्रयोग न किया जाये जो उस औषधि के प्रभाव को कम करे अथवा समाप्त कर दे। इसी प्रकार नमाज़ में भी अल्लाह तआला ने ऐसा अध्यात्मिक प्रभाव रखा है कि यह मनुष्य को असभ्यता तथा बुराई से रोकती है, परन्तु उसी समय जब नमाज़ सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि

बड़ी बात है ।[1] तुम जो कुछ कर रहे हो उससे अल्लाह (तआला) अवगत है ।

(४६) तथा अहले किताब के साथ अत्यन्त सभ्यतापूर्ण विधि से वाद-विवाद करो,[2] परन्तु उनके साथ जो उनमें अन्यायी हैं ।[3] तथा स्पष्ट घोषणा कर दो कि हमारा तो उस किताब पर भी ईमान है, जो हम पर

وَلَا تُجَادِلُوٓا أَهْلَ الْكِتٰبِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۖ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۖ وَقُولُوٓا آمَنَّا بِالَّذِيٓ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلٰهُنَا وَإِلٰهُكُمْ

वसल्लम के अनुसार उन विधियों तथा प्रतिबंधों के साथ पढ़ी जाये जो उसकी शुद्धता एवं मान्यता के लिए अनिवार्य हैं । जैसे, उसके लिए प्रथम वस्तु निःस्वार्थता है, द्वितीय हृदय की पवित्रता अर्थात नमाज़ में अल्लाह के अतिरिक्त अन्य की ओर ध्यान न हो, तृतीय सामूहिक रूप में एकत्रित होकर निर्धारित समय पर पढ़ी जाये, चतुर्थ नमाज़ के आधार (क़ुरआन का पाठ, रूकूअ (झुकना), बैठक (कौमः), नत्मस्तक होना (सजदा) आदि में संतुलन एवं शान्ति, पूर्ण एकाग्रता, ख़ुशूअ-ख़ुदूअ (तल्लीनता एवं रूंधित) अवस्था, नियमित रूप से उसका प्रबन्ध, और वैध एवं पवित्र जीविका का प्रयोग । हमारी नमाज़ें इन प्रतिबन्धों एवं नियमों से शून्य हैं, इसी कारण उसके प्रभाव भी हमारे जीवन में प्रदर्शित नहीं हो रहे हैं जो क़ुरआन करीम में बताये गये हैं । कुछ ने इसके अर्थ आदेश के किये हैं अर्थात नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिए कि वह असभ्य कार्यों एवं बुराई से रूक जाये ।

[1]अर्थात निर्लज्जता तथा दुराचार से रोकने में अल्लाह का वर्णन नमाज़ की स्थापना से भी अधिक प्रभावशाली है इसलिए कि मनुष्य जब तक नमाज़ पढ़ता है बुराई से रूका रहता है, परन्तु बाद में उसका प्रभाव क्षीण हो जाता है । इसके विपरीत हर समय अल्लाह का स्मरण उसके लिए हर समय बुराई में बाधक रहता है ।

[2]इसलिए कि वे ज्ञानी एवं बुद्धिमान हैं, बात को समझने की योग्यता एवं क्षमता रखते हैं । इस कारण उनसे विवाद एवं वार्ता में कटुता एवं तीव्रता उचित नहीं ।

[3]अर्थात जो वाद-विवाद में अति से काम लें तो तुम्हें भी कड़ी बात तथा भाषा प्रयोग करने की अनुमति है । कुछ ने प्रथम गुट से तात्पर्य वे अहले किताब लिए हैं जो मुसलमान हो गये थे तथा दूसरे गुट से वे लोग जो मुसलमान नहीं हुए, बल्कि यहूदी एवं इसाई ही रहे तथा कुछ ने ظَلَمُوا مِنْهُمْ का अभिप्राय उन अहले किताब को लिया है जो मुसलमानों के विरूद्ध हिंसक विचार रखते थे तथा लड़ते-भिड़ते थे । उनसे तुम भी लड़ा करो, यहाँ तक कि वे मुसलमान हो जायें अथवा सुरक्षा कर (जिज़या) दें ।

وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾

अवतरित की गयी है तथा उस पर भी जो तुम पर अवतरित की गयी ।[1] हमारा-तुम्हारा प्रभु एक ही है, हम सब उसी के आदेशाधीन हैं ।

وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۚ فَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمِنْ هَٰؤُلَاءِ مَن يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा हमने उसी प्रकार आपकी ओर अपनी किताब अवतरित की है । अत: जिन्हें हमने किताब प्रदान की है, वे उस पर ईमान लाते हैं[2] तथा उनमें से कुछ उस पर ईमान रखते हैं,[3] तथा हमारी आयतों को अस्वीकार केवल काफ़िर ही करते हैं ।

وَمَا كُنتَ تَتْلُو مِن قَبْلِهِ مِن كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكَ ۖ إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) तथा इससे पूर्व तो आप कोई किताब पढ़ते न थे,[4] तथा न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे[5] कि यह असत्य के पुजारी लोग शंका एवम् सन्देह में पड़ते ।[6]

---

[1]अर्थात तौरात तथा इंजील पर । अर्थात ये भी अल्लाह की ओर से अवतरित की गयी हैं तथा यह कि इस्लाम के धर्मविधान आने तथा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नवी उदघोषित होने से पूर्व यही अल्लाह का धर्म विधान था ।

[2]इससे तात्पर्य अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि हैं । किताब प्रदान से तात्पर्य है उसके अनुसार कर्म करना । जैसाकि उसके अनुसार जो कर्म नहीं करते, उन्हें यह किताब प्रदान ही नहीं की गयी ।

[3]इनसे तात्पर्य मक्कावासी हैं, जिनमें से कुछ ईमान ले आये थे ।

[4]इसलिए कि अनपढ़ थे ।

[5]इसलिए कि लिखने के लिए भी शिक्षा आवश्यक है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी से प्राप्त नहीं की थी ।

[6]अर्थात यदि आप कुछ पढ़े-लिखे होते अथवा किसी गुरू से शिक्षा प्राप्त किये होते, तो कहते कि यह क़ुरआन अमुक व्यक्ति की सहायता अथवा उससे शिक्षा प्राप्त करने का परिणाम है ।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾

(४९) वरन् यह (कुरआन) तो प्रकाशमय आयतें (सूत्र) हैं जो ज्ञानियों के हृदय में सुरक्षित हैं ।[1] हमारी आयतों को अस्वीकार करने वाला सिवाय अत्याचारियों के कोई अन्य नहीं ।

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तथा उन्होंने कहा कि इस पर कुछ निशानियां (चमत्कार) इसके प्रभु की ओर से क्यों नहीं उतारी गयीं। (आप) कह दीजिए निशानियां तो सभी अल्लाह के पास हैं[2] मेरी स्थिति तो केवल स्पष्टरूप से सचेत कर देने वाले की है ।

اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

(५१) क्या उन्हें यह पर्याप्त नहीं कि हमने आप पर अपनी किताब अवतरित कर दी जो उन पर पढ़ी जा रही है ।[3] इसमें कृपा (भी) है तथा शिक्षा (भी) है, उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं ।[4]

---

[1]अर्थात कुरआन मजीद के हाफिज़ों (कण्ठस्थ करने वालों) के हृदय में, यह कुरआन का चमत्कार है कि कुरआन मजीद अक्षरशः हृदय में सुरक्षित हो जाता है ।

[2]अर्थात ये चिन्ह उसकी चाहत एवं योजना जिन भक्तों पर उतारने की मांग करती है, वहाँ वह अवतरित करता है, इसमें अल्लाह के अतिरिक्त किसी का अधिकार नहीं है ।

[3]अर्थात वे लक्षणों की मांग करते हैं। क्या उनके लिये लक्षण स्वरूप यह कुरआन पर्याप्त नहीं है जो हमने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अवतरित किया है तथा जिसके विषय में उन्हें चैलेंज किया गया है कि इस जैसा कुरआन लाकर दिखाओ अथवा कोई एक अध्याय ही बनाकर प्रस्तुत करो। जब कुरआन के इस चमत्कार-प्रदर्शन के उपरान्त भी ये कुरआन पर ईमान नहीं ला रहे हैं तो आदरणीय मूसा तथा ईसा अलैहिस्सलाम की भांति इन्हें चमत्कार दिखा भी दिये जायें, तो उस पर यह कौन-सा ईमान ले आयेंगे ?

[4]अर्थात उन लोगों के लिए जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह कुरआन अल्लाह की ओर से आया है, क्योंकि वही इससे लाभ उठाते हैं ।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًاۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾

(५२) कह दीजिए कि मुझमें तथा तुममें अल्लाह तआला का साक्षी होना पर्याप्त है,[1] वह आकाश तथा धरती की प्रत्येक वस्तुओं का जानने वाला है, जो लोग असत्य को मानने वाले हैं तथा अल्लाह (तआला) से कुफ़्र करने वाले हैं,[2] वे अत्यधिक हानि में हैं[3]।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ۗ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा ये लोग आप से प्रकोप की शीघ्रता मचा रहे हैं,[4] यदि मेरी ओर से निर्धारित समय न होता, तो अभी तक उनके पास प्रकोप आ चुका होता,[5] यह निश्चित बात है कि सहसा उनके अनजाने में उनके पास प्रकोप आ पहुँचेगा।[6]

---

[1]इस बात पर कि मैं अल्लाह का नबी हूँ तथा जो किताब अवतरित हुई है निश्चित रूप से अल्लाह की ओर से है।

[2]अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को पूज्य ठहराते हैं तथा जो वास्तव में इबादत के योग्य है अर्थात अल्लाह तआला, उसका इंकार करते हैं।

[3]क्योंकि यही लोग बौद्धिक उपद्रव एवं बुरे विचारों में लिप्त हैं, इसलिए उन्होंने जो सौदा किया है कि ईमान के बदले कुफ़्र तथा मार्गदर्शन के बदले भटकावे को ख़रीदा है, उसमें ये हानि उठाने वाले हैं।

[4]अर्थात संदेष्टा की बात मानने के बजाय कहते हैं कि यदि तू सच्चा है तो हम पर प्रकोप उतरवा दे।

[5]अर्थात उनके कथन एवं कर्म अवश्य इस योग्य हैं कि उन्हें तुरन्त धरती से समाप्त कर दिया जाय। परन्तु हमारा नियम है कि प्रत्येक समुदाय को एक निश्चित समय तक अवसर देते हैं, जब कर्म करने की अवधि समाप्त हो जाती है तो हमारा प्रकोप आ जाता है।

[6]अर्थात प्रकोप का जब निर्धारित समय आ जायेगा तो इस प्रकार अचानक आयेगा कि उन्हें पता भी न चलेगा। यह निर्धारित समय वह है जो मक्कावासियों के लिए उसने

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾

(५४) ये प्रकोप की शीघ्रता मचा रहे हैं तथा (शान्ति रखें) नरक काफ़िरों को घेर लेने वाला है ।[1]

يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

(५५) उस दिन उनके ऊपर-नीचे से उन्हें प्रकोप ढांक रहा होगा [2] तथा अल्लाह महान कहेगा कि अब अपने कुकर्मों का स्वाद चखो ।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

(५६) हे मेरे ईमान वाले भक्तो ! मेरी धरती अति विस्तृत है, तो तुम मेरी ही इबादत करो ।[3]

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) प्रत्येक प्राणी को मृत्यु का स्वाद चखना है तथा तुम सब हमारी ही ओर लौटाये जाओगे ।[4]

लिख रखा था, अर्थात बद्र के युद्ध में हत्या एवं बन्दी बनाया जाना अथवा फिर क़ियामत का आना है, जिसके पश्चात काफ़िरों के लिए यातना ही यातना है ।

[1]प्रथम يستعجلونك सूचना (विधेय) के रूप में था तथा यह द्वितीय आश्चर्य के रूप में है अर्थात यह बात आश्चर्यजनक है कि यातना के स्थान (नरक) उनको अपने घेरे में लिये हुआ है । फिर भी ये प्रकोप के लिए शीघ्रता मचा रहे हैं ! यद्यपि प्रत्येक आने वाली वस्तु निकट ही होती है, उसे दूर क्यों समझते हैं ? अथवा यह पुनरावृत्ति बल देने के लिए है ।

[2] يَقُولُ का कर्त्ता अल्लाह है अथवा फ़रिश्ते, अर्थात चारों ओर से जब उन पर यातना हो रही होगी तो कहा जायेगा ।

[3]उसमें ऐसे स्थान से, जहाँ अल्लाह की इबादत करना कठिन हो तथा धर्म पर स्थित रहना कष्टदायी हो जाये तो स्थानान्तरण का आदेश है, जिस प्रकार मुसलमानों ने पहले इथोपिया तथा तत्पश्चात मदीना की ओर प्रस्थान किया ।

[4]अर्थात मृत्यु का कड़ुवा घूंट तो अन्ततः सभी को पीना है, स्थानान्तरण करोगे तब भी तथा न करोगे तब भी, इसलिए तुम्हारे लिए देश तथा सम्बन्धियों एवं मित्रों को छोड़ना कठिन नहीं होना चाहिए । मृत्यु तो तुम जहाँ भी होगे आ जायेगी । परन्तु यदि अल्लाह की इबादत करते हुए मृत्यु आ जायेगी तो तुम परलोक के सुखभोगी होगे, इसलिए कि मरकर तो अल्लाह ही के पास जाना है ।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जो लोग ईमान लाये तथा पुण्य के कार्य भी किये उन्हें हम निश्चित रूप से स्वर्ग के, उन उच्च मकानों में स्थान देंगे जिनके नीचे से नदियाँ बह रही हैं [1] जहाँ वे सदैव रहेंगे। [2] कार्य करने वालों का क्या ही सुन्दर परिणाम है।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) वे जिन्होंने धैर्य रखा,[3] तथा अपने प्रभु पर भरोसा रखते हैं।[4]

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦٠﴾

(६०) तथा बहुत से[5] पशु हैं जो अपनी जीविका लादे नहीं फिरते[6] उन सबको तथा तुम्हें भी अल्लाह तआला ही जीविका प्रदान

---

[1]अर्थात स्वर्गवासियों के घर ऊँचे होंगे, जिनके नीचे सरितायें प्रवाहित होंगी। ये सरितायें शीतल जल, मदिरा, मधु तथा दूध की होंगी, इसके अतिरिक्त उनकी धारायें जिस ओर फेरना चाहेंगे, फिर जायेंगी।

[2]उनके क्षय (अन्त) का भय होगा न उन्हें मृत्यु का भय, न किसी अन्य स्थान कि ओर फिर जाने का भय।

[3]अर्थात धर्म पर अटल से स्थायी रहे, स्थानान्तरण के कष्ट सहन किये, परिवार वाले निकट सम्वन्धी एवं मित्रों की दूरी को मात्र अल्लाह की प्रसन्नता के लिए सहन किये।

[4] धार्मिक तथा सांसारिक प्रत्येक विषय एवं परिस्थिति में।

[5] كَأَيِّن में काफ़ (ك) उपमा का है तथा अर्थ है कितने ही अथवा बहुत से।

[6]क्योंकि उठाकर ले जाने का उनमें साहस ही नहीं होता, उसी प्रकार वे भण्डार भी नहीं कर सकते। अर्थ यह है कि जीविका किसी विशेष स्थान से सम्बन्धित नहीं होती, अपितु अल्लाह की जीविका अपनी समस्त सृष्टि के लिए सामान्य रूप से है, वह जो भी हो, तथा जहाँ भी हो वल्कि अल्लाह तआला ने हिजरत (स्थानान्तरण) कर जाने वाले सहाबा को पूर्व से कहीं अधिक तथा पवित्र जीविका प्रदान की, इसके अतिरिक्त अल्प अवधि में ही उन्हें अरव के विभिन्न क्षेत्रों का शासन प्रदान कर दिया। رضي الله عنهم اجمعين

करता है।[1] वह अत्यधिक सुनने जानने वाला है।[2]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ ﴿٦١﴾

(६१) तथा यदि आप उनसे पूछें कि धरती तथा आकाश का स्रष्टा तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को कार्य में लगाने वाला कौन है तो उनका उत्तर यही होगा कि अल्लाह तआला,[3] तो फिर किधर उल्टे जा रहे हैं।[4]

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ

(६२) अल्लाह तआला अपने भक्तों में से जिसे चाहे अत्याधिक जीविका प्रदान करता है तथा जिसे चाहे कम,[5] नि:संदेह अल्लाह

---

[1]अर्थात कोई कमजोर है अथवा शक्तिशाली, संसाधन से परिपूर्ण है अथवा शून्य, स्वदेश में है अथवा शरणार्थी एवं परदेसी, सबकी जीविका चलाने वाला वही अल्लाह है, जो चीटियों को धरती के कोने में, पक्षियों को हवाओं में, मछलियों तथा अन्य जलीय जीवों को समुद्र की गहराईयों में जीविका पहुँचाता है। इस अवसर पर अर्थ यह है कि निर्धनता एवं भुखमरी का भय हिजरत में बाधक न बने, इसलिए कि अल्लाह तआला तुम्हारी तथा समस्त सृष्टि की जीविका उपलब्ध कराने का उत्तरदायी है।

[2]वह जानने वाला है तुम्हारे कर्म तथा करनी का तथा तुम्हारे गुप्त तथा प्रकट का। इसलिए केवल उसी से डरो, उसी की आज्ञा पालन में सफलता एवं लाभ है तथा उसकी अवज्ञा में दुर्भाग्य एवं हानि।

[3]अर्थात ये मूर्तिपूजक मुसलमानों को मात्र एकेश्वरवाद में विश्वास करने के कारण यातनायें पहुँचा रहे हैं, उनसे यदि पूछा जाये कि आकाश एवं धरती को नास्ति से उत्पन्न करने वाला तथा सूर्य एवं चन्द्रमा को अपनी परिधि में परिक्रमा कराने वाला कौन है, तो वहाँ यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं कि ये सब कुछ करने वाला अल्लाह है।

[4]अर्थात तर्कों एवं स्वीकार के उपरान्त सत्य से यह विमुख होना आश्चर्य जनक है।

[5]यह मूर्तिपूजकों की आपत्ति का उत्तर है, जो वे मुसलमान से करते थे कि यदि तुम सत्य पर हो तो निर्धन एवं निर्बल क्यों हो ? अल्लाह ने कहा कि जीविका में विस्तार एवं कमी अल्लाह के अधिकार में है, वह अपने इच्छा एवं नीति के अनुसार जिसको चाहता है कम अथवा अधिक प्रदान करता है। इसका सम्बन्ध उसकी प्रसन्नता एवं क्रोध से नहीं है।

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

तआला प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।[1]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٣﴾

(६३) तथा यदि आप उनसे प्रश्न करें कि आकाश से पानी बरसा कर धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित करने वाला कौन है, तो नि:संदेह उनका उत्तर यही होगा कि अल्लाह तआला। आप कह दें कि सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है, बल्कि उनमें अधिकांश लोग निर्बोध हैं।[2]

وَمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٤﴾

(६४) तथा दुनिया का यह जीवन तो मात्र मनोरंजन तथा क्रीडा है,[3] हाँ सत्य जीवन तो परलोक का घर है,[4] यदि ये जानते होते![5]

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا

(६५) जब यह लोग नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह (तआला) को ही पुकारते हैं उसके लिए इबादत को विशेष करके, फिर जब वह

---

[1]इसको भी वही जानता है कि अधिक जीविका किसके लिए लाभकारी है तथा किसके लिए नहीं।

[2]क्योंकि बुद्धि होती तो अपने प्रभु के साथ पत्थरों को, मृतकों को प्रभु न बनाते, न उनके अन्दर यह प्रतिकूलता होती कि अल्लाह तआला को स्रष्टा एवं रचयिता तथा पालनहार मानते हुए भी बुतों (मूर्तियों) को संकटहारी तथा पूज्य समझ रहे हैं।

[3]अर्थात जिस संसार ने उन्हें परलोक से अँधा तथा उसके लिए यात्रा साधन एकत्र करने से अचेत कर रखा है, वह एक खेल-कूद से अधिक महत्व नहीं रखता। काफ़िर सांसारिक व्यापार में लीन रहता है, उसके लिए रात-दिन परिश्रम करता है, परन्तु जब मरता है तो ख़ाली हाथ होता है। जिस प्रकार बच्चे सारे दिन मिट्टी के घरौंदों से खेलते हैं, फिर ख़ाली हाथ घरों को लौट जाते हैं, थकान के सिवाय उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता।

[4]इसलिए ऐसे पुण्य कार्य करने चाहिये जिनसे परलोक का घर अलंकृत हो जाये।

[5]क्योंकि यदि वे यह बात जान लेते तो परलोक से निश्चिन्त होकर संसार में लीन न हो जाते। इसलिए उनका उपचार ज्ञान है, धार्मिक ज्ञान।

نَجّٰهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾

उन्हें थल की ओर सुरक्षित ले आता है तो उसी समय शिर्क करने लगते हैं ।[1]

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾

(६६) ताकि हमारे प्रदान किये हुए उपकारों से मुकरते रहें तथा लाभान्वित होते रहें ।[2] अभी-अभी उन्हें पता चल जायेगा ।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ

(६७) क्या ये नहीं देखते कि हमने हरम को शान्तिमय बना दिया, जब कि उनके निकटवर्ती क्षेत्र से लोग अपहृत कर लिये जाते हैं,[3] क्या ये असत्य पर तो विश्वास

---

[1]मूर्तिपूजकों के इस विपरीतता को भी क़ुरआन करीम में विभिन्न स्थानों पर वर्णन किया गया है । इस प्रतिकूलता को आदरणीय इकरमः समझ गये थे, जिसके कारण उन्हें इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । उनके सम्वन्ध में यह आया है कि मक्का की विजय के पश्चात यह मक्का से भाग गये ताकि नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पकड़ से बच जायें । यह इथोपिया जाने के लिए नाव में बैठे कि नाव भंवर में फंस गयी, तो नाव में सवार लोगों ने कहा कि एकाग्रता एवं शुद्ध हृदय से प्रभु से प्रार्थना करो, इसलिए कि यहाँ उसके अतिरिक्त कोई बचाने वाला नहीं है । आदरणीय इकरमः ने यह सुनकर कहा कि यदि यहाँ समुद्र में उसके अतिरिक्त कोई नहीं वचा सकता तो धरती पर भी कोई उसके अतिरिक्त नहीं वचा सकता । तथा उसी समय यह निश्चय कर लिया कि यदि मैं किनारे पर सुरक्षित पहुँच गया तो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लूँगा । अतः यहाँ से सुरक्षित लौटकर इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया । رضي الله عنه (इब्ने कसीर, उद्धघृत सीरत मोहम्मद विन इसहाक)

[2]यह لام अक्षर كَــي का है, जो कारण वताने के लिए है अर्थात वच जाने के पश्चात अल्लाह का साझीदार बनाना इसलिए है कि वे कुफ्र का कार्य करते रहें तथा साँसारिक स्वाद से लाभान्वित होते रहें । क्योंकि यदि वे कृतज्ञता व्यक्त करते तो एकेश्वरवाद पर दृढ़ रहते तथा एक मात्र अल्लाह ही को सदैव पुकारते । कुछ के निकट ये لام परिणामवाचक है, अर्थात यद्यपि उन का विचार कुफ्र करने का नहीं है, परन्तु पुनः शिर्क करने का परिणाम अन्ततः कुफ्र ही है ।

[3]अल्लाह तआला उस उपकार का वर्णन कर रहा है जो मक्कावासियों पर उसने किया है कि हमने उनके हरम को शान्तिवाला बनाया है, जिसके निवासी हत्या एवं अपहरण,

يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾	रखते हैं तथा अल्लाह (तआला) के उपकारों पर कृतघ्नता करते हैं ।[1]
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾	(६८) तथा उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर मिथ्यारोपण करे[2] अथवा जब सत्य उसके पास आ जाये, वह उसे असत्य बताये,[3] क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक में न होगा ?
وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾	(६९) तथा जो लोग हमारे मार्ग में दुख सहन करते हैं,[4] हम उन्हें अपने मार्ग अवश्य दिखा देंगे ।[5] नि:संदेह अल्लाह (तआला) सदाचारियों का साथी है ।[6]

लूटमार आदि से सुरक्षित हैं, जबकि अरब के अन्य क्षेत्र इस प्रकार की शान्ति सुरक्षा से वंचित हैं । लूट एवं हत्या उनके यहाँ सामान्य तथा प्रत्येक दिन का व्यवसाय है ।

[1]अर्थात क्या इस महान उपहार की कृतज्ञता यही है कि वे अल्लाह के साथ शिर्क करें, तथा झूठे देवताओं एवं मूर्तियों की पूजा करें । इस उपकार की माँग तो यह थी कि वह मात्र एक अल्लाह की इबादत करते तथा उसके सन्देष्टा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मानते ।

[2]अर्थात दावा करे कि मुझ पर अल्लाह की ओर से प्रकाशना आती है, जबकि ऐसा न हो अथवा कोई यह कहे कि मैं भी वह वस्तु अवतरित कर सकता हूँ जो अल्लाह ने अवतरित की है । यह गढ़ा हुआ झूठ है तथा दावेदार झूठा ।

[3]यह झुठलाना है तथा उसका करने वाला झूठा । झूठ गढ़ना तथा झुठलाना दोनों कुफ़्र है, जिसका दण्ड नरक है ।

[4]अर्थात धर्मादेशों के अनुसार कर्म करने में जो कठिनाईयाँ, परीक्षायें तथा कष्ट आते हैं ।

[5]इससे तात्पर्य संसार तथा परलोक के वे मार्ग हैं जिन पर चलकर मनुष्य को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होती है ।

[6]सदाचार से तात्पर्य अल्लाह को सर्वव्यापी मानकर प्रत्येक पुण्य के कार्य पवित्र हृदय के साथ करना, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार करना, बुराई के

सूरतु रूम-३० سُورَةُ الرُّومِ

सूर: रूम मक्का में अवतरित हुई, इसमें साठ आयतें तथा ६ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

الٓمٓ ﴿١﴾

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

غُلِبَتِ الرُّومُ ﴿٢﴾

(२) रोमन पराजित हो गये।

فِيٓ أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُم مِّنۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ ﴿٣﴾

(३) निकटवर्ती धरती पर तथा वह पराजित होने के पश्चात निकट भविष्य में विजयी हो जायेंगे।

فِي بِضْعِ سِنِينَ ۗ لِلَّهِ الْأَمْرُ مِن قَبْلُ وَمِنۢ بَعْدُ ۚ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ﴿٤﴾

(४) कुछ वर्षों में ही, इससे पूर्व तथा इसके पश्चात भी अधिकार अल्लाह (तआला) ही का है। तथा उस दिन मुसलमान प्रसन्न होंगे।

بِنَصْرِ اللَّهِ ۚ يَنصُرُ مَن يَشَآءُ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٥﴾

(५) अल्लाह (तआला) की सहायता से,[1] वह जिसकी चाहता है सहायता करता है। तथा

वदले उपकार करना, अपना अधिकार त्याग कर दूसरों को उनके अधिकार से अधिक देना। यह सब सदाचार के परिधि में सम्मिलित हैं।

[1]रिसालत काल में दो बड़ी शक्तियाँ थीं। एक फारस (ईरान) की तथा दूसरी रोम की। प्रथम वर्णित राज्य अग्नि पूजक तथा दूसरा ईसाई अर्थात अहले किताब था। मक्का के मूर्तिपूजकों की सहानुभूतियाँ ईरान के साथ थीं क्योंकि दोनों अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के पुजारी थे, जवकि मुसलमानों की सहानुभूतियाँ रोम के इसाई राज्य के साथ थीं, इस लिए कि इसाई भी मुसलमानों की भाँति अहले किताब थे तथा प्रकाशना एवं संदेष्टा पर विश्वास करते थे। उनकी आपस में ठनी रहती थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूअत की घोषणा के कुछ समय पश्चात ऐसा हुआ कि ईरान का राज्य रोम के इसाई राज्य के ऊपर विजयी हो गया, जिस पर मूर्तिपूजकों को प्रसन्नता हुई तथा मुसलमानों को दुख हुआ, उस अवसर पर क़ुरआन की ये आयतें अवतरित हुईं, जिन में ये भविष्यवाणी की गयी कि بِضْعِ سِنِينَ (कुछ वर्ष) के अन्दर रूमी पुन: विजयी हो जायेंगे

मूल विजयी एवं प्रभावशाली तथा कृपालु वही है।

وَعْدَ اللّٰهِ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

(६) अल्लाह का वचन है,[1] अल्लाह (तआला) अपने वचन भंग नहीं करता परन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝

(७) वह तो (केवल) सांसारिक जीवन के प्रत्यक्ष को (ही) जानते हैं, तथा आख़िरत से तो सर्वथा ही निश्चिन्त हैं।[2]

तथा विजयी पराजित एवं पराजित विजयी हो जायेंगे। प्रत्यक्ष संसाधनों से यह भविष्य-वाणी असंभव प्रतीत होती थी फिर भी मुसलमानों को अल्लाह के इस आदेश के कारण विश्वास था कि ऐसा अवश्य होकर रहेगा। इसीलिये आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक (رضي الله عنه) ने अबू जहल से यह शर्त लगा ली कि रूमी पांच वर्ष के अन्दर पुन: विजयी होंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज्ञान में जब यह बात आयी तो फ़रमाया कि بِضْعٌ का शब्द तीन से दस वर्ष तक के अंक के लिए प्रयोग होता है, तुमने पाँच वर्ष की अवधि कम रखी है, इसे बढ़ा लो। अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्देश पर आदरणीय अबू बक्र ने अवधि बढ़वा ली। तथा फिर ऐसा ही हुआ कि रोमी ९ वर्ष की अवधि के भीतर अर्थात सातवें वर्ष पुन: ईरान पर विजयी हुए, जिससे निश्चित रूप से मुसलमानों को बड़ी प्रसन्नता हुई (तिर्मिजी तफ़सीर सूर: अर्रूम)। कुछ कहते हैं कि रोमियों को यह विजय उस समय हुई जब बद्र में मुसलमानों को काफ़िरों पर विजय प्राप्त हुई, तथा मुसलमान अपनी विजय पर प्रसन्न थे। रोमियों की यह विजय क़ुरआन करीम की सत्यता का बहुत बड़ा प्रमाण है। निकटवर्ती धरती से तात्पर्य अरब की धरती के निकट के क्षेत्र हैं, अर्थात सीरिया तथा फ़िलिस्तीन आदि जहाँ इसाईयों का राज्य था।

[1]अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! हम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जो सूचना दे रहे हैं कि निकट भविष्य में रूमी ईरानियों पर पुन: विजयी होंगे, यह अल्लाह का सत्य वचन है जो निर्धारित अवधि में निश्चित रूप से पूरा होकर रहेगा।

[2]अर्थात अधिकतर लोगों को सांसारिक बातों का अधिक ज्ञान है। अत: वे उनमें तो अपनी चतुराई एवं योग्यता का प्रदर्शन करते हैं, जिनका लाभ अस्थाई एवं क्षणिक है, परन्तु परलोक के विषय से ये अचेत हैं जिनका लाभ स्थाई एवं दृढ़ है। अर्थात सांसारिक बातों को भली प्रकार पहचानते हैं तथा धर्म से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं।

(८) क्या उन लोगों ने अपने हृदय में यह विचार नहीं किया कि अल्लाह (तआला) ने आकाशों को तथा धरती एवं उनके मध्य जो कुछ है सबको अत्योत्तम अनुमान से[1] निर्धारित समय तक के लिए (ही) उत्पन्न किया है, हाँ अधिकाँश लोग नि:संदेह अपने प्रभु की मुलाकात का इंकार करते हैं ।[2]

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِم ۗ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ لَكَافِرُونَ ⑧

(९) क्या उन्होंने धरती पर भ्रमण करके नहीं देखा[3] कि उनसे पूर्व के लोगों का परिणाम कैसा (बुरा) हुआ ?[4] वे उनसे अत्यधिक शक्तिशाली (एवं बलवान) थे,[5] तथा उन्होंने भी धरती

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا

---

[1]अथवा एक उद्देश्य एवं सत्य के साथ पैदा किया है, व्यर्थ नहीं । तथा वह उद्देश्य यह है कि सदाचारियों को सदाचार का बदला तथा दुराचारियों को उनके दुराचार का दण्ड दिया जाये । अर्थात क्या वे अपने अस्तित्व पर विचार नहीं करते कि किस प्रकार उसे तुच्छ से उच्च किया तथा पानी की एक तुच्छ बूंद से उनकी सृष्टि की । फिर आकाश एवं धरती को एक विशेष उद्देश्य के लिए विस्तृत क्रम प्रदान किया, इसके अतिरिक्त उन सब के लिए एक समय निर्धारित किया अर्थात प्रलय (क़ियामत) का दिन जिस दिन ये सब कुछ समाप्त हो जायेगा । अर्थ यह है कि यदि वे इन सब बातों पर विचार करते तो निश्चित रूप से अल्लाह के अस्तित्व, उसके प्रभू तथा पूज्य होने एवं उसके सामर्थ्य का उन्हें संवेदन एवं ज्ञान हो जाता तथा उस पर ईमान ले आते ।

[2]तथा इसका कारण वही सृष्टि में विचार एवं चिन्तन का न होना है, वरन् क़ियामत के अस्वीकार करने का कोई उचित आधार नहीं है ।

[3]ये पुरातत्व, खण्डहर तथा शिक्षा ग्रहण करने के प्रतीक पर विचार एवं चिन्तन न करने पर फटकार की जा रही है । अर्थ यह है कि भ्रमण करके वे देख चुके हैं ।

[4]अर्थात उन काफ़िरों का, जिनको अल्लाह ने उनके कुफ़्र, सत्य के इंकार तथा सन्देष्टाओं के झुठलाने के कारण नाश कर दिया ।

[5]अर्थात कुरैश एवं मक्कावासियों से अधिक ।

جوتी-बोयी थी[1] तथा उनसे अधिक जनसंख्या बनाई थी[2] तथा उनके पास उनके रसूल चमत्कार लेकर आये थे,[3] यह तो असम्भव था कि अल्लाह (तआला) उन पर अत्याचार करता[4] परन्तु (वास्तव में) वे स्वयं अपने प्राणों पर अत्याचार करते थे ।[5]

أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

(१०) फिर अन्त में दुष्कर्मियों का दुष्परिणाम हुआ,[6] इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे तथा उनका उपहास उड़ाते थे ।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِينَ أَسَاءُوا السُّوأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِئُونَ ﴿١٠﴾

(११) अल्लाह (तआला) ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है, फिर वही उन्हें पुन: पैदा करेगा[7]

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

---

[1]अर्थात मक्कावासी तो कृषि से अनजान हैं, परन्तु प्राचीन समुदाय उनसे इस गुण में भी बढ़कर थे ।

[2]इसलिए कि उनकी आयु भी अधिक थी, शारीरिक शक्ति में भी अधिक थे, जीविका-पार्जन के साधन भी उनको अधिक प्राप्त थे, तो उन्होंने भवन भी अधिक निर्माण किये, कृषि भी की तथा जीविकापार्जन के साधन से अधिक जुटाये ।

[3]परन्तु वे उन पर ईमान नहीं लाये । परिणाम यह हुआ कि समस्त शक्ति, उन्नति, सुख तथा समृद्धि के उपरान्त भी विनाश उनका भाग्य बन गया ।

[4]कि उन्हें बिना पाप के यातना में घेर लेता ।

[5]अर्थात अल्लाह का इंकार करके एवं संदेष्टाओं को झुठला करके ।

[6] سُوأَىٰ यह سُوءٌ से أَسْوَأُ का स्त्रीलिंग है, जैसे حُسْنَىٰ यह أَحْسَنُ का स्त्रीलिंग है अर्थात उनका जो परिणाम हुआ अत्यन्त दुष्परिणाम था ।

[7]जिस प्रकार अल्लाह तआला प्रथम बार पैदा करने का सामर्थ्य रखता है, उसी प्रकार मरणोपरान्त पुन: जीवित करने का सामर्थ्य रखता है, इसलिए कि पुन: जीवित करना प्रथम बार पैदा करने से अधिक कठिन नहीं ।

फिर तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे ।[1]

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ⑫

(१२) तथा जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी तो पापी आश्चर्यचकित रह जायेंगे ।[2]

وَلَمْ يَكُن لَّهُم مِّن شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ⑬

(१३) तथा उनके सभी साझीदारों में से एक भी उनकी सिफ़ारिश (अभिस्तावना) नहीं करेगा[3] तथा स्वयं ये भी अपने देवताओं को अस्वीकार करेंगे ।[4]

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَتَفَرَّقُونَ ⑭

(१४) तथा जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी, उस दिन (सभी गुट) विभाजित हो जायेंगे ।[5]

---

[1]अर्थात हश्र के मैदान में तथा हिसाब के स्थान पर, जहाँ वह निर्णय एवं न्याय का प्रबन्ध करेगा ।

[2] إِبْلَاسٌ का अर्थ है अपने पक्ष की पुष्टि के लिए कोई तर्क प्रस्तुत न कर सकना तथा चकित होकर चुप खड़े रहना तथा مُبْلِس वह होगा जो निराश होकर चुप खड़ा हो तथा उसे कोई तर्क समझ में न आ रहा हो । क़ियामत के दिन काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों की यही स्थिति होगी, अर्थात यातना के देख लेने के पश्चात वे प्रत्येक सूचना से निराश एवं तर्क-वितर्क प्रस्तुत कर सकने से विवश होंगे । अपराधियों से तात्पर्य काफ़िर तथा मूर्तिपूजक हैं, जैसाकि अगली आयत से स्पष्ट है ।

[3]साझीदारों से तात्पर्य वे झूठे देवता हैं, जिन्हें मूर्तिपूजक यह समझकर पूजते थे कि यह अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे तथा उन्हें अल्लाह की यातना से बचा लेंगे । परन्तु यहाँ अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाने वालों के लिए अल्लाह के यहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा ।

[4]अर्थात वहाँ उनके देवता होने को नकार देंगे क्योंकि वे देख लेंगे कि ये तो यहाँ किसी को कोई लाभ पहुँचाने में सामर्थ्य नहीं हैं (फ़तहुल क़दीर) । दूसरा अर्थ यह है कि ये देवता इस बात को नकार देंगे कि ये लोग उन्हें अल्लाह का साझीदार बनाकर पूजते थे, क्योंकि वे तो उनकी पूजा से ही अनजान थे ।

[5]इससे तात्पर्य प्रत्येक व्यक्ति का प्रत्येक व्यक्ति से अलग होना नहीं है बल्कि अर्थ ईमानवालों का काफ़िरों से अलग होना है । ईमानवाले स्वर्ग में तथा काफ़िर एवं मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे तथा उनके मध्य स्थाई अलगाव हो जायेगी और ये दोनों

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ⑮

(१५) फिर जो ईमान लाकर सत्कर्म करते रहे, वे तो स्वर्ग में प्रसन्न कर दिये जायेंगे ।[1]

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَٰتِنَا وَلِقَآئِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ⑯

(१६) तथा जिन्होंने कुफ्र किया था तथा हमारी आयतों को तथा आख़िरत के मिलन को झूठा ठहराया था, वे सब यातना में पकड़ कर उपस्थित किये जायेंगे ।[2]

فَسُبْحَٰنَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ⑰

(१७) तो अल्लाह (तआला) की प्रशंसा किया करो, जबकि तुम शाम करो तथा जब सुबह करो ।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ⑱

(१८) तथा सभी प्रशंसाओं के योग्य आकाश तथा धरती में वही है, अपरान्ह तथा मध्यान्ह के समय भी उसकी पवित्रता का वर्णन करो ।[3]

पुन: कभी भी एकत्रित न होंगे । यह हिसाब के पश्चात होगा । इस अलगाव का स्पष्टीकरण अगली आयत में आ रहा है ।

[1]अर्थात उन्हें स्वर्ग में आदर एवं पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा, जिनसे वे और अधिक प्रसन्न होंगे ।

[2]अर्थात सदैव अल्लाह की यातना में घिरे रहेंगे ।

[3]यह अल्लाह तआला की ओर से स्वयं अपनी पवित्र शक्ति के लिए महिमा एवं प्रशंसा है, जिसका उद्देश्य अपने भक्तों का मार्गदर्शन है कि उन समय में जो एक-दूसरे के पीछे आते हैं तथा जो उसकी शक्ति एवं महानता का प्रदर्शन करते हैं, उसकी महिमा एवं प्रशंसा किया करो । संध्या का समय, रात्रि के अंधकार का उद्गम तथा प्रात: की सफेदी दिन के प्रकाश की द्योतक है । ईशा, घंघोर अंधकार का तथा जोहर अत्यन्त प्रकाश का समय है । तो वह महान शक्ति है जो इन सभी का स्रष्टा है तथा जिसने उन समस्त समयों में विभिन्न लाभ रखे हैं । कुछ कहते हैं, प्रशंसा से तात्पर्य नमाज़ है तथा दोनों आयतों में वर्णित समय पाँच नमाज़ों के समय हैं । تُمْسُونَ में मग़रिब तथा ईशा, تُصْبِحُونَ में फ़ज्र की नमाज़, عَشِيًّا (अपरान्ह) में अस्र तथा تُظْهِرُونَ में ज़ोहर की नमाज़ आ जाती है (फ़तहुल क़दीर) । एक क्षीण हदीस में इन दोनों आयतों में प्रात:-सायं पढ़ने को महत्व दिया गया है कि इससे रात्रि-दिन की त्रुटियों का निराकरण हो जाता है । (अबू दाऊद किताबुल अदब, बाब मा यक़ूल इज़ा अस्बह)

(१९) वही जीवित को मृत से निकालता है[1] तथा मृत से जीवित को निकालता है तथा वही धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित करता है, इसी प्रकार तुम (भी) निकाले जाओगे ।[2]

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾

(२०) तथा अल्लाह की निशानियों में से है कि तुम्हें मिट्टी से जन्म दिया कि फिर अब मनुष्य बनकर (चलते फिरते) फैल रहे हो ।[3]

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ﴿٢٠﴾

(२१) तथा उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा कीं ।[4] ताकि तुम उनसे सुख पाओ, [5] उसने तुम्हारे मध्य

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ

---

[1]जैसे मुर्गी को अंडे से, अंडे को मुर्गी से, मनुष्य को वीर्य से, वीर्य को मनुष्य से तथा ईमान वाले को काफ़िर से, काफ़िर को ईमानवालों से पैदा करता है ।

[2] अर्थात क़ब्रों से जीवित करके ।

[3] إِذَا अकस्मातवाची है । तात्पर्य इससे उन अवस्थाओं की ओर इंगित करना है जिनसे गुज़र कर बालक पूर्ण मनुष्य बनता है, जिसका विस्तृत वर्णन क़ुरआन में अन्य स्थानों पर किया गया है । تَنْتَشِرُونَ से तात्पर्य मनुष्य का जीविकापार्जन करना तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए घूमना-फिरना है ।

[4]अर्थात तुम्हारे ही लिंग (जाति) से स्त्रियाँ पैदा कीं ताकि वे तुम्हारी पत्नियाँ हों और तुम जोड़ा-जोड़ा हो जाओ । زَوْج अरबी भाषा में जोड़ा को कहते हैं । इस आधार पर पुरूष, स्त्री के लिए तथा स्त्री, पुरूष के लिए जोड़ा है । स्त्रियों के मानव लिंग होने का अर्थ है कि संसार की प्रथम महिला आदरणीया हव्वा को आदरणीय आदम की बायें पाश्‍व से पैदा किया गया । फिर उन दोनों से मानव का वंशानुक्रम चला ।

[5]अर्थ यह है कि यदि पुरूष तथा महिला की जाति एक-दूसरे से भिन्न होती, उदाहरण स्वरूप, महिलायें जिन्नात अथवा पशुओं में से होतीं तो उनसे वह शान्ति कभी प्राप्त न होती, जो इस समय दोनों के एक ही जाति होने के कारण प्राप्त है । बल्कि एक-दूसरे से घृणा एवं भय होता । यह अल्लाह तआला की कृपा ही है कि मनुष्य की पत्नियाँ मनुष्यों में से ही बनायीं ।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

प्रेम तथा दया भाव उत्पन्न कर दिये,[1] नि:संदेह चिन्तन एवं विचार करने वालों के लिए इसमें बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالِمِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा उसके (सामर्थ्य) की निशानियों में से आकाशों एवं धरती की उत्पत्ति तथा तुम्हारी भाषाएं एवं रंगो की विभिन्नता (भी) है,[2] बुद्धिमानों के लिए अवश्य उसमें बड़े लक्षण हैं।

---

[1] مَوَدَّة यह है कि पति, पत्नी से अपार प्रेम करता है तथा ऐसे ही पत्नी, पति से। जैसाकि सामान्य रूप से देखने में आया है। ऐसा प्रेम जो पति-पत्नी में होता है, संसार में किसी दो व्यक्तियों के मध्य नहीं होता। तथा कृपा यह है कि पति, पत्नी को हर प्रकार की सुख-सुविधा उपलब्ध कराता है, जिसका प्रभारी उसे अल्लाह तआला ने बनाया है तथा ऐसे ही पत्नी भी अपनी शक्ति एवं अधिकार की परिधि में। फिर भी मनुष्य को यह शान्ति तथा पारस्परिक प्रेम उन्हीं जोड़ों से प्राप्त होता है, जो धार्मिक नियमों के अनुसार वैवाहिक बंधन से स्थापित हों तथा इस्लाम धर्म उन्हीं को जोड़ा की मान्यता देता है। अवैधानिक जोड़ों को वह जोड़ा ही नहीं मानता, बल्कि उन्हें व्यभिचारी एवं बलात्कारी मानता है तथा उनके लिए कठोर दण्ड निर्धारित करता है। आजकल पाश्चात्य सभ्यता के प्रचारक शैतान के भाई इस प्रयत्न में लिप्त हैं कि पाश्चात्य सभ्यता की भाँति इस्लामिक राष्ट्रों में भी विवाह को अनावश्यक घोषित करके व्यभिचारी पुरूष-महिला का युगल की मान्यता दे दी जाये तथा उनको दण्ड की जगह वे अधिकार प्राप्त हो जायें जो एक वैधानिक जोड़ों को प्राप्त होते हैं।

[2] संसार में इतनी भाषाओं की उत्पत्ति भी अल्लाह तआला के सामर्थ्य का एक बहुत बड़ा प्रतीक है : अरबी है, तुर्की है, अंग्रेज़ी है, उर्दू है, हिन्दी है, पश्तो, फ़ारसी, सिन्धी, बलूची, तमिल, तेलगू एवं बंगला आदि हैं। फिर एक-एक भाषा के विभिन्न स्वर तथा शैलियाँ हैं। एक मनुष्य अपनी भाषा तथा उच्चारण के कारण लाखों की भीड़ में पहचान लिया जाता है कि अमुक देश के अमुक क्षेत्र का निवासी है। केवल भाषा ही उसका पूर्ण परिचय करा देती है। इसी प्रकार एक ही माता-पिता (आदम तथा हव्वा) से होने के उपरान्त भी रंग एक-दूसरे से भिन्न हैं। कोई काला है, कोई गोरा है तो कोई गेहुँआ रंग का। फिर काले तथा गोरे रंग में भी इतनी श्रेणियाँ हैं कि अधिकतर आबादी दो रंगों में विभक्त होने के उपरान्त भी उनके विभिन्न प्रकार हैं, तथा एक-दूसरे से पूर्णरूप से भिन्न तथा अलग। फिर उनके मुख की बनावट, शारीरिक रचना तथा आकार में ऐसा अन्तर रख दिया गया

(२३) तथा (अन्य भी) उसके (सामर्थ्य) की निशानियाँ तुम्हारी रात्रि एवं दिन की निंद्रा में है तथा उसका उपकार (अर्थात जीविका) को तुम्हारा खोजना (भी) है ।[1] जो लोग कान लगाकर सुनने वाले हैं उनके लिए इसमें बड़ी निशानियाँ हैं ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝٢٣

(२४) तथा उसकी निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि वह तुम्हें डराने तथा आशावान बनाने के लिए तड़ित (बिजलियाँ) दिखाता है,[2] तथा आकाश से वर्षा करता है, तथा उससे मृत धरती जीवित करता है, इसमें (भी) बुद्धिमानों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٢٤

(२५) तथा उसकी एक निशानी यह भी है कि आकाश तथा धरती उसके आदेश से स्थापित हैं, फिर वह जब तुम्हें आवाज़ देगा, केवल

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ

है कि एक-एक देश का व्यक्ति अलग से पहचान लिया जाता है । अर्थात इस बात के उपरान्त कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलता, यहाँ तक कि एक भाई दूसरे भाई से भिन्न है परन्तु अल्लाह के सामर्थ्य का चमत्कार है कि फिर भी किसी एक ही देश के निवासी दूसरे देश के निवासी से भिन्न होते हैं ।

[1]निद्रा का, सुख एवं शान्ति का कारण होना चाहे, वह रात्रि को हो अथवा दिन के विश्राम के समय हो, तथा दिन को व्यापार एवं कार्य के द्वारा अल्लाह की कृपा की खोज करना, यह विषय कई स्थान पर गुज़र चुका है ।

[2]अर्थात आकाश में बिजली की चमक तथा मेघों की गर्जन से तो तुम भयभीत भी होते हो कि कहीं बिजली न गिर जाये अथवा अधिक वर्षा न हो कि खेतियाँ क्षतिग्रस्त हो जायें तथा आशायें भी रखते हो कि वर्षा होगी तो उपज अच्छी होगी ।

دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْأَرْضِ ۖ إِذَا أَنتُمْ تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾

एक बार की आवाज से ही तुम सब धरती से निकल आओगे ।[1]

وَلَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा आकाश एवं धरती की समस्त वस्तुओं का वही स्वामी है तथा प्रत्येक उसके आदेश के अधीन हैं ।[2]

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा वही है जो प्रथम बार सृष्टि को उत्पन्न करता है, वही फिर से पुनः पैदा करेगा तथा यह तो उस पर अत्यन्त सरल है । उसी की उत्तम तथा उच्च विशेषता है [3] आकाशों में तथा धरती में भी, वही प्रभावशाली सर्व-ज्ञानी है ।

ضَرَبَ لَكُم مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ ۖ هَل لَّكُم مِّن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُم مِّن شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ

(२८) अल्लाह तआला ने एक उदाहरण स्वयं तुम्हारा ही वर्णन किया, जो कुछ हमने तुम्हें प्रदान कर रखा है क्या उसमें तुम्हारे दासों में से कोई तुम्हारा साझीदार है कि तुम तथा वह इसमें समान पद के हो ?[4] तथा तुम

---

[1]अर्थात प्रलय जब व्याप्त होगी तो आकाश एवं धरती का सारा प्रबन्ध, जो इस समय उसके आदेश से स्थापित है, छिन्न-भिन्न हो जायेगा तथा समस्त मनुष्य क़ब्रों से जीवित होकर बाहर निकल आयेंगे ।

[2]अर्थात उसके सृजन आदेश के समक्ष सब असहाय तथा विवश हैं, जैसे जीवन-मृत्यु, स्वास्थ्य एवं रोग, मान-अपमान आदि में ।

[3]अर्थात इतने गुणों एवं महान सामर्थ्य का स्वामी, समस्त तुलनाओं से महान एवं उच्च है ।

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ

"उसकी कोई तुलना नहीं ।" (सूरः शूरा-११)

[4]अर्थात जब तुमको यह प्रिय नहीं कि तुम्हारे दास एवं कर्मचारी गण, जो तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं, वे तुम्हारे धन-दौलत के साझीदार तथा तुम्हारे समान हो जायें तो फिर

أَنفُسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

उनका भय इस प्रकार रखते हो जैसे कि स्वयं अपनों का,[1] हम बुद्धिमानों के लिए इसी प्रकार स्पष्ट रूप से आयतें वर्णन करते हैं ।[2]

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُم بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ فَمَن يَهْدِي مَنْ

(२९) वास्तविक बात यह है कि ये अत्याचारी बिना ज्ञान के[3] इंन्द्रियों के वशीभूत हैं, उसे कौन मार्ग दिखाये जिसे अल्लाह मार्ग से हटा

यह किस प्रकार हो सकता है कि अल्लाह के दास (भक्त), चाहे वे फरिश्ते हों, संदेष्टा हों, महात्मा, महापुरूष हों अथवा वृक्ष एवं पत्थर के बनाये हुए देवता, वे अल्लाह के साझीदार हो जायें, जबकि वे भी अल्लाह के दास हैं तथा उसकी सृष्टि हैं। अर्थात जिस प्रकार प्रथम बात नहीं हो सकती दूसरी भी नहीं हो सकती। इसलिए अल्लाह के साथ दूसरों की भी पूजा करना तथा उन्हें भी कष्टनिवारक तथा संकट- मोचन समझना सर्वथा ग़लत है।

[1]अर्थात क्या तुम अपने दासों से इस प्रकार भयभीत होते हो, जिस प्रकार तुम (स्वतन्त्र लोग) आपस में एक-दूसरे से भयभीत होते हो। अर्थात जिस प्रकार साझे के व्यापार में अथवा सम्पत्ति में से खर्च करते समय भय प्रतीत होता है कि अन्य साझीदार पूछेंगे क्या तुम अपने दास से उसी प्रकार भयभीत होते हो ? अर्थात भयभीत नहीं होते क्योंकि तुम उन्हें धन-दौलत में साझीदार बनाकर अपने समान बना ही नहीं सकते, तो उनसे भय भी कैसा ?

[2]क्योंकि वे अपनी बुद्धि का प्रयोग करके तथा चिन्तन-मनन करके अवतरित तथा उत्पत्ति की आयतों से लाभ उठाते हैं तथा जो ऐसा नहीं करते उनकी समझ में एकेश्वरवाद की बात भी नहीं आती, जो अत्यन्त स्वच्छ एवं अत्यन्त स्पष्ट है।

[3]अर्थात इस वास्तविकता का उन्हें बोध भी नहीं है कि वे ज्ञान से शून्य तथा पथभ्रष्टता के शिकार हैं तथा इसी अज्ञानता तथा पथभ्रष्टता में पड़कर वे अपनी बुद्धि का प्रयोग करने की क्षमता भी नहीं रखते तथा अपनी इन्द्रियों की इच्छाओं एवं भ्रष्ट विचारों के अनुयायी हैं।

أَضَلَّ اللَّهُ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ ﴿٢٩﴾

दे ?[1] उनकी एक भी सहायता करने वाला नहीं ।[2]

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

(३०) तो आप एकाग्र होकर अपना मुख धर्म की ओर केन्द्रित कर दें ।[3] अल्लाह (तआला) की वह प्राकृति जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है ।[4] अल्लाह तआला के बनाये को बदलना नहीं,[5] यही सत्य धर्म है,[6] परन्तु अधिकतर लोग नहीं समझते ।[7]

---

[1]क्योंकि अल्लाह की ओर से मार्गदर्शन उसे ही प्राप्त होता है, जिसके अन्दर सन्मार्ग प्राप्त करने की इच्छा तथा कामना होती है, जो इस सत्य इच्छा से वंन्चित होते हैं उन्हें पथभ्रष्टता में भटकते छोड़ दिया जाता है ।

[2]अर्थात इन कुमार्ग लोगों की कोई सहायता करने वाला नहीं जो इन्हें सत्यमार्ग का दर्शन करा सके अथवा उनसे यातना को दूर कर दे ।

[3]अर्थात अल्लाह की एकता तथा उसकी इबादत में दृढ़ रहें एवं झूठे कल्पित धर्मों की ओर आकर्षित न हों ।

[4]فِطْـرت का वास्तविक अर्थ सृजन (जन्म) है । यहाँ तात्पर्य इस्लाम धर्म (एवं एकेश्वरवाद) है । अर्थ यह है कि सब का जन्म धर्मी एवं विधर्मी के भेद के बिना इस्लाम एवं एकेश्वरवाद पर होता है, इसलिए एकेश्वरवाद उनकी प्राकृति एवं संस्कार में सम्मिलित है, जैसाकि أَلَسْتُ के वचन से स्पष्ट है । तत्पश्चात बहुतों को वातावरण अथवा अन्य कारण, प्राकृति की इस पुकार की ओर नहीं आने देते, जिसके कारण वे कुफ़्र पर ही शेष रहते हैं, जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस (कथन) है, प्रत्येक शिशु प्राकृति पर जन्म लेता है, परन्तु फिर उसके माता-पिता उसको यहूदी, इसाई एवं अग्निपूजक आदि बना देते हैं । (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: रूम, मुस्लिम किताबुल क़द्र, बाब कुल्लो मौलूदिन यूलदु अलल फ़ितरते)

[5]अर्थात अल्लाह की सृष्टि (प्रकृति) को परिवर्तित न करो, अपितु उचित शिक्षा के द्वारा उस का पालन-पोषण करो ताकि ईमान एवं एकेश्वरवाद बालकों के मन-मस्तिष्क में सुदृढ़ हो जाये । यह विधेय (आदेश) माँग के अर्थ में है अर्थात नकारात्मक रोकने के अर्थ में है ।

[6]अर्थात वह धर्म जिसकी ओर एकाग्रता एवं आकर्षित होने का आदेश है, अथवा जो प्राकृति की माँग है, वही यही सीधा सत्य धर्म है ।

[7]इसी कारण वे इस्लाम तथा एकेश्वरवाद से अनभिज्ञ रहते हैं ।

(३१) (लोगो), अल्लाह (तआला) की ओर आकर्षित होकर उससे डरते रहो तथा नमाज़ को स्थापित रखो तथा मूर्तिपूजकों में से न हो जाओ ।[1]

مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٣١﴾

(३२) उन लोगों में से जिन्होंने अपने धर्म को छिन्न-भिन्न कर दिया तथा स्वयं भी गुटों में बंट गये,[2] प्रत्येक गुट उस वस्तु पर जो उसके पास है मगन है ।[3]

مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٣٢﴾

(३३) तथा लोगों को जब कोई दुख पहुँचता है, तो अपने प्रभु की ओर (पूर्ण) एकाग्रता से दुआयें करते हैं तथा जब वह अपनी ओर से दया का स्वाद चखा देता है, तो उनमें का एक गुट अपने प्रभु के साथ शिर्क करने लगता है ।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

(३४) ताकि वे उस वस्तु की कृतघ्नता व्यक्त करें जो हमने उन्हें प्रदान की है,[4] अच्छा,

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا

---

[1]अर्थात ईमान तथा अल्लाह के भय एवं नमाज़ स्थापित करने से इंकार करके मूर्तिपूजकों में से न हो जाओ ।

[2]अर्थात मूल धर्म को छोड़कर अथवा उसमें ऐच्छिक परिवर्तन करके विभिन्न गुटों में बंट गये, जैसे कोई यहूदी, कोई इसाई, कोई मूर्तिपूजक आदि हो गया ।

[3]अर्थात प्रत्येक गुट एवं गिरोह यह समझता है कि वह सत्य पर है तथा अन्य झूठे, तथा जो सहारे उन्होंने खोज रखे हैं, जिनको वे तर्क एवं प्रमाण कहते हैं उन पर प्रसन्न तथा निश्चिन्त हैं । दुर्भाग्य से इस्लामी समुदाय का भी यही हाल हुआ के वह भी विभिन्न गुटों में बंट गया तथा उनका भी प्रत्येक गुट इसी असत्य विश्वास पर दृढ़ है कि वह सत्य पर है, जबकि सत्य पर केवल एक ही गुट है जिसकी पहचान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतायी है कि मेरे तथा मेरे सहाबा के मार्ग पर चलने वाला होगा ।

[4]यह वही विषय है जो *सूरः अनकबूत* के अन्त में गुज़र चुका है ।

فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

तुम लाभ उठा लो, अति शीघ्र तुम्हें ज्ञात हो जायेगा।

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) क्या हमने उन पर कोई प्रमाण अवतरित किया है, जो उसे वर्णन करता है जिसे ये अल्लाह के साथ साझीदार बना रहे हैं।[1]

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा जब हम लोगों को दया का स्वाद चखाते हैं, तो वे अति प्रसन्न हो जाते हैं तथा यदि उन्हें अपने हाथों के करतूत के कारण कोई दुख पहुँचे, तो सहसा वे निराश हो जाते हैं।[2]

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ

(३७) क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे असीम जीविका प्रदान करता है तथा जिसे चाहे कम,[3] इसमें भी उन

---

[1]यह प्रश्न इंकार के लिए है। अर्थात ये जिनको अल्लाह का साझीदार बताते हैं तथा उनकी पूजा करते हैं, यह अप्रमाणित है। अल्लाह ने इसका कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया है। भला अल्लाह तआला मूर्तिपूजा एवं शिर्क के पक्ष में तर्क किस प्रकार अवतरित कर सकता था, जबकि उसने सभी सन्देष्टा इसी कारण भेजे थे कि वे शिर्क का खण्डन तथा एकेश्वरवाद का प्रचार करें। अतः प्रत्येक संदेष्टा ने सर्वप्रथम अपने समुदाय को एकेश्वरवाद का संदेश सुनाया। तथा आज एकेश्वरवाद में आस्था रखने वालों को नाम के मुसलमानों में एकेश्वरवाद एवं सुन्नत का उपदेश करना पड़ रहा है क्योंकि मुसलमान समुदाय के बहुसंख्यक शिर्क एवं बिदअत में लिप्त हैं।

[2]यह वही विषय है जो सूरः हूद में गुज़र चुका है तथा जो मनुष्यों की बहुसंख्यक की करनी है कि सुख में वे गर्व एवं अहंकार में डूबे रहते हैं तथा दुख में निराश हो जाते हैं। परन्तु ईमानवाले इससे अलग हैं, क्योंकि वे दुख में संयम तथा सुख में अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हैं अर्थात पुण्य का कार्य करते हैं। इस प्रकार दोनों स्थिति में उन्हें पुण्य एवं उत्तम बदला प्राप्त होता है।

[3]अर्थात अपनी योजना एवं ज्ञान से वह किसी को धन अधिक तथा किसी को कम देता है। यहाँ तक कि कई बार बुद्धि एवं समझ में एवम् प्रत्यक्ष कारणों तथा साधनों में दो मनुष्य एक जैसे ही प्रतीत होते हैं, एक ही जैसा व्यापार भी प्रारम्भ करते हैं। परन्तु एक का

لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۳۷﴾

लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, निशानियाँ हैं।

فَاٰتِ ذَا الۡقُرۡبٰى حَقَّهٗ وَالۡمِسۡكِيۡنَ وَابۡنَ السَّبِيۡلِ ؕ ذٰلِكَ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ يُرِيۡدُوۡنَ وَجۡهَ اللّٰهِ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ﴿۳۸﴾

(३८) तो निकट सम्बन्धी को, निर्धन को, यात्री को, प्रत्येक को उसका अधिकार दो,[1] यह उनके लिए श्रेष्ठ है, जो अल्लाह (तआला) के मुख का दर्शन करना चाहते हों,[2] ऐसे ही लोग मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं।

وَمَاۤ اٰتَيۡتُمۡ مِّنۡ رِّبًا لِّيَرۡبُوَا۟ فِىۡۤ اَمۡوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرۡبُوۡا عِنۡدَ اللّٰهِ ۚ

(३९) तथा तुम जो ब्याज पर देते हो कि लोगों के माल में बढ़ता रहे, वह अल्लाह (तआला) के यहाँ नहीं बढ़ता,[3] तथा जो कुछ

व्यापार अधिक उन्नति करता है तथा उसको अत्याधिक लाभ होता है, जबकि दूसरे का व्यापार सीमित ही रहता है तथा उसको उन्नति नहीं मिलती। आख़िर यह कौन सी शक्ति है, जिसके पास समस्त अधिकार हैं तथा वह इस प्रकार के कार्य करता है। इसके अतिरिक्त वह कभी धनवान को निर्धन तथा निर्धन को धनवान बना देता है। यह सब उसी एक अल्लाह के हाथ में है, जिसका कोई साझीदार नहीं।

[1]जब जीविका के समस्त साधन अल्लाह के ही अधिकार में हैं तथा वह जिस पर चाहे उसके द्वार खोल देता है, तो धनवानों को चाहिए कि वह अल्लाह के दिये हुए माल में से उसका वह अधिकार अदा करते रहें, जो उनके माल में उनके अधिकारी निकट सम्बन्धियों, निर्धनों तथा यात्रियों का रखा गया है। निकट सम्बन्धियों का अधिकार इसलिए प्रथम रखा गया है कि उसका महत्व अधिक है। हदीस में आता है कि निर्धन सम्बन्धी के साथ उपकार करना दुगुने पुण्य का कारण है, एक दान का पुण्य तथा दूसरा सम्बन्ध जोड़ने का। इसके अतिरिक्त उसे अधिकार यहाँ कहकर इसकी ओर संकेत किया गया है कि उनकी सहायता करके तुम उपकार नहीं करोगे, अपितु एक अधिकार की ही पूर्ति करोगे।

[2]अर्थात स्वर्ग में उसके साक्षात दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करना।

[3]अर्थात ब्याज से प्रत्यक्ष रूप से वृद्धि तो दिखायी देती है परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता, अपितु उसका दुर्भाग्य अन्त में इस लोक तथा परलोक में विनाश का कारण है। आदरणीय इब्ने अब्बास एवं विभिन्न सहाबा तथा ताबईन ने इस आयत में رِبًا से तात्पर्य ब्याज नहीं, अपितु वह उपहार लिया है जो कोई निर्धन किसी धनवान को अथवा जनता का कोई व्यक्ति राजा अथवा राजा के अधिकारी को अथवा एक सेवक अपने स्वामी को

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾

(दान एवं) जकात तुम अल्लाह (तआला) के मुख के दर्शन के लिए दो, तो ऐसे ही लोग हैं अपना बढ़ाने वाले ।[1]

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾

(४०) अल्लाह (तआला) वह है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर जीविका प्रदान की, फिर मार डालेगा, पुन: जीवित कर देगा, बताओ, तुम्हारे साझीदारों में से कोई भी ऐसा है जो इनमें से कुछ भी कर सकता हो । अल्लाह (तआला) के लिए पवित्रता एवं श्रेष्ठता है प्रत्येक उस साझीदार से जो यह लोग गढ़ते हैं ।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

(४१) जल-थल में लोगों के कुकर्मों के कारण उपद्रव फैल गया, इसलिए कि उन्हें उनके कुछ करतूतों का फल अल्लाह (तआला) चखा दे, (अति) सम्भव है कि वह रुक जायें ।[2]

इस विचार से देता है कि वह उसके बदले में उससे अधिक देगा । उसे ربا इसलिए कहा गया है कि देते समय अधिकता का ध्यान होता है । यह यद्यपि उचित है फिर भी अल्लाह के यहाँ इसका बदला नहीं मिलेगा, "فَلَا يربُو عند الله" से उसी पारलौकिक बदले का खण्डन होता है । इस आधार पर अनुवाद होगा "जो तुम उपहार दो इस विचार से कि वापसी की स्थिति में अधिक मिले, तो अल्लाह के यहाँ उसका पुण्य नहीं ।" (इब्ने कसीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]ज़कात एवं दान से एक तो आध्यात्मिक एवं अन्त: वृद्धि होती है अर्थात शेष माल में अल्लाह की ओर से विभूति डाल दी जाती है । दूसरे, क़ियामत (प्रलय) वाले दिन इसका वदला एवं पुण्य कई-कई गुना मिलेगा, जिस प्रकार हदीस में है कि हलाल (सर्वधार्मिक) कमाई से एक खजूर के बराबर दान बढ़कर ओहुद पर्वत के समान हो जायेगा । (सहीह मुस्लिम कितावुज़ ज़कात)

[2]थल से तात्पर्य मानव आवादियाँ तथा जल से तात्पर्य समुद्र एवं समुद्रिक मार्ग तथा समुद्र के किनारों की आवादियाँ हैं । उपद्रव से तात्पर्य प्रत्येक वह विवाद है जिससे मनुष्य के समाज एवं बस्तियों में शान्ति-व्यवस्था अस्त-व्यस्त तथा उनके सुख-चैन में रूकावट उत्पन्न हो । इसलिए इसका लागू होना पाप एवं बुराईयों पर भी उचित है कि मनुष्य

(४२) आप कह दीजिए, धरती में चल-फिर कर देखो तो सही कि पूर्व कालिक लोगों का परिणाम क्या हुआ जिनमें अधिकतर लोग मूर्तिपूजक थे ।[1]

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلُ كَانَ أَكْثَرُهُم مُّشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾

(४३) तो आप अपना मुख उस सीधे एवं सत्य धर्म की ओर ही रखें, पूर्व इसके कि वह दिन

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِن قَبْلِ

एक-दूसरे पर अत्याचार कर रहे हैं, अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाओं का उल्लंघन कर रहे हैं तथा सामाजिक नियमों को तोड़ रहे हैं तथा हत्या एवं लूटमार अधिक हो गयी है तथा उन आकाश एवं धरती के प्रकोप पर भी यह उचित रूप से लागू हो सकता है, जो अल्लाह की ओर से दण्ड एवं सचेत करने के लिए होता है जैसे अकाल, मृत्यु की अधिकता, भय एवं बाढ़ आदि। अर्थ यह है कि जब मनुष्य अल्लाह के आदेशों की अवज्ञा को अपना ध्येय बना ले तो फिर कर्मों के बदले में अल्लाह तआला की ओर से मनुष्यों के कर्म एवं क्रियाकलाप का मुख बुराईयों की ओर फिर जाता है तथा धरती पर उपद्रव फैल जाता है। शान्ति-व्यवस्था भंग हो जाती है और उस के स्थान पर भय एवं आतंक, चोरी, डकैती, हत्या एवं लूटमार सामान्य हो जाती है तथा इसके साथ ही साथ कई बार आकाश एवं धरती से सम्बन्धित प्रकोप भी आ जाता है। उद्देश्य यही होता है कि इस सामान्य बिगाड़ अथवा दैवी प्रकोप को देखकर शायद लोग पापों से रूक जायें क्षमा माँग लें तथा उनका ध्यान अल्लाह की ओर हो जाये।

इसके विपरीत जिस समाज की व्यवस्था अल्लाह के आदेशों के अनुरूप हो तथा अल्लाह के नियम लागू होते हों, अन्याय के स्थान पर न्याय का प्रचलन हो, वहाँ शान्ति-व्यवस्था तथा अल्लाह की ओर से सुख-सुविधा की बहुतायत होती है। जिस प्रकार एक हदीस में आता है, "धरती पर अल्लाह के एक नियम को लागू करना वहाँ के लोगों के लिए चालीस दिन की वर्षा से श्रेष्ठतम है।" (अल- नसाई, किताबु कतऐ यदिस्सारिक बाबुत तरग़ीब फ़ी एकामतिल हद्द व इब्ने माजा) इसी प्रकार यह हदीस है "जब एक कुकर्मी (फ़ाजिर) मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो मनुष्य ही उससे सुख की अनुभूति नहीं करते, नगर भी तथा वृक्ष एवं पशु भी सुख प्राप्त करते हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल रिक़ाक़, मुस्लिम किताबुल जनायेज़)

[1]शिर्क का विशेषरूप से वर्णन किया गया है कि यह सबसे बड़ा पाप है। इसके अतिरिक्त इसमें अन्य पाप एवं त्रुटियाँ भी आ जाती हैं क्योंकि इनका प्रयोजन भी मनुष्य अपनी इन्द्रियों की दासता को स्वीकार करके ही करता है। इसीलिए कुछ लोग इसे क्रियात्मक शिर्क कहते हैं।

أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُۥ مِنَ ٱللَّهِ ۖ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ﴿٤٣﴾	आ जाये जिसकी वापसी अल्लाह (तआला) की ओर से है ही नहीं,[1] उस दिन सब अलग-अलग हो जायेंगे ।[2]
مَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُۥ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَٰلِحًا فَلِأَنفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ﴿٤٤﴾	(४४) कुफ़्र करने वालों पर उनका कुफ़्र होगा तथा सत्कर्म करने वाले अपने ही विश्राम गृह को सुन्दर बना रहे हैं ।[3]
لِيَجْزِىَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ مِن فَضْلِهِۦٓ ۚ إِنَّهُۥ لَا يُحِبُّ ٱلْكَٰفِرِينَ ﴿٤٥﴾	(४५) ताकि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा से उन्हें फल दे, जो ईमान लाये तथा सत्कर्म किये,[4] वह काफ़िरों को मित्र नहीं रखता है ।
وَمِنْ ءَايَٰتِهِۦٓ أَن يُرْسِلَ ٱلرِّيَاحَ مُبَشِّرَٰتٍ وَلِيُذِيقَكُم مِّن رَّحْمَتِهِۦ وَلِتَجْرِىَ ٱلْفُلْكُ بِأَمْرِهِۦ وَلِتَبْتَغُوا۟	(४६) तथा उसकी निशानियों में शुभसूचना देने वाली[5] हवाओं को चलाना भी है, इसलिए कि तुम्हें अपनी दया का स्वाद चखाये,[6] तथा इसलिए कि उसके आदेश से नावें चलें[7]

[1]अर्थात उस दिन के आने को कोई रोक नहीं सकता । इसलिए उस दिन (क़ियामत) के आने से पूर्व अल्लाह के आज्ञापालन का मार्ग अपना लें तथा पुण्य से अपना दामन भर लें ।

[2]अर्थात दो गुटों में विभाजित हो जायेंगे, एक ईमानवालों का तथा दूसरा काफ़िरों का ।

[3] مَهَدَ का अर्थ है मार्ग प्रशस्त करना, फ़र्श बिछाना अर्थात यह सदाचार के द्वारा स्वर्ग में जाने तथा वहाँ उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं ।

[4]अर्थात मात्र पुण्य स्वर्ग में प्रवेश के लिए पर्याप्त नहीं होंगे जब तक उनके साथ अल्लाह की कृपा एवं दया भी सम्मिलित न होगी । वह तो अपनी कृपा से एक-एक पुण्य का बदला दस से सात सौ गुना तक बल्कि उससे भी अधिक देगा ।

[5]अर्थात यह हवायें वर्षा की सूचक होती हैं ।

[6]अर्थात वर्षा से मनुष्य भी स्वाद एवं सुख का अनुभव करता है तथा फसलें भी लहलहा उठती हैं ।

[7]अर्थात हवाओं के द्वारा नावें भी चलती हैं, तात्पर्य हवा से चलने वाली नावें हैं । अब मनुष्य ने अल्लाह की प्रदान की हुई बौद्धिक शक्ति का पूरा प्रयोग करके अन्य नावें तथा

مِنْ فَضْلِهِۦ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝٤٦

तथा इसलिए कि उसकी कृपा को तुम खोजो[1] तथा इसलिए कि तुम कृतज्ञता व्यक्त करो ।[2]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَآءُوهُم بِٱلْبَيِّنَٰتِ فَٱنتَقَمْنَا مِنَ ٱلَّذِينَ أَجْرَمُوا۟ ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۝٤٧

(४७) तथा हमने आप से पूर्व भी (अपने) रसूलों को उनके समुदाय की ओर भेजा वे उनके पास प्रमाण लाये । फिर हमने पापियों से बदला लिया । हम पर ईमानवालों की सहायता अनिवार्य है ।[3]

जहाज़ों का अविष्कार कर लिए हैं, जो मशीनों के द्वारा चलते हैं । फिर भी उनके लिए भी अनुकूल एवं उचित हवाओं की आवश्यकता है, वरन् अल्लाह तआला उन्हें भी तूफ़ानी जल धाराओं के द्वारा डुबो देने का सामर्थ्य रखता है ।

[1]अर्थात उनके द्वारा विभिन्न देशों की यात्रा करके व्यवपार करते हैं ।

[2]उन प्रकट एवं गुप्त उपहारों पर जिनकी कोई गणना ही नहीं । अर्थात यह सारी सुविधायें अल्लाह तआला तुम्हें इसलिए उपलब्ध कराता है कि तुम अपने जीवन में उनसे लाभ उठा सको तथा अल्लाह की भक्ति एवं आज्ञापालन भी करो ।

[3]अर्थात हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), जिस प्रकार हमने आपको सन्देष्टा बना कर आपके समुदाय की ओर भेजा है, उसी प्रकार आप से पूर्व भी सन्देष्टा उनके समुदायों की ओर भेजे, उनके साथ तर्क, निशानियाँ एवं चमत्कार भी थे, परन्तु उन समुदायों ने उनको झुठलाया, उन पर ईमान नहीं लाये । अन्त में उनके इस झुठलाने के अपराध तथा पाप करने के कारण हमने उन्हें अपने दण्ड एवं प्रकोप का निशाना बनाया तथा ईमानवालों को सहायता एवं सहयोग दिया जो हम पर अनिवार्य है । यह जैसेकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा उन पर ईमान लाने वाले मुसलमानों को सांत्वना दी जा रही है कि काफ़िरों एवं मूर्तिपूजकों के झुठलाने के आचरण से घबराने की आवश्यकता नहीं है । यह कोई नई बात नहीं है । प्रत्येक नबी के साथ उसके समुदाय ने यही व्यवहार किया है । इसके अतिरिक्त काफ़िरों को यह चेतावनी है कि ये ईमान न लाये तो उनका परिणाम भी वही होगा जो पूर्वकालिक समुदायों का हो चुका है । क्योंकि अल्लाह की सहायता अन्ततः ईमानवालों को ही प्राप्त होगी, जिसमें संदेष्टा एवं उस पर ईमान लाने वाले सभी सम्मिलित हैं । حَقًّا . كَانَ का सूचक है, जो पहले आ गया है نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ उसकी संज्ञा है ।

اللهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهِ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾

(४८) वह अल्लाह (तआला) है जो हवायें चलाता है, वे बादलों को उठाती हैं[1] फिर अल्लाह (तआला) अपनी इच्छानुसार उसे आकाश में फैला देता है[2] तथा उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है[3] फिर आप देखते हैं कि उसके अंदर से बूँदें निकलती हैं,[4] तथा जिन्हें अल्लाह चाहता है उन भक्तों पर वह वर्षा करता है तो वे प्रसन्न हो जाते हैं।

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा विश्वास करना कि वर्षा उन पर बरसने से पूर्व तो वे निराश हो रहे थे।

فَانْظُرْ إِلَى آثٰرِ رَحْمَتِ اللهِ كَيْفَ يُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾

(५०) तो आप अल्लाह की कृपा के लक्षण देखें कि धरती की मृत्यु के पश्चात किस प्रकार अल्लाह तआला उसे जीवित कर देता है। नि:संदेह वही मृतकों को जीवित करने वाला है,[5] तथा वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है।

---

[1]अर्थात वे बादल जहाँ भी होते हैं, वहाँ से हवायें उनको उठाकर ले जाती हैं।

[2]कभी चलाकर, कभी ठहराकर, कभी तह पर तह करके, कभी दूर तक। यह आकाश में बादलों की विभिन्न अवस्थायें हैं।

[3]अर्थात उनको आकाश में फैलाने के पश्चात कभी उनको विभिन्न टुकड़ों में विभक्त कर देता है।

[4] وَدْق का अर्थ वर्षा है। अर्थात उन बादलों से अल्लाह यदि चाहता है तो वर्षा हो जाती है, जिस से वर्षा के इच्छुक प्रसन्न हो जाते हैं।

[5]آثار رحمت से तात्पर्य वे अनाज एवं पैदावार तथा मेवे हैं जो वर्षा से पैदा होते हैं तथा सुख-सुविधा एवं प्रसन्नता के कारण होते हैं। देखने से तात्पर्य शिक्षा ग्रहण करने की दृष्टि से देखना है ताकि मनुष्य अल्लाह की शक्ति एवं सामर्थ्य तथा इस बात को स्वीकार कर ले कि वह क़ियामत के दिन उसी प्रकार मृतकों को जीवित करेगा।

(५१) तथा यदि हम तीव्र हवा चला दें तथा ये लोग उन्हीं खेतियों को (मुरझायी हुई) पीली पड़ी देख लें, तो फिर उसके पश्चात कृतघ्नता व्यक्त करने लगें ।[1]

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِن بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾

(५२) निःसंदेह आप मृतकों को नहीं सुना सकते[2] तथा न बधिरों को (अपनी) आवाज सुना सकते हैं,[3] जबकि वे पीठ फेरकर मुड़ गये हों ।[4]

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾

(५३) तथा न आप अंधों को उनकी पथभ्रष्टता से मार्गदर्शन देने वाले हैं ।[5] आप तो केवल उन्हीं लोगों को सुनाते हैं जो हमारी आयतों

وَمَا أَنتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا

---

[1]अर्थात उन्ही खेतों को जिनको हमने वर्षा के द्वारा हरा-भरा किया था, यदि अत्यन्त (गर्मी अथवा शीतल) हवायें चलाकर उनकी हरियाली को पीली कर दें अर्थात तैयार फसल का विनाश कर दें तो यही वर्षा से प्रसन्न होने वाले अल्लाह की कृतघ्नता पर उतर आयेंगे । अर्थ यह है कि अल्लाह के न मानने वाले धैर्य एवं साहस से भी वंचित होते हैं । तनिक-सी बात पर प्रसन्नता से फूले नहीं समाते तथा तनिक-सी परीक्षा से निराश हो जाते हैं । ईमानवालों का व्यवहार दोनों अवस्थाओं में भिन्न होता है जैसाकि विस्तृत वर्णन गुज़र चुका है ।

[2]अर्थात जिस प्रकार मृत व्यक्ति समझ एवं प्रबोध से शून्य होते हैं, उसी प्रकार ये आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आमन्त्रण को समझने तथा उसे स्वीकार करने में असमर्थ हैं ।

[3]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा एवं उपदेश उनके लिए व्यर्थ है, जिस प्रकार कोई बहरा हो, उसे आप अपनी बात नहीं सुना सकते ।

[4]यह उनके कतराने एवं विमुख होने का अधिक स्पष्टीकरण है कि वह मृतक एवं बहरे होने के साथ ही साथ पीठ फेर कर जाने वाले हैं । सत्य की बातें उनके कानों में किस प्रकार पड़ सकती हैं तथा क्योंकर उनके हृदय एवं मस्तिष्क में समा सकती हैं ?

[5]इसलिए कि ये आंखों से जो लाभ प्राप्त होता है प्राप्त नहीं करते अथवा दृष्टि (हृदय दृष्टि) से वंचित हैं । यह भटकावे के जिस दलदल में फंसे हुए हैं, उससे किस प्रकार निकलें ?

فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

पर ईमान रखते है[1] तथा हैं भी वे आज्ञा-कारी ।[2]

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِن بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا

(५४) अल्लाह (तआला) वह है, जिसने तुम्हें शक्तिहीन अवस्था में पैदा किया,[3] फिर उस निर्बलता के पश्चात बल प्रदान किया,[4] फिर उस शक्ति के पश्चात क्षीणता तथा वृद्धावस्था कर दी[5]

---

[1]अर्थात यही सुनकर ईमान लाने वाले हैं, इसलिए कि यह बुद्धिमान एवं मनन-चिन्तन वाले हैं तथा प्रकृति के प्रतीक से वास्तविक प्रभावी ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं ।

[2]अर्थात सत्य के समक्ष शीश झुकाने वाले तथा उसके अनुयायी हैं ।

[3]यहाँ से अल्लाह (तआला) अपने सामर्थ्य का एक अन्य चमत्कार वर्णन कर रहा है तथा वह है विभिन्न विधियों से मनुष्य की सृष्टि । निर्बल (क्षीणता की अवस्था) से तात्पर्य वीर्य अर्थात पानी की बूंद है अथवा बाल्यकाल ।

[4]अर्थात यौवनकाल, जिसमें मानसिक शारीरिक शक्ति पूर्णरूप से विकसित हो जाती है ।

[5]क्षीणता से तात्पर्य आयु की वह अवस्था है जब मानसिक तथा शारीरिक क्षीणता का प्रारम्भ होता है तथा बुढ़ापे से तात्पर्य आयु की वह अवधि है जिसमें दुर्बलता बढ़ जाती है । साहस का अभाव, हाथ-पैरों की गति एवं पकड़ कम, बाल सफेद तथा समस्त आन्तरिक एवं वाह्य शक्तियाँ क्षीण हो जातीहैं । क़ुरआन ने मनुष्य की आयु की ये चार अवस्थाएं वर्णन की हैं । कुछ आलिमों (धर्मगुरूओं) ने अन्य अल्प अवस्थाओं का भी वर्णन किया है, जो क़ुरआन के संक्षेप की व्याख्या एवं चमत्कारिक शैली का स्पष्टीकरण है, जैसे इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि मनुष्य एक के बाद दूसरी उन परिस्थितियों एवं अवस्थाओं से गुज़रता है । इसका मूल तत्व मिट्टी है अर्थात उसके पिता आदम की उत्पत्ति मिट्टी से हुई थी । अथवा मनुष्य जो कुछ खाता है, जिससे वह मनि (वीर्य) उत्पन्न होती है जो माता के गर्भ में जाकर उसकी सृष्टि का कारण बनती है, वह सब मिट्टी ही की पैदावार है फिर वह वीर्य से रक्त का लोथड़ा, फिर माँस का लोथड़ा, फिर अस्थियाँ, जिन्हें माँस का वस्त्र पहनाया जाता है फिर उसमें आत्मा फूँकी जाती है । फिर माता के गर्भ से इस अवस्था में निकलता है कि अत्यन्त क्षीण, कोमल तथा निर्बल होता है । फिर उसके पश्चात समयानुसार कृमश: बढ़ता हुआ बाल्यकाल, किशोरकाल, तथा यौवनकाल को पहुँचता है तथा तदुपरान्त पुन: क्षीणता की अवस्था की ओर लौटता है, बुढ़ापा तथा पुन: वयोवृद्धावस्था यहाँ तक कि मृत्यु उसे अपनी गोद में ले लेती है ।

وَ شَيْبَةً ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ۝

जो चाहता है पैदा करता है,[1] वह सभी से भली-भाँति परिचित तथा सभी पर पूर्ण सामर्थ्यवान है।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ڏ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ۭ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ۝

(५५) तथा जिस दिन क़ियामत व्यापत हो जायेगी[2] पापी लोग सौगन्ध खायेंगे कि (संसार में) एक क्षण के अतिरिक्त नहीं ठहरे,[3] इसी प्रकार ये बहके हुए ही रहे।[4]

وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۡ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ

(५६) तथा जिन लोगों को ज्ञान तथा ईमान प्रदान किया गया वे उत्तर देंगे[5] कि तुम तो जैसाकि अल्लाह की किताब में है [6] क़ियामत के दिन तक ठहरे रहे।[7] आज का यह दिन

---

[1]उन्हीं वस्तुओं में दुर्बलता एवं बल भी है, जिससे मनुष्य गुज़रता है जैसाकि अभी विस्तृत वर्णन गुज़र चुका है।

[2]साअत का अर्थ है घड़ी, क्षण, तात्पर्य क़ियामत है। उसको क्षण इसलिए कहा गया है कि उसका घटित होना जब अल्लाह चाहेगा एक क्षण में हो जायेगा। अथवा इसलिए कि यह उस क्षण में होगी जो संसार का अंतिम क्षण होगा।

[3]संसार में अथवा क़ब्रों में। यह अपने स्वभाव के अनुसार झूठी सौगन्ध खायेंगे, इसलिए कि दुनिया में वे जितने समय रहे होंगे उनके ज्ञान में ही होगा तथा यदि तात्पर्य क़ब्र का जीवन है तो उनकी सौगन्ध अज्ञानता के कारण होगी क्योंकि वे क़ब्र की अवधि को नहीं जानते होंगे। कुछ कहते हैं कि क़ियामत की कठोरता एवं भयानकता की तुलना में संसार का जीवन उन्हें क्षणिक ही प्रतीत होगा

[4]'أَفَكَ الرَّجُلُ' का अर्थ है सत्य से विमुख हो गया। अर्थ होगा, उसी विमुखता के समान वह संसार में विमुख रहे अथवा भटके रहे।

[5]जिस प्रकार ये विद्वान संसार में भी समझाते रहे थे।

[6]अल्लाह की किताब से तात्पर्य अल्लाह का ज्ञान तथा उसका निर्णय है अर्थात लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक)।

[7]अर्थात जन्म के दिन से क़ियामत के दिन तक।

وَلَٰكِنَّكُمْ كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٦﴾

क़ियामत का ही दिन है, परन्तु तुम तो विश्वास ही नहीं करते थे ।[1]

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٥٧﴾

(५७) तो उस दिन अत्याचारियों को उनका तर्क कुछ काम न आयेगा तथा न उनसे क्षमा मँगवायी जायेगी न कर्म मांगा जायेगा ।[2]

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِن جِئْتَهُم بِآيَةٍ لَّيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा निःसंदेह हमने इस क़ुरआन में लोगों के समक्ष सब उदाहरण वर्णन किये हैं ।[3] आप उनके पास कोई भी लक्षण लायें,[4] ये काफ़िर तो यही कहेंगे कि तुम (बकवासी) झूठे हो ।[5]

كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

(५९) अल्लाह (तआला) उनके दिलों पर जो समझ नहीं रखते, इसी प्रकार मोहर लगा देता है ।

---

[1]कि वह आयेगी अपितु उपहास एवं मिथ्यारोपण के रूप में उसकी तुम माँग करते थे ।

[2]अर्थात उन्हें दुनिया में भेजकर यह अवसर नहीं दिया जायेगा कि वहाँ क्षमा एवं आज्ञापालन के द्वारा अल्लाह के प्रकोप का निराकरण कर लो ।

[3]जिनसे अल्लाह की एकता प्रमाणित एवं संदेष्टाओं की सत्यता साबित होती है तथा उसी प्रकार शिर्क का खण्डन तथा उसकी असत्यता प्रदर्शित होती है ।

[4]वह क़ुरआन का प्रस्तुत किया हुआ कोई प्रमाण हो अथवा उनकी इच्छानुसार कोई चमत्कार आदि ।

[5]अर्थात जादू आदि के अनुयायी । अर्थ यह है कि बड़ी से बड़ी निशानी, तथा स्पष्ट से स्पष्ट तर्क एवं निशानियाँ भी ये देख लें तब भी ईमान ये नहीं लायेंगे, क्यों ? इसका कारण आगे वर्णन कर दिया गया है कि अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी है, जो इस बात का लक्षण होती है कि उनका कुफ़्र एवं सीमा उल्लंघन उस अन्तिम सीमा तक पहुँच गया है जिसके पश्चात सत्य की ओर वापसी का समस्त मार्ग उनके लिए बन्द हैं ।

(६०) तो आप धैर्य रखें,[1] निःसंदेह अल्लाह का वचन सत्य है। आपको वे लोग हल्का (अधीर) न करें,[2] जो विश्वास नहीं करते।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ﴿٦٠﴾

सूरतु लुक़्मान-३१

سُورَةُ لُقْمَانَ

सूरः लुक़मान मक्का में अवतरित हुई, इसमें चौंतीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

(१) अलिफ़॰लाम॰मीम॰[3]

الم ﴿١﴾

(२) यह हिक्मत (दिव्यज्ञान) वाली किताब की आयतें हैं।

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾

---

[1]अर्थात उनके विरोध एवं द्वेष पर तथा उनकी कष्टदायक बातों पर, इसलिए कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सहायता का जो वचन दिया है वह निश्चित रूप से सत्य है, जो प्रत्येक परिस्थिति में पूरा होगा।

[2]अर्थात आपको क्रोधित करके धैर्य एवं संयम छोड़ने अथवा प्रशंसा करने पर बाध्य न कर दें, बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने ध्येय पर अड़िग रहें तथा उससे तनिक भी विमुख न हों।

[3]इसके प्रारम्भ में भी यह विच्छेदित अक्षर हैं, जिनके अर्थ तथा प्रयोजन का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। फिर भी व्याख्याकारों ने इसके दो महत्वपूर्ण लाभ बताये हैं। एक यह कि यह क़ुरआन इसी प्रकार के विच्छेदित अक्षरों के योग तथा अनुक्रम से रचित है, जिसके समतुल्य संकलन प्रस्तुत करने से अरबी भाषी विवश हो गये। यह इस बात का प्रमाण है कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का अवतरित किया हुआ है तथा वह सच्चा संदेष्टा है जिस पर वह अवतरित हुआ है, जो वह धार्मिक नियम लेकर आया है मनुष्य को उसकी आवश्यकता है तथा उसका सुधार एवं सौभाग्य की परिपूर्णता इसी धार्मिक नियम से सम्भव है। दूसरा यह कि मूर्तिपूजक अपने साथियों को इस क़ुरआन को सुनने से रोकते थे कि कहीं वे इससे प्रभावित होकर मुसलमान न हो जायें। अल्लाह तआला ने विभिन्न सूरतों का प्रारम्भ इसी प्रकार के विभिन्न विच्छेदित अक्षरों से किया ताकि वे इसको सुनने के लिए बाध्य हो जायें क्योंकि वर्णन की यह विधि नई तथा अछूती थी (ऐसरूत्तफ़ासीर)।

(३) जो सदाचारियों के लिए[1] मार्गदर्शन एवं (सर्वथा) कृपा है।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۝

(४) जो लोग नियमित रूप से नमाज पढ़ते हैं तथा ज़कात (धर्मदान) देते हैं तथा आख़िरत पर (पूरा) विश्वास करते हैं।[2]

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝

(५) यही लोग हैं जो अपने प्रभु की ओर से मार्गदर्शन पर हैं तथा यही लोग मोक्ष प्राप्त करने वाले हैं।[3]

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

(६) तथा कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अनायास बातों को मोल लेते हैं[4] कि अज्ञानता के साथ

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

---

[1] مُحسِن (मुहसिन) का बहुवचन مُحسنين (मुहसिनीन) है। इसका एक अर्थ तो है उपकार करने वाला, माता-पिता के साथ, सगे सम्बन्धियों के साथ, अधिकार वालों एवं दरिद्र लोगों के साथ। दूसरा अर्थ है पुण्य करने वाला, अर्थात बुराईयों से दूर रहने वाला सदाचारी। तीसरा अर्थ है अल्लाह की इबादत निःस्वार्थता एवं एकाग्रता तथा ध्यान के साथ करने वाला। जिस प्रकार जिब्रील के कथन में है .... «أَنْ تَعْبُدَ اللهَ كَأَنَّكَ تَرَاهُ» (अल्लाह की उपासना ऐसे करो मानों तुम उसे देख रहे हो) क़ुरआन वैसे तो समस्त जगत के लिए मार्गदर्शक है तथा दया का साधन है परन्तु इसका मूल लाभ चूँकि परोपकारी, सदाचारी तथा अल्लाह से भय खाने वाले ही उठाते हैं। इसलिए यहाँ इस प्रकार वर्णन किया है।

[2]नमाज़, ज़कात तथा परलोक (आख़िरत) पर विश्वास। ये तीनों अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इसलिए इनका विशेषरूप से वर्णन किया वरन् परोपकारी, सदाचारी एवं अल्लाह से डरने वाले समस्त अनिवार्य आदेश तथा सुन्नत बल्कि उत्तम कर्मों तक निरन्तर दृढ़ता पूर्वक पालन करते हैं।

[3] فلاح (फ़लाह) का भावार्थ के लिए देखिए सूरः बक़रः तथा मोमिनून का प्रारम्भिक अंश।

[4]भाग्यवान लोग जो अल्लाह की किताब से मार्ग प्राप्त तथा उसे सुन कर लाभान्वित होते हैं, उनके वर्णन के पश्चात उन हतभागी लोगों का वर्णन हो रहा है, जो अल्लाह के कथन को सुनने से तो विमुख होते हैं, परन्तु संगीत एवं गीत, नाच-गाना आदि अत्यन्त रूचि से सुनते हैं तथा उसमें सम्मिलित होते हैं। ख़रीदने से तात्पर्य यही है कि संगीत के यन्त्रों को अपने घरों में लाते हैं तथा फिर उनसे आनन्दित होते हैं। لهو الحديث से तात्पर्य गाना-बजाना, उसका यंत्र, संगीत तथा प्रत्येक वह वस्तु है जो मनुष्य को पुण्य एवं

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑥

लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटकायें तथा उसे उपहास बनायें,[1] यही वे लोग हैं जिनके लिए अपमानित करने वाली यातना है।[2]

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ⑦

(७) तथा जब उसके समक्ष हमारी आयतों का पाठ किया जाता है, तो अहंकार के साथ इस प्रकार मुंह फेर लेता है कि जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे कि उसके दोनों कानों में डाट हैं।[3] आप उसे कष्टदायी यातना की सूचना दीजिए।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

(८) नि:संदेह जिन लोगों ने ईमान स्वीकार कर लिया तथा काम भी नेक (धर्म परायणता

सत्कर्म से अचेत कर दे। इसमें किस्से, कहानियाँ, कथायें, गल्प रचनायें, काम सम्बन्धी एवं आश्चर्यजनक साहित्य तथा असभ्यता के प्रचारक समाचार पत्र सभी आ जाते हैं तथा आधुनिक अविष्कारों में रेडियो, टी॰वी॰, वी॰सी॰आर॰ तथा फिल्में आदि भी। सन्देष्टा के युग में कुछ लोगों ने गाने बजाने वाली दासियाँ भी इसी उद्देश्य के लिए ख़रीदी थीं कि वह लोगों के दिल गाने सुनाकर बहलाती रहें ताकि क़ुरआन तथा इस्लाम से वे दूर रहें। इस आधार पर इसमें गायिकायें भी आ जाती हैं, जो आजकल कलाकार, फ़िल्मी सितारे तथा सांस्कृतिक दूत तथा पता नहीं कैसे-कैसे सभ्य, आकर्षक एवं हृदयस्पर्शी नामों से पुकारी जाती हैं।

[1]इन समस्त वस्तुओं से निश्चित रूप से मनुष्य अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं तथा धर्म को उपहास एवं हँसी का निशाना भी बनाते हैं।

[2]इनकी संरक्षकता करने एवं साहस बढ़ाने वाले राज्य नेता, संस्थायें, समाचार पत्रों के स्वामी, लेखक और संवाद लेखक भी इसी घोर यातना के अधिकारी होंगे।

[3]यह उस व्यक्ति की दशा है जो उपरोक्त मनोरंजन के साधनों में मग्न रहता है, वह क़ुरआन की आयतों (सूत्रों) तथा अल्लाह के संदेष्टा की बातों को सुनकर बहरा बन जाता है जबकि वह बहरा नहीं होता तथा इस प्रकार मुख फेर लेता है जैसे उसने सुना ही नहीं, क्योंकि उसके सुनने से वह कष्ट अनुभव करता है, इसलिए उसे इससे कोई लाभ नहीं होता। وَقْرٌ का अर्थ है कानों में ऐसा बोझ जो उसे सुनने से वंचित कर दे।

لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۙ﴿٨﴾

के अनुसार) किया उनके लिए सुखों वाले स्वर्ग हैं।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾

(९) जहाँ वे सदैव रहेंगे, अल्लाह का सत्य वचन है,[1] वह अत्यन्त महिमा वाला तथा पूर्ण दिव्य ज्ञान वाला है।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَاۗبَّةٍ ۭ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَنْۢبَتْنَا

(१०) उसी ने आकाशों को बिना स्तम्भ के बनाया है, तुम उन्हें देख रहे हो,[2] तथा उसने धरती पर पर्वतों को डाल दिया ताकि वे तुम्हें कंपित न कर सकें,[3] तथा हर प्रकार के जीवधारी धरती में फैला दिये।[4] और उसने

---

[1]अर्थात यह अवश्य पूरा होगा, इसलिए कि यह अल्लाह की ओर से है। وَاللهُ لا يُخْلِفُ المِيعاد "तथा अल्लाह अपना वचन भंग नहीं करता।"

[2] تَرَوْنَــهَا यदि عَمَدٌ का विशेषण हो तो अर्थ होगा ऐसे स्तम्भ के बिना जो तुम देख सको, अर्थात आकाश के स्तम्भ हैं परन्तु ऐसे कि तुम नहीं देख सकते।

[3] "رَاسِيَةٌ" का बहुवचन رَوَاسِي है जिसका अर्थ ثابتةٌ है। अर्थात पर्वतों को धरती पर इस प्रकार भारी बोझ बनाकर रख दिया है कि जिनसे धरती स्थिर रहे अर्थात कंपित न हो। इसीलिए आगे फ़रमाया أن تميدبكم يَعِني كراهَةَ أن تَميدَ (تميل) بكُم أولِئَلا تَميدَ अर्थात इस बात की अप्रियता से कि धरती तुम्हारे साथ इधर-उधर डोले, अथवा इसलिए कि धरती इधर-उधर न डोले। जिस प्रकार समुद्र तट पर खड़े जहाज़ों में बड़े-बड़े लंगर डाल दिये जाते हैं ताकि जहाज़ न डोले। धरती के लिए पर्वतों की भी यही स्थिति है।

[4]अर्थात विभिन्न प्रकार के पशु धरती पर प्रत्येक ओर फैला दिये जिन्हें मनुष्य खाता भी है, सवारी एवं माल ढोने के लिए भी प्रयोग करता है तथा शोभा एवं सौन्दर्य हेतु भी अपने पास रखता है।

آسمان से वर्षा करके धरती से हर प्रकार के सुन्दर जोड़े उपजा दिये ।[1]	فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝١٠
(११) यह है अल्लाह की सृष्टि[2] अब तुम मुझे इसके सिवाय अन्य किसी की कोई सृष्टि तो दिखाओ[3] (कुछ नहीं), यह अत्याचारी खुली विपथा में हैं ।	هَٰذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝١١
(१२) तथा हमने नि:संदेह लुक़मान को तत्वज्ञान दिया[4] कि तू अल्लाह (तआला) की	وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لِلَّهِ ۚ وَمَن يَشْكُرْ

---

[1] زوج यहाँ प्रकार के अर्थ में है अर्थात हर प्रकार के अनाज तथा मेवे (फल) पैदा किये । इनका विशेषण करीम, इनके रंग की सुन्दरता एवं अधिक लाभ की ओर संकेत करता है ।

[2] هـذا (यह) संकेत है अल्लाह की उन पैदा की हुई वस्तुओं की ओर जिनका पूर्व की आयतों में वर्णन हुआ ।

[3] अर्थात जिनकी तुम पूजा करते हो तथा उन्हें सहायता के लिए पुकारते हो, उन्होंने आकाश तथा धरती की कौन सी वस्तु बनायी है ? कोई एक वस्तु तो बताओ । अर्थ यह है कि जब प्रत्येक वस्तु का स्रष्टा केवल तथा मात्र अल्लाह ही है तो इबादत के योग्य भी केवल वही है । उसके अतिरिक्त सृष्टि में कोई भी इस योग्य नहीं कि उसकी इबादत की जाये तथा उसे सहायता के लिए पुकारा जाये ।

[4] आदरणीय लुकमान अल्लाह के सदाचारी भक्त थे जिन्हें अल्लाह तआला ने बुद्धि एवं विवेक तथा धार्मिक दिव्य ज्ञान में उच्च स्थान प्रदान किया था । उनसे किसी ने पूछा कि तुम्हें यह ज्ञान एवं बोध किस प्रकार प्राप्त हुआ । उन्होंने फ़रमाया, सीधे मार्ग पर रहने, ईमानदारी को अपनाने तथा अलाभकारी बातों से बचने से एवं शान्त रहने के कारण । यह दास थे । उनके स्वामी ने कहा कि बकरी काट करके उसके सर्वश्रेष्ठ दो भाग लाओ अन्ततः वह जीभ तथा दिल निकालकर ले गये । एक अन्य अवसर पर स्वामी ने उनसे कहा कि बकरी काट करके उसके सबसे बुरे दो भाग लाओ । वह फिर वही जीभ तथा दिल लेकर चले गये । पूछने पर उन्होंने बताया कि जीभ तथा दिल यदि ठीक हों तो यह सर्वोत्तम हैं तथा यदि बिगड़ जायें तो उनसे बुरी कोई वस्तु नहीं । (इब्ने कसीर)

فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِۦ ۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿١٢﴾

कृतज्ञता व्यक्त कर,[1] प्रत्येक कृतज्ञ अपने ही लाभ के लिए कृतज्ञता व्यक्त करता है, जो भी कृतघ्नता व्यक्त करे वह जान ले कि अल्लाह (तआला) निस्पृह प्रशंसित है।

وَإِذْ قَالَ لُقْمَٰنُ لِٱبْنِهِۦ وَهُوَ يَعِظُهُۥ يَٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِٱللَّهِ ۖ إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

(१३) तथा जब लुक़मान ने उपदेश देते हुए अपने पुत्र से कहा कि हे मेरे प्रिय पुत्र! अल्लाह (तआला) के साथ साझीदार न बनाना,[2] निःसन्देह अल्लाह का साझीदार बनाना घोर अत्याचार है।[3]

وَوَصَّيْنَا ٱلْإِنسَٰنَ بِوَٰلِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُۥ وَهْنًا عَلَىٰ وَهْنٍ وَفِصَٰلُهُۥ

(१४) हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के सम्बन्ध में शिक्षा दी है,[4] उसकी माता ने कष्टों पर कष्ट उठाकर[5] उसे गर्भ में रखा तथा

---

[1]कृतज्ञता का अर्थ है अल्लाह के वरदानों पर उसकी प्रशंसा तथा उसके आदेशों का पालन।

[2]अल्लाह तआला ने आदरणीय लुक़मान का सर्वप्रथम यह सदुपदेश ब्यान किया है कि उन्होंने अपने पुत्र को शिर्क से रोका, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि माता-पिता के लिए आवश्यक है कि वह अपनी सन्तान को शिर्क से बचाने के लिए सर्वाधिक प्रयत्न करें।

[3]यह कुछ के निकट आदरणीय लुक़मान ही का कथन है तथा कुछ ने इसे अल्लाह का कथन कहा है तथा उसके समर्थन के लिए यह हदीस प्रस्तुत की है जो ﴿ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَٰنَهُم بِظُلْمٍ﴾ के अवतरित होने के सम्बन्ध में आयी है जिसमें आप *सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम* ने फ़रमाया था कि यहाँ अत्याचार से तात्पर्य महा अत्याचार है तथा आयत ﴿إِنَّ ٱلشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ का हवाला दिया (सहीह बुख़ारी संख्या ४७७६)। परन्तु वास्तव में इससे अल्लाह का कथन होने का न तो समर्थन होता है न खण्डन।

[4]एकेश्वरवाद तथा अल्लाह की इबादत के साथ ही माता-पिता के साथ सदव्यवहार करने पर बल दिया गया है। इससे इस शिक्षा की महत्ता परिलक्षित होती है।

[5]इसका अर्थ यह है कि माता के गर्भ में बालक जिस प्रकार बढ़ता है माता पर बोझ बढ़ता जाता है, जिससे माता कमज़ोर होती चली जाती है। माता के इन कष्टों के वर्णन से उस ओर भी संकेत मिलता है कि माता-पिता के साथ सदव्यवहार करते समय माता को प्राथमिकता दी जाये जैसाकि हदीस में भी है।

فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ۭ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ⑭

उसकी दूध छुड़ायी दो वर्ष में है[1] कि तू मेरी तथा अपने माता-पिता की कृतज्ञता व्यक्त कर, मेरी ही ओर लौटकर आना है।

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓي اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۡ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ⑮

(१५) तथा यदि वे दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें कि तू मेरे साथ साझीदार बना जिसका तुझे ज्ञान न हो, तो तू उनका कहना न मानना, परन्तु संसार में उनके साथ सुचारू रूप से निर्वाह करना तथा उसके मार्ग पर चलना जो मेरी ओर झुका हुआ हो।[2] तुम्हारा सब का लौटना मेरी ही ओर है, तुम जो कुछ करते हो उससे फिर मैं तुम्हें सूचित कर दूँगा।[3]

---

[1]इससे ज्ञात हुआ कि माता के स्तन से दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष है, इससे अधिक नहीं।

[2]अर्थात ईमानवालों का मार्ग।

[3]अर्थात मेरी ओर ध्यान लगाने वाले (ईमानवालों) का अनुसरण इसलिए करो कि अन्त में तुम लोगों को मेरे ही समक्ष प्रस्तुत होना है, तथा मेरी ही ओर से प्रत्येक को उसके (अच्छे अथवा बुरे) कर्मों का बदला (प्रतिफल) मिलना है। यदि तुम मेरे मार्ग का अनुसरण करोगे तथा मुझे याद करते हुए जीवन व्यतीत करोगे तो आशा है कि क़ियामत के दिन मेरे न्यायालय में सफल होगे अन्यथा इसके विपरीत परिस्थिति में मेरी यातनाओं से पीड़ित होगे। यह वाक्य आदरणीय लुक़मान की वसीयत से सम्बन्धित था। अब आगे पुन: उन्हीं वसीयतों का वर्णन है, जो लुक़मान ने अपने पुत्र को की थीं। मध्य की दो आयतों में अल्लाह तआला ने वाक्य प्रसंग के रूप में माता-पिता के साथ सदव्यवहार करने पर बल दिया, जिसका एक कारण तो यह वर्णन किया गया है कि लुक़मान ने यह सदुपदेश अपने पुत्र को नहीं दिया था क्योंकि इसमें स्वयं उनका अपना लाभ भी था। दूसरा, यह स्पष्ट हो जाये कि अल्लाह की एकता एवं भक्ति के पश्चात माता-पिता की सेवा तथा आज्ञापालन आवश्यक है। तीसरा यह कि शिर्क इतना बड़ा पाप है कि यदि उसका आदेश माता-पिता भी दें तो उनकी बात नहीं माननी है।

يَٰبُنَيَّ إِنَّهَآ إِن تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُن فِى صَخْرَةٍ أَوْ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ أَوْ فِى ٱلْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا ٱللَّهُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٦﴾

(१६) प्रिय पुत्र ! यदि कोई वस्तु राई के दाने के समान हो,[1] फिर वह भी यदि किसी पत्थर के नीचे हो अथवा आकाशों में हो अथवा धरती में हो, उसे अल्लाह (तआला) अवश्य लायेगा, अल्लाह (तआला) अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी तथा जानने वाला है ।

يَٰبُنَيَّ أَقِمِ ٱلصَّلَوٰةَ وَأْمُرْ بِٱلْمَعْرُوفِ وَٱنْهَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ وَٱصْبِرْ عَلَىٰ مَآ أَصَابَكَ ۖ إِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ ٱلْأُمُورِ ﴿١٧﴾

(१७) हे मेरे प्रिय पुत्र ! तू नमाज़ स्थापित रखना, अच्छे कार्यों के लिए आदेश देना तथा बुरे कार्यों से रोकना, यदि तुम पर संकट आये तो धैर्य रखना,[2] (विश्वास करो) कि यह बड़े साहसिक कार्यों में से है ।[3]

---

[1] إِنْ تَكُ का संकेत خطيئة हो तो अर्थ पाप तथा अल्लाह की अवज्ञा का कार्य है तथा उसका संकेत خصلة हो तो अर्थ अच्छा अथवा बुरा आचरण होगा । अर्थ यह है कि मनुष्य अच्छा अथवा बुरा कार्य चाहे जितना छिपकर करे, अल्लाह से नहीं छिप सकता, क़यामत के दिन अल्लाह उसे प्रस्तुत करेगा अर्थात उसका बदला देगा । अच्छे कर्म का बदला पुण्य तथा कुकर्मों का बदला दण्ड । राई के दाने का उदाहरण इसलिए दिया कि वह इतना छोटा होता है कि जिसके भार का आभास नहीं होता है न तौल में तुला को झुका सकता है । इसी प्रकार चट्टान (आबादी से दूर जंगल, पर्वत में) छिपने का सुरक्षित स्थान है । यह विषय हदीस में भी वर्णन किया गया है । फ़रमाया, यदि तुम से कोई व्यक्ति बिना छिद्र के पत्थर में भी कर्म करेगा, जिसका न कोई द्वार हो न खिड़की, अल्लाह तआला लोगों पर वह प्रकट कर देगा, चाहे वह कैसा ही कर्म हो (मुसनद अहमद ३\२८) । इसलिए कि वह सूक्ष्मदर्शी है, उसका ज्ञान अत्याधिक गुप्त बातों तक है तथा خبير (जानने वाला) है, अंधेरी रात्रि में चलने वाली चींटी के आवागमन से भी वह भलीभाँति परिचित है ।

[2] सत्कर्म का आदेश, दुष्कर्म से रोकने एवं नमाज़ की स्थापना तथा दुखों पर धैर्य की इसलिए चर्चा की है कि ये तीनों अत्याधिक महत्वपूर्ण इबादतें तथा पुण्य के कार्यों की आधारशिला हैं ।

[3] अर्थात उपरोक्त बातें उन कार्यों में से हैं जिन पर अल्लाह तआला ने बल दिया है तथा भक्तों पर अनिवार्य किया है । अथवा ये प्रलोभन है साहस तथा उत्साह उत्पन्न करने का क्योंकि साहस एवं उत्साह के बिना आज्ञापालन संभव नहीं । कुछ व्याख्याकारों के निकट

(१८) तथा लोगों के समक्ष अपने गाल न फुला,[1] तथा धरती पर अकड़कर अंहकार से न चल,[2] किसी अहंकारी घमंडी व्यक्ति को अल्लाह (तआला) पसन्द नहीं करता।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾

(१९) तथा अपनी चाल में मध्यमता रख,[3] तथा

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ

ذلك का संकेत धैर्य है। इससे पूर्व सत्कर्म का आदेश एवं बुराई पर रोक का उपदेश है तथा इस मार्ग में कठिनाई, कष्ट, दुख, धिक्कार एवं निन्दा आवश्यक है। इसलिए इसके तुरन्त पश्चात धैर्य की शिक्षा दी गयी तथा यह स्पष्ट कर दिया कि धैर्य का दामन थामे रखना कि यह साहस तथा उत्साह के कार्यों में से है तथा साहसी एवं उत्साही का एक बड़ा शस्त्र। इसके बिना आमन्त्रण का कर्तव्य पालन असम्भव है।

[1]अर्थात गर्व न करो कि लोगों को तुच्छ समझो तथा जब वे तुझसे बात करना चाहें तो तुम उनसे मुख फेर लो अथवा वार्तालाप करते समय उनसे मुख फेरे रखो। صعر एक रोग है, जो ऊँट के सिर अथवा गर्दन में होता है जिससे उसकी गर्दन मुड़ जाती है। यहाँ अहंकार के रूप में मुख फेर लेने के अर्थ में प्रयोग हुआ है।

[2]अर्थात ऐसा आचरण अथवा व्यवहार जिससे माल व धन अथवा मान एवं मर्यादा अथवा शक्ति के कारण गर्व तथा अहंकार का प्रदर्शन होता हो, यह अल्लाह को अप्रिय है, इसलिए कि मनुष्य एक तुच्छ विवश भक्त है। अल्लाह तआला को यही प्रिय है कि अपनी स्थिति के अनुसार नम्रता तथा कोमलता ही धारण करे, इसका उल्लंघन करके बड़प्पन का प्रदर्शन न करे क्योंकि बड़प्पन तो केवल अल्लाह ही के लिए है जो समस्त अधिकारों का स्वामी है तथा समस्त गुणों का स्रोत है। इसीलिए हदीस में फ़रमाया गया है "वह व्यक्ति स्वर्ग में नहीं जायेगा, जिसके दिल में सरसों के दाने के समान भी अहंकार होगा।" (मुसनद अहमद १/४१२, तिर्मिज़ी अबवाबुल बिर्रे, माजअ फ़िल क़िब्र) जो अहंकार के कारण कपड़े को खींचते (घसीटते) हुए चलेगा, अल्लाह उसकी ओर (क़ियामत के दिन) (कृपादृष्टि) से नहीं देखेगा (मुसनद अहमद ५/९,१० तथा देखिये अलबुख़ारी किताबुल लिबास)। फिर भी गर्व का प्रदर्शन किये बिना अल्लाह के प्रदानों का वर्णन अथवा अच्छे वस्त्र तथा भोजन आदि का प्रयोग उचित है।

[3]अर्थात चाल इतनी धीमी न हो कि जैसे कोई रोगी हो तथा न इतनी तीव्र गति से हो कि मान-सम्मान के विरूद्ध हो। इसी को अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है,

﴿ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا ﴾

"अल्लाह के भक्त धरती पर मान एवं शान्ति के साथ चलते हैं।" (सूरः *अल-फ़ुरक़ान*-६३)

مِنْ صَوْتِكَ ۚ إِنَّ أَنكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ﴿١٩﴾

अपना स्वर धीमा रख,[1] निःसंदेह अत्यधिक बुरी ध्वनि गधे की ध्वनि है।

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ﴿٢٠﴾

(२०) क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह (तआला) ने धरती तथा आकाश की प्रत्येक वस्तु को हमारी सेवा में लगा रखा है[2] तथा तुम्हें अपनी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष उपकार पूर्णतया प्रदान कर रखी हैं।[3] तथा कुछ लोग अल्लाह के विषय में बिना ज्ञान, बिना निर्देश तथा बिना दिव्य शास्त्र के झगड़ा करते हैं।[4]

---

[1]अर्थात चीख़-चिल्लाकर बात न कर, इसलिए कि यदि उच्च ध्वनि में बात करना प्रिय होता तो गधे की आवाज़ सबसे अच्छी समझी जाती, परन्तु ऐसा नहीं है, बल्कि गधे की आवाज़ सबसे बुरी तथा घृणित है। इसलिए हदीस में आता है कि गधे की आवाज़ सुनों तो शैतान से सुरक्षा माँगो (बुख़ारी किताब बदयिल ख़लकि तथा मुस्लिम आदि)

[2]अधीनकरण का अर्थ है लाभ उठाना, जिसको यहाँ "सेवा में लगा दिया" से व्यक्त किया गया है। जैसे आकाश की सृष्टि चन्द्रमा, सूर्य, सितारे आदि हैं। उन्हें अल्लाह तआला ने उन नियमों के अधीन कर दिया है कि ये मनुष्यों के लिए कार्य कर रहे हैं तथा मनुष्य उनसे लाभान्वित हो रहा है। तथा दूसरा अर्थ अधीन करने का आज्ञाकारी बना देना है। अतः बहुत सी धरती की सृष्टि को मनुष्य का अधीन बना दिया जिन्हें मनुष्य इच्छानुसार प्रयोग करता है। जैसे धरती (भूमि) तथा पशु आदि हैं। मानों अधीन करने का अर्थ यह हुआ कि आकाश तथा धरती की समस्त वस्तुयें मनुष्य के लाभ के लिए कार्य से लगी हुई हैं। चाहे वे मनुष्य के आधीन तथा उसके अन्तर्गत प्रयोग में हों अथवा उसके प्रयोग तथा आधीनता से परे हों। (फ़तहुल क़दीर)

[3]प्रत्यक्ष से वे सुख-सुविधायें हैं, जिनका ज्ञान बुद्धि एवं इंद्रियों आदि से सम्भव हो तथा गुप्त उपहारों से तात्पर्य वे जिनका संवेदन तथा अनुभव मनुष्य को नहीं। ये दोनों प्रकार के सुख-सुविधायें इतने हैं कि मनुष्य उनकी गणना भी नहीं कर सकता।

[4]अर्थात इसके उपरान्त भी लोग अल्लाह के विषय में झगड़ते हैं, कोई उसके अस्तित्व के विषय में कोई उसका साझीदार बनाने में तथा कोई उसके आदेश तथा नियमों के विषय में।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿٢١﴾

(२१) तथा जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की अवतरित की हुई प्रकाशना (वह्यी) का पालन करो, तो कहते हैं कि हमने तो जिस मार्ग पर[1] अपने पूर्वजों को पाया है उसी का अनुसरण करेंगे, चाहे शैतान उनके पूर्वजों को नरक की यातना की ओर बुलाता हो।

وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۗ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा जो व्यक्ति अपने चेहरा को (स्वयं को) अल्लाह के प्रति समर्पित कर दे[2] तथा वह है भी सदाचारी,[3] तो वस्तुत: उसने सुदृढ़ कड़ा थाम लिया,[4] सभी कर्मों का परिणाम अल्लाह की ओर है।

وَمَن كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा काफ़िरों के कुफ़्र से आप दुखी न हों[5] अन्त में उन सभी का लौटना हमारी ओर ही है, उस समय उनके किये को हम उन्हें बता देंगे[6] नि:सन्देह अल्लाह दिलों कि भेदों तक से अवगत है।[7]

---

[1]अर्थात आश्चर्य यह है कि उनके पास न तो कोई बौद्धिक तर्क है न किसी मार्गदर्शक का मार्गदर्शन तथा न किसी आकाशीय पुस्तक से कोई प्रमाण। जैसे कि लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं।

[2]अर्थात केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिए कर्म करें, उसके आदेशों का पालन तथा उसके धर्म विधान आदिष्ट का अनुसरण करें।

[3]अर्थात आदेश दी गई वस्तुओं का पालन तथा मना की गयी बातों को त्याग देने वाला।

[4]अर्थात अल्लाह से उसने पक्का वचन ले लिया कि वह उसको यातना नहीं देगा।

[5]इसलिए कि ईमान का सौभाग्य ही उनके भाग्य में नहीं है। आपका अपना प्रयत्न अपने स्थान पर उचित है तथा आपकी इच्छा भी प्रशंसा योग्य है, परन्तु अल्लाह का भाग्य लेख तथा इच्छा सर्वोपरि है।

[6]अर्थात उनके कर्मों का बदला देगा।

[7]तो उससे कोई बात गुप्त नहीं रह सकती।

(२४) हम उन्हें कुछ यूँ ही लाभ पहुँचा देते हैं, परन्तु अन्ततः हम उन्हें अत्यन्त विवशता की स्थिति में घोर यातनाओं की ओर हाँक ले जायेंगे ।[1]

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾

(२५) तथा यदि आप उनसे पूछें कि आकाश तथा धरती का विधाता कौन है ? तो ये अवश्य उत्तर देंगे अल्लाह,[2] तो कह दीजिए की समस्त प्रशंसाओं के योग्य अल्लाह ही है,[3] परन्तु उनमें से अधिकतर लोग अनजान हैं ।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

(२६) आकाशों में तथा धरती में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है,[4] निश्चय ही अल्लाह (तआला) अत्यन्त निस्पृह[5] एवं महिमा एवं प्रशंसा के योग्य है ।[6]

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾

(२७) तथा समस्त धरती के वृक्षों की यदि क़लमें हो जायें तथा समस्त समुद्रों की स्याही हो तथा उनके पश्चात सात समुद्र अन्य हों

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ

[1]अर्थात संसार में कब तक रहेंगे तथा उसके स्वाद एवं सुख-सुविधाओं से कहाँ तक आनन्दित होंगे ? यह संसार तथा सुख-सुविधायें तो कुछ दिन के लिये हैं, उसके पश्चात उनके लिए घोर यातनायें ही यातनायें हैं ।

[2]अर्थात उनको यह स्वीकार है कि आकाश तथा धरती का स्रष्टा अल्लाह ही है, न कि वे देवता जिनकी वे पूजा करते हैं ।

[3]इसलिए उनके इस स्वीकार से उन पर स्थापित हो गया ।

[4]अर्थात उनका स्रष्टा भी वही है, स्वामी भी वही तथा पालनहार एवं समस्त जगत का व्यवस्था करने वाला भी वही ।

[5]निस्पृह है अपने सिवाय से अर्थात प्रत्येक वस्तु उसकी स्पृही है तथा वह निस्पृह है ।

[6]अपनी समस्त पैदा की हुई वस्तुओं में । तो उसने जो कुछ पैदा किया तथा जो आदेश अवतरित किये, उस पर आकाश तथा धरती में समस्त प्रशंसा एवं गुणगान, योग्य मात्र वही है ।

سَبۡعَةُ أَبۡحُرٖ مَّا نَفِدَتۡ كَلِمَٰتُ ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٞ ﴿٢٧﴾

फिर भी अल्लाह की प्रशंसा समाप्त नहीं हो सकती ।[1] निःसंदेह अल्लाह (तआला) प्रभावशाली तथा प्रज्ञ है ।

مَّا خَلۡقُكُمۡ وَلَا بَعۡثُكُمۡ إِلَّا كَنَفۡسٖ وَٰحِدَةٍۚ إِنَّ ٱللَّهَ سَمِيعُۢ بَصِيرٌ ﴿٢٨﴾

(२८) तुम सब की उत्पत्ति तथा मरणोपरान्त जीवित करना ऐसा ही है, जैसे एक प्राण का,[2] निःसंदेह अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है ।

أَلَمۡ تَرَ أَنَّ ٱللَّهَ يُولِجُ ٱلَّيۡلَ فِي ٱلنَّهَارِ وَيُولِجُ ٱلنَّهَارَ فِي ٱلَّيۡلِ وَسَخَّرَ ٱلشَّمۡسَ وَٱلۡقَمَرَۖ كُلّٞ يَجۡرِيٓ إِلَىٰٓ أَجَلٖ مُّسَمّٗى

(२९) क्या आप नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) रात को दिन में तथा दिन को रात में खपा देता है ।[3] सूर्य तथा चन्द्रमा को उसी ने आज्ञाकारी बना रखा है कि प्रत्येक एक

---

[1]इसमें अल्लाह तआला की महिमा, महानता प्रताप उसके सर्वोत्तम नामों तथा सर्वोत्तम गुणों तथा उसके वे शब्द जो उसकी महिमा से अवगत कराते हैं उनका बयान हैं, वे इतने हैं कि किसी के लिए उनका घेरना अथवा उनकी जानकारी अथवा उनके तथ्य एवं वास्तविकता तक पहुँच पाना संभव नहीं है । यदि कोई इसकी गणना करना तथा लिखित रूप में लाना चाहे तो संसार के समस्त वृक्ष के कलम बना लिये जायें तथा समस्त समुद्र के पानी की स्याही बनाकर लिखना चाहें तथा वे समाप्त हो जायें, परन्तु अल्लाह के ज्ञान, उसकी सृष्टि एवं कलाकृति की विचित्रता एवं उसकी महिमा तथा प्रताप के प्रतीकों की गणना नहीं की जा सकती । सात समुद्र अतिश्योक्ति के रूप में है, परिधि में लेने का उद्देश्य नहीं है । इसीलिए कि अल्लाह की आयतों एवं शब्दों को सीमित कर लेना संभव ही नहीं है । (इब्ने कसीर) इस भावार्थ की आयत *सूरः कहफ़* के अन्त में गुज़र चुकी है ।

[2]अर्थात उसकी शक्ति इतनी अपरम्पार है कि तुम सबका पैदा करना अथवा प्रलय के दिन जीवित करना, एक प्राणी को पैदा करने अथवा जीवित करने के समान है । इसलिए कि वह जो कुछ चाहता है शब्द كُنۡ (कुन) से तत्क्षण उत्पन्न अस्तित्व में आ जाता है ।

[3]अर्थात रात्रि का कुछ भाग लेकर दिन में सम्मिलित करता है, जिससे दिन बड़ा तथा रात्रि छोटी हो जाती है । जैसे ग्रीष्म ऋतु में होता है । फिर दिन का कुछ भाग लेकर रात्रि में सम्मिलित कर देता है जिससे दिन छोटे तथा रात्रि बड़ी हो जाती है । जैसे शीत ऋतु में होता है ।

وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٩﴾

निर्धारित समय तक चलता रहे,[1] अल्लाह (तआला) प्रत्येक उस कर्म से जो तुम करते हो अवगत है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٣٠﴾

(३०) यह सब (प्रबन्ध) इस कारण है कि अल्लाह (तआला) सत्य है तथा उसके अतिरिक्त जिन जिन को लोग पुकारते हैं सब असत्य हैं,[2] तथा नि:संदेह अल्लाह (तआला)

---

[1]"निर्धारित समय तक" से तात्पर्य क़ियामत (प्रलय) तक है अर्थात सूर्य एवं चन्द्रमा के उदय एवं अस्त की यह व्यवस्था जिसको अल्लाह ने उनको आवद्धि कर रखा है, क़ियामत तक इसी प्रकार निरन्तर रहेगा। दूसरा अर्थ है एक "निर्धारित लक्ष्य तक" अर्थात अल्लाह ने उनकी परिक्रमा के लिए एक लक्ष्य तथा एक परिधि निर्धारित किया हुआ है। जहाँ उनकी यात्रा समाप्त होती है तथा दूसरे दिन फिर वहाँ से प्रारम्भ होकर प्रथम लक्ष्य तक आकर ठहर जाता है। एक हदीस में भी इस तथ्य की पुष्टि होती है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय अबू ज़र (رضي الله عنه) से फ़रमाया जानते हो, कि यह सूर्य कहाँ जाता (अस्त होता) है ? अबू ज़र कहते हैं कि मैंने कहा, "अल्लाह तथा उसके रसूल भली प्रकार जानते हैं।" फ़रमाया : उसका अन्तिम स्थान अर्श इलाही है, यह वहाँ जाता है तथा अर्श के नीचे सजदा करता है, फिर (वहाँ से निकलने की) अपने प्रभु से आज्ञा माँगता है। एक समय आयेगा कि उस को कहा जायेगा ."ارْجِعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ" "तू जहाँ से आया है वहीं लौट जा।" तो वह पूर्व से उदय होने के स्थान पर पश्चिम से उदय होगा। जैसाकि क़ियामत के निकट आने के लक्षण में आता है। (सहीह बुख़ारी किताबुत तौहीद तथा मुस्लिम किताबुल ईमान बाब बयान अज़्ज़मनि अल्लज़ी ला युक़बल फ़ीहि अल ईमान) आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) फ़रमाते हैं, सूर्य रहट की भाँति है, दिन को आकाशों की परिधि पर चलता रहता है, जब अस्त हो जाता है तो रात्रि को धरती के नीचे अपने पथ पर चलता रहता है यहाँ तक कि पूर्व से उदय हो जाता है। इसी प्रकार चन्द्रमा की व्यवस्था है। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात यह प्रबन्ध तथा निशानियाँ अल्लाह तआला तुम्हारे लिए प्रकट करता है ताकि तुम समझ लो कि समस्त जगत का प्रबन्ध चलाने वाला केवल एक अल्लाह है, जिसके आदेश एवं इच्छानुसार यह सभी कुछ हो रहा है, तथा उसके अतिरिक्त सब झूठ है अर्थात किसी का कोई अधिकार नहीं है, बल्कि सब उसी के आधीन हैं क्योंकि सब उसी की सृष्टि हैं तथा उसके आधीन हैं, उनमें से कोई भी एक कण को भी हिलाने की शक्ति नहीं रखते।

अत्यन्त उच्च एवं अत्यन्त महान है ।[1]

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُم مِّنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣١﴾

(३१) क्या तुम इस पर विचार नहीं करते कि जल में नवकायें अल्लाह के अनुग्रह से चल रही हैं इसलिए कि वह तुम्हें अपने चिन्ह देखा दे,[2] नि:संदेह इसमें प्रत्येक धैर्यवान एवं कृतज्ञ[3] के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं ।

وَإِذَا غَشِيَهُم مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ

(३२) तथा जब उन पर धारायें उन छत्रों की तरह छा जाती हैं, तो वे (अत्यन्त) विश्वास करके अल्लाह (तआला) ही को पुकारते हैं[4] तथा जब अल्लाह (तआला) उन्हें छुटकारा दिलाकर थल की ओर पहुँचाता है, तो कुछ उनमें से संतुलित रहते हैं,[5] तथा हमारी

---

[1]उससे उत्तम महिमावान कोई है न उससे बड़ा कोई । उसकी अपरमपार महिमा, सर्वोत्तम पद तथा प्रशंसा के समक्ष हर वस्तु तुच्छ एवं पतित है ।

[2]यह समुद्र में नावों का चलना, यह भी उसकी अनुग्रह एवं दया का प्रदर्शन है तथा उसको आधीन बनाने के सामर्थ्य का एक नमूना है । उसने वायु एवं जल दोनों को ऐसे उचित ढंग से रखा कि समुद्र की सतह पर नवकायें चल सकें, वरन् वह चाहे तो वायु की तीव्रता तथा धाराओं के उछाल से नावों का चलना असम्भव हो जाये ।

[3]विपत में धैर्य रखने वाले, सुख-शान्ति में अल्लाह की कृतज्ञता करने वाले ।

[4]अर्थात जब इनकी नवकायें ऐसी तूफ़ानी धाराओं में घिर जाती हैं, जो बादलों एवं पर्वतों की भाँति होती हैं तथा मौत की भुजायें उन्हें अपनी पकड़ में लेने प्रतीत होने लगती हैं, तो फिर सारे सांसारिक देवता उनकी मस्तिष्क से निकल जाते हैं तथा केवल आकाशीय परमपूज्य को पुकारते हैं, जो वास्तव में सत्य पूज्य है ।

[5]कुछ ने مُقْتَصِد का अर्थ बताया है कि वचन को निभानेवाला, अर्थात कुछ ईमान, एकेश्वरवाद तथा आज्ञापालन के उस वचन पर दृढ़ रहते हैं, जो तूफ़ानी पकड़ में उन्होंने किया था । इनके निकट इस वाक्य में लोप है, वास्तविक कथन इस प्रकार होगा فمنهم مُقْتَصِد و منهم كافر तो कुछ उनमें से ईमान वाले तथा कुछ काफ़िर होते हैं । (फ़तहुल क़दीर) दूसरे व्याख्याकारों के निकट इसका अर्थ है मध्यम मार्ग पर रहने वाला तथा यह भी नकारात्मक के अध्याय में होगा । अर्थात इतने भयानक परिस्थिति एवं फिर वहाँ अपने

خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝٣٢

आयतों को अस्वीकार वही करते हैं, जो वचन तोड़ने वाले तथा कृतघ्न हों ।[1]

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۫ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝٣٣

(३३) लोगो ! अपने प्रभु का भय रखो तथा उस दिन का भय करो, जिस दिन पिता अपने पुत्र को कोई लाभ न पहुँचा सकेगा तथा न पुत्र अपने पिता को तनिक भी लाभ पहुँचाने वाला होगा,[2] याद रखो ! अल्लाह का वचन सत्य है, देखो ! तुम्हें साँसारिक जीवन धोखे में डाले तथा न धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें धोखे में डाल दे ।

اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ

(३४) नि:सन्देह अल्लाह (तआला) ही के पास क़ियामत का ज्ञान है । वही वर्षा करता है तथा माता के गर्भ में जो है उसे जानता है । कोई (भी) नहीं जानता कि कल क्या कुछ कमायेगा ? न किसी को यह ज्ञात है कि किस धरती पर मरेगा ।[3] याद रखो ! अल्लाह

प्रभु की इतनी महान निशानी का दर्शन करने तथा अल्लाह के उपकार के उपरान्त कि उसने वहाँ से उसको मुक्ति प्रदान की, मनुष्य अब भी अल्लाह की पूर्ण इबादत एवं आज्ञापालन नहीं करता ? तथा मध्यम मार्ग अपनाता है, जबकि वह परिस्थिति, जिनसे गुज़र कर आया है, पूर्णभक्ति के योग्य है, न कि मध्यम मार्ग के । (इब्ने कसीर) परन्तु प्रथम भावार्थ पूर्व वाक्य के अनुसार अधिक निकट है ।

[1] ختّار द्रोही के अर्थ में है । वचन भंग करने वाला, كفور कृतघ्न ।

[2] جاز कर्ता संज्ञा है جزى يجزي से । बदला देना । अर्थ यह है कि यदि पिता चाहे कि पुत्र को बचाने के लिए अपने प्राणों का बदला अथवा पुत्र पिता के लिए प्राणों को बदले के रूप में प्रस्तुत कर दे, तो वहाँ यह संभव न होगा । प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का दण्ड भोगना पड़ेगा । जब पिता-पुत्र एक-दूसरे के काम न आ सकेंगे तो अन्य सम्बन्धियों का क्या स्थान होगा ? तथा वे किस प्रकार एक दूसरे को लाभ पहुँचा सकेंगे ?

[3] हदीस में आता है कि पाँच वस्तुयें अप्रत्यक्ष की कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता । (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: लुक़मान तथा किताबुल इस्तिस्क़ा)

تَمُوْتُ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝٣٤

(तआला) ही पूर्ण ज्ञानवाला तथा सत्य जानने वाला है।

सूरतुस्सजदः-३२

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ

सूरः सजदा मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें तीस आयतें तथा तीन रूकुऊ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

---

(१) क़ियामत के समीपस्थ होने के लक्षण तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वर्णन किये हैं। परन्तु क़ियामत के आने का निश्चित ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं, किसी फ़रिश्ते को नहीं किसी भेजे गये संदेष्टा को नहीं। (२) वर्षा की समस्या ऐसी ही है। लक्षण एवं संकेत से अनुमान तो लगाया जा सकता है परन्तु यह बात प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव एवं दर्शन में है कि यह अनुमान कभी सही होते हैं कभी ग़लत। यहाँ तक मौसम विभाग की घोषणा भी ठीक नहीं होती। जिससे ज्ञात होता है कि वर्षा का भी निश्चित ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। (३) माता के गर्भ में यान्त्रिक साधन के द्वारा लिंग का अधूरा अनुमान तो शायद संभव है कि लड़का है अथवा लड़की ? परन्तु माता के गर्भ में पलने वाला यह शिशु शौभाग्यशाली है अथवा हतभागी एवं पूरा है या अधूरा, सुन्दर होगा अथवा कुरूप, काला होगा अथवा गोरा आदि बातों का ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं। (४) मनुष्य कल क्या करेगा ? वे धार्मिक काम होगा अथवा साँसारिक ? किसी को आगामी कल के संदर्भ में ज्ञान नहीं है कि वह उसके जीवन में आयेगा भी अथवा नहीं ? तथा यदि आया भी तो वह उसमें क्या कुछ करेगा ? (५) मृत्यु कहाँ आयेगी ? घर में अथवा घर से बाहर अपने देश में अथवा परदेश में, जवानी में आयेगी अथवा बुढ़ापे में। अपनी मंशा कामना की पूर्ति के पश्चात अथवा पूर्व ? किसी को ज्ञात नहीं

सूरः अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सजदः : हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमे (शुक्रवार) के दिन फ़ज्र (भोर) की नमाज़ में *अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सजदः* (तथा दूसरी रकआत में) *सूरः दहर* पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम किताबुल जुमआ) उसी प्रकार यह भी उचित प्रमाण से सिद्ध है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को सोने से पूर्व *सूरः अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सजदा* तथा *सूरः मुल्क* पढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी संख्या ८९२ तथा मुसनद अहमद ३/३४०)

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

الٓمّٓ ①

(२) नि:संदेह इस किताब का अवतरित करना समस्त जगत के प्रभु की ओर से है ।[1]

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ②

(३) क्या यह कहते हैं कि इसने उसे गढ़ लिया है ?[2] नहीं-नहीं, बल्कि यह तेरे प्रभु की ओर से सत्य है, ताकि आप उन्हें डरायें, जिनके पास आपसे पूर्व कोई डराने वाला नहीं[3] आया, सम्भव है कि वे सत्य मार्ग पर आ जायें ।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ③

(४) अल्लाह (तआला) वह है जिसने आकाशों तथा धरती को तथा जो कुछ उनके मध्य है, सब कुछ छ: दिन में उत्पन्न किया फिर अर्श पर उच्चय हुआ[4] तुम्हारे लिए उसके सिवाय कोई सहायता करने वाला, अभिस्तावक नहीं ।[5]

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ

---

[1]अर्थ यह है कि यह असत्य, जादू, ज्योतिष एवं वालीत कथा-कहानियों की किताब नहीं है, अपितु अखिल जगत के प्रभु की ओर से मार्गदर्शिका है ।

[2]यह फटकार के रूप में है कि क्या अखिल जगत के प्रभु की अवतरित की हुई इस प्रभावी वाक्य (ग्रन्थ) के विषय में कहते हैं कि इसे स्वयं (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने गढ़ लिया है ।

[3]यह क़ुरआन के अवतरित होने का कारण है । उससे भी ज्ञात हुआ (जैसाकि पहले भी स्पष्टीकरण गुज़र चुका है) कि अरबों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रथम नबी थे । कुछ लोगों ने आदरणीय शुऐब को भी अरबों में भेजा हुआ माना है । इस आधार पर समुदाय का तात्पर्य फिर विशेष रूप से क़ुरैश होंगे जिनकी ओर कोई नबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूर्व नहीं आया ।

[4]इसके लिए देखिये *सूर: आराफ़-५४* की व्याख्या । यहाँ उस विषय की पुनरावृत्ति करने से यह उद्देश्य प्रतीत होता है कि अल्लाह तआला की अपार शक्ति एवं विचित्र सृष्टि के वर्णन से शायद वे क़ुरआन सुनें तथा उस पर विचार करें ।

[5]अर्थात वहाँ कोई ऐसा मित्र नहीं होगा जो तुम्हारी सहायता कर सके तथा तुम उसके द्वारा अल्लाह की यातना को टाल सको, न वहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला ही ऐसा होगा जो तुम्हारी सिफ़ारिश कर सके ।

أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ④

क्या फिर भी तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?[1]

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ⑤

(५) वह आकाश से धरती तक कार्यों का साधन करता है।[2] फिर (वह कार्य) एक ऐसे दिन में उसकी ओर चढ़ जाता है, जिसका अनुमान तुम्हारी गणना के एक हज़ार वर्ष के समान है।[3]

ذَٰلِكَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

(६) यही है प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष का जानने वाला प्रभावशाली अत्यन्त कृपालु।

---

[1]अर्थात हे अल्लाह के अतिरिक्त अन्य के पुजारियो तथा अन्यों पर विश्वास करने वालो ! क्या फिर भी तुम शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?

[2]आकाश से जहाँ अल्लाह का अर्श (सिहांसन) तथा सुरक्षित पुस्तक (लौह महफ़ूज़) है, अल्लाह तआला धरती पर अपने आदेश अवतरित करता है अर्थात उपाय करता है तथा धरती पर उसका पालन होता है। जैसे जीवन मरण स्वास्थ व रोग, प्रदान तथा अवयध, धन तथा दरिद्रता युद्ध एवं संधि मान तथा अपमान आदि। अल्लाह तआला अर्श पर से अपने लिखे हुए भाग्य के अनुसार यह प्रबन्ध एवं अधिपत्य करता है।

[3]अर्थात फिर उसका यह उपाय अथवा आदेश उसकी ओर वापस लौटता है, एक ही दिन में, जिसे फ़रिश्ते लेकर जाते हैं तथा चढ़ने की अथवा आने-जाने की दूरी इतनी है कि फ़रिश्तों के अतिरिक्त अन्य हज़ार वर्षों में तय करे। अथवा इससे क़ियामत के दिन तात्पर्य हैं कि उस दिन मनुष्यों के जो कर्म अल्लाह के सदन में प्रस्तुत होंगे। उस दिन के निर्धारण एवं व्याख्या में टीकाकारों के मध्य अत्याधिक मतभेद है। इमाम शौकानी ने १५,१६ कथन इस विषय में उदघृत किये हैं। इसलिए आदरणीय इब्ने अब्बास ने इस सम्बन्ध में मौन धारण करने को उचित समझा है तथा इसकी वास्तविकता को अल्लाह पर छोड़ दिया है। ऐसारूत्तफ़ासीर के रचयिता कहते हैं कि क़ुरआन में यह तीन स्थान पर आया है तथा तीनों स्थानों पर भिन्न-भिन्न दिन तात्पर्य हैं। *सूरः हज* आयत ४७ में 'योम' (يوم) शब्द से तात्पर्य वह काल अथवा अवधि है कि जो अल्लाह के पास है तथा *सूरः मआरिज* में जहाँ 'योम' की मात्रा पचास हज़ार वर्ष बतायी गयी है, हिसाब का दिन तात्पर्य है तथा इस स्थान पर 'योम' से तात्पर्य दुनिया का अन्तिम दिन है, जब दुनिया के अन्त के साथ ही व्यवस्था तथा उपाय का भी अन्त हो जायेगा।

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۖ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنسَانِ مِن طِينٍ ۝٧

(७) जिसने अत्यन्त सुन्दर बनाई जो वस्तु भी बनायी[1] तथा मनुष्य की उत्पत्ति मिट्टी से प्रारम्भ की ।[2]

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِن سُلَالَةٍ مِّن مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝٨

(८) फिर उसका वंश एक तुच्छ पानी के सारतत्व से बनाया ।[3]

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِن رُّوحِهِ ۖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝٩

(९) जिसे ठीक-ठाक करके उसमें अपना प्राण फूँका,[4] तथा उसी ने तुम्हारे कान, आँखें तथा दिल बनाये[5] (उस पर भी) तुम बहुत ही थोड़ी कृतज्ञता करते हो ।[6]

---

[1]अर्थात जो वस्तु भी अल्लाह ने बनायी है, वह चूँकि उसकी तत्व दर्शिता एवं हितकारिता की माँग से (अभिप्राय) है, इसलिए उसमें अपनी एक सुन्दरता एवं आकर्षण है। यूँ तो उसकी बनायी हुई प्रत्येक वस्तु सुन्दर एवं आकर्षक है तथा कुछ ने أحسن का अर्थ أتقن و أحكم के किये हैं अर्थात प्रत्येक वस्तु सुदृढ़ एवं पक्की बनायी। कुछ ने इसे ألهم के भावार्थ में लिया है, अर्थात प्रत्येक सृष्टि को उन चीजों का पता बता दिया, जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

[2]अर्थात प्रथम मनुष्य आदम को मिट्टी से बनाया, जिनसे मनुष्यों का आरम्भ हुआ तथा उनकी पत्नी आदरणीया हौवा को आदम की बायीं पसली से पैदा किया, जैसाकि हदीस से ज्ञात होता है।

[3]अर्थात वीर्य की बूँद से। अर्थ यह है कि एक मनुष्य का जोड़ा बनाने के पश्चात, उसके वंशज के लिए यह विधि निर्धारित की कि स्त्री-पुरूष आपस में विवाह करें, उनके संगम से जो पानी की बूँद, स्त्री के गर्भाशय में जायेगी, उससे हम एक मनुष्य का शरीर बनाकर वाहर भेजते रहेंगे।

[4]अर्थात उस शिशु की, माता के पेट में पालन पोषण करते हैं, उसके अंग बनाते तथा संवारते हैं तथा फिर उसमें आत्मा फूँकते हैं।

[5]अर्थात ये सारी वस्तुयें पैदा कीं ताकि वह अपनी सृष्टि को परिपूर्ण कर दे, तो तुम प्रत्येक सुनने वाली वात को सुन सको, देखने वाली वस्तु को देख सको, तथा प्रत्येक मस्तक एवं बुद्धि में आने वाली बात को समझ सको।

[6]अर्थात इतने अनुग्रह के उपरान्त मनुष्य इतना कृतघ्न है कि अल्लाह की बहुत ही कम कृतज्ञता व्यक्त करता है अथवा कृतज्ञता व्यक्त करने वाले लोग ही अल्प संख्या में हैं।

(१०) तथा उन्होंने कहा कि क्या हम जब धरती में खो जायेंगे[1] क्या फिर नये जीवन में आ जायेंगे ? बल्कि (बात यह है) कि उन लोगों को अपने प्रभु के मिलन का विश्वास ही नहीं।

وَقَالُوٓا۟ أَءِذَا ضَلَلْنَا فِى ٱلْأَرْضِ أَءِنَّا لَفِى خَلْقٍ جَدِيدٍۭ ۚ بَلْ هُم بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كَـٰفِرُونَ ﴿١٠﴾

(११) कह दीजिए ! कि तुम्हें यमदूत मारेगा जो तुम पर नियुक्त किया गया है।[2] फिर तुम सब अपने प्रभु की ओर लौटाये जाओगे।

قُلْ يَتَوَفَّىٰكُم مَّلَكُ ٱلْمَوْتِ ٱلَّذِى وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

(१२) तथा काश कि आप देखते जब कि पापी लोग अपने प्रभु के समक्ष सिर झुकाये हुए होंगे,[3] कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमने देख लिया तथा सुन लिया,[4] अब तू हमें वापस लौटा दे तो पुण्य के कार्य करेंगे, हम विश्वास वाले हैं।[5]

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا۟ رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَٱرْجِعْنَا نَعْمَلْ صَـٰلِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿١٢﴾

(१३) तथा यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को मार्गदर्शन प्राप्त कर देते,[6] परन्तु मेरी यह

وَلَوْ شِئْنَا لَـَٔاتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَىٰهَا وَلَـٰكِنْ حَقَّ ٱلْقَوْلُ مِنِّى

---

[1] जब किसी वस्तु पर कोई अन्य वस्तु प्रभावी हो जाये तथा प्रथम के समस्त प्रभाव समाप्त हो जायें, तो उसको ضلالت (खो जाने) से कहते हैं। ضللنا في الأرض के अर्थ होंगे कि जब मिट्टी में मिलकर हमारा अस्तित्व खो जायेगा।

[2] अर्थात उसका कार्य ही यही है कि जब तुम्हारी मृत्यु का समय आ जायेगा, तो आकर प्राण निकाल लेगा।

[3] अर्थात अपने कुफ्र व शिर्क एवं पाप के कारण अथवा अपमान के कारण।

[4] अर्थात जिसको झुठलाते थे, उसे देख लिया, जिसको अस्वीकार करते थे, उसे सुन लिया। अथवा तेरी निषेधाज्ञा की सत्यता को देख लिया तथा संदेष्टाओं की पुष्टि को सुन लिया, परन्तु उस समय का देखना-सुनना उनके कुछ काम नहीं आयेगा।

[5] परन्तु अब विश्वास किया तो क्या लाभ ? अब तो अल्लाह की यातना उन पर सिद्ध हो चुकी है, जिसे भुगतना होगा।

[6] अर्थात दुनिया में यदि यह मार्गदर्शन दबाव से होता, जिसमें परीक्षा का अवसर न होता।

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ⑬

बात पूर्णता: सत्य हो चुकी है कि मैं अवश्य नरक को मनुष्यों तथा जिन्नों से भर दूँगा ।[1]

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑭

(१४) अब तुम अपने उस दिन के मिलन को भूल जाने का स्वाद चखो, हमने भी तुम्हें भुला दिया[2] अपने किये हुए कर्मों के (दुष्परिणाम) से स्थाई यातना का आनन्द लो ।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ⑮ السجدة

(१५) हमारी आयतों पर वही ईमान लाते हैं,[3] जिन्हें जब कभी उनको शिक्षा दी जाती है, तो सजदे में गिर पड़ते हैं,[4] तथा अपने प्रभु की प्रशंसा के साथ उसकी महिमागान करते हैं ।[5] तथा अहंकार से अलग रहते हैं ।[6]

---

[1]अर्थात मनुष्यों के दो प्रकार में से जो नरक में जाने वाले हैं, उनसे नरक को भरने वाली मेरी बात सत्य सिद्ध हो गयी ।

[2]अर्थात जिस प्रकार तुम हमें दुनिया में भुलाये रहे, आज हम भी तुमसे ऐसा ही व्यवहार करेंगे, वरन् स्पष्ट बात है कि अल्लाह तो भूलने वाला नहीं है ।

[3]अर्थात मानते तथा उनसे लाभ उठाते हैं ।

[4]अर्थात अल्लाह की आयतों का आदर तथा उसकी पकड़ एवं यातनाओं से डरते हुए ।

[5]अर्थात प्रभु को इन समस्त बातों से पवित्र मानते हैं, जो उसकी महिमा के योग्य ही नहीं हैं तथा उसके उपकार पर उसकी महिमा एवं प्रशंसा करते हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण एवं भरपूर अनुग्रह, ईमान की ओर मार्गदर्शन की है । अर्थात वह अपने सजदों में «سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ» अथवा سبحان ربي العظيم आदि शब्द पढ़ते हैं ।

[6]अर्थात आज्ञापालन एवं आत्म समर्पण का मार्ग अपनाते हैं । अज्ञानियों एवं काफ़िरों की भाँति नहीं करते । इसलिए कि अल्लाह की इबादत से अहंकार करना नरक में जाने का साधन है ।

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾

"नि:सन्देह जो लोग हमारी इबादत से अहंकार करते हैं वे नरक में अपमानित होकर प्रवेश करेंगे ।" (सूर: अल-मोमिन-६०)

(१६) उनकी करवटें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं,[1] अपने प्रभु को भय तथा आशा के साथ पुकारते हैं।[2] तथा जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है, वह ख़र्च करते हैं।[3]

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ⑯

(१७) कोई प्राणी नहीं जानता जो कुछ हमने उनकी आँखों की ठंडक उनके लिए छिपा रखी है,[4] जो कुछ करते थे यह उसका बदला है।[5]

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑰

इसलिए ईमानवालों का आचरण उनके विपरीत होता है, वह अल्लाह के समक्ष प्रत्येक क्षण नम्रता, तुच्छता एवं दरिद्रता तथा एकाग्रता एवं विनम्रता का प्रदर्शन करते हैं।

[1]अर्थात रातों को उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते हैं, क्षण-याचना, आराधना-उपासना, महिमा एवं प्रशंसा तथा प्रार्थना एवं विनती करते हैं।

[2]अर्थात उसकी दया एवं कृपा के साथ उसके उपकार एवं अनुकम्पा की आशा भी रखते हैं तथा उसके क्रोध एवं प्रकोप तथा पकड़ एवं यातना से डरते भी हैं। मात्र आशा ही आशा नहीं रखते हैं, कि कर्म से निश्चिन्त हो जायें (जैसाकि बे अमल एवं कुकर्मियों का कार्य है) तथा न यातना का इतना भय ही रखते हैं कि उसकी दया एवं कृपा से निराश हो जायें क्योंकि यह निराशा भी कुफ़्र एवं कुमार्गता की सूचक है।

[3]व्यय में आवश्यक दान (ज़कात) सामान्य दान (सत्कार) पुण्य दोनों सम्मिलित हैं। ईमानवाले दोनों का अपनी शक्तिभर प्रयोजन करते हैं।

[4] نَفْسٌ जाति वाचक संज्ञा है जो सर्वसाधारण के अर्थ में है अर्थात उसको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। उन उपहारों को जो उक्त ईमानवाले के लिए छिपा रखी हैं, जिनसे उनकी आँखें ठंडी हो जायेंगी। इसकी व्याख्या में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह हदीस कुदसी वर्णन की है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने अपने सदाचारी भक्तों के लिए वे वस्तुयें तैयार कर रखी हैं जो किसी आँख ने देखी तथा न किसी कान ने सुनी, न किसी मनुष्य के ध्यान में आयी (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः सजदः)

[5]इससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह की कृपा-दया के योग्य बनने के लिए पुण्य के कार्य करना आवश्यक है।

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَّا يَسْتَوُونَ ⑱

(१८) क्या वह जो ईमानवाला हो उसके समतुल्य है जो भ्रष्टाचारी हो ?[1] ये समान नहीं हो सकते।

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑲

(१९) जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया तथा पुण्य के कार्य किये, उनके लिए स्थाई स्वर्ग है, अतिथि सत्कार है, उनके कर्मों के बदले जो वह करते थे।

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ⑳

(२०) तथा परन्तु जिन्होंने आदेशों की अवहेलना की उनका ठिकाना नरक है, जब कभी भी उससे निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायेंगे।[2] तथा कह दिया जायेगा[3] कि अपने झुठलाने के बदले अग्नि का स्वाद चखो।

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ

(२१) तथा वस्तुत: हम उन्हें निकट की छोटी सी कुछ यातनाओं को[4] उस बड़ी यातना के

---

[1]यह प्रश्न नकारात्मक है अर्थात अल्लाह के समक्ष ईमानवाले तथा काफ़िर समान नहीं हो सकते हैं, अपितु उनके मध्य बहुत अन्तर एवं दूरी होगी। ईमानवाले अल्लाह के अतिथि होंगे तथा मान-सम्मान के अधिकारी होंगे। तथा अवहेलना करने वाले काफ़िर कष्ट तथा दुखों की बेड़ियों में जकड़े हुए नरक की अग्नि में झुलसेंगे। इस विषय को अन्य स्थान पर भी वर्णन किया गया है। जैसे *सूर: अल-जासिया-२१*, *सूर: स्वाद-२८*, *सूर: अल-हश्र-२०* आदि।

[2]अर्थात नरक की यातना की कड़ाई तथा भयानकता से घबरा कर बाहर निकलना चाहेंगे, तो फ़रिश्ते पुन: उन्हें नरक की गहराईयों में ढकेल देंगे।

[3]यह फ़रिश्ते कहेंगे अथवा अल्लाह की ओर से आकाशवाणी होगी, कुछ भी हो इसमें उन झुठलाने वालों के अपमान तथा अनादर की जो सामग्री है, वह छिपी नहीं।

[4]निकट यातना (निकट की कुछ यातनाओं) से सांसारिक यातनायें अथवा सांसारिक दुख एवं रोग आदि का तात्पर्य है। कुछ के निकट वे हत्यायें इससे तात्पर्य हैं, जिससे बद्र के युद्ध में काफ़िर पीड़ित हुए। अथवा वह अकाल है, जो मक्कावासियों पर पड़ा था। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं ये समस्त अवस्थायें एवं परिस्थितियाँ इसमें सम्मिलित हो सकती हैं।

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾

अतिरिक्त चखायेंगे ताकि वह लौट आयें ।[1]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जिसे अल्लाह तआला की आयतों से भाषण दिया गया फिर भी उसने उनसे मुख फेर लिया,[2] निश्चय हम भी पापियों से बदला लेने वाले हैं ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٢٣﴾

(२३) तथा वास्तव में हमने मूसा को किताब (ग्रन्थ) प्रदान की, तो आपको कदापि उसके मिलन में शंका नहीं करनी चाहिए ।[3] तथा हमने उसे[4] इस्राईल की सन्तान के मार्गदर्शन का साधन बनाया ।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٢٤﴾

(२४) तथा हमने उनमें से चूँकि उन लोगों ने धैर्य धारण किया, ऐसे अगुवा बनाये, जो हमारे आदेश से लोगों का मार्गदर्शन करते थे तथा हमारी आयतों पर विश्वास रखते थे ।[5]

---

[1]यह आख़िरत के महाप्रकोप से पूर्व छोटे प्रकोप भेजने के कारण हैं कि शायद वे कुफ़्र तथा शिर्क के पाप के मार्ग को छोड़ दें ।

[2]अर्थात अल्लाह की आयतें सुनकर जो ईमान व आज्ञापालन का हेतु हैं, जो व्यक्ति इससे विमुख होता है, उससे बड़ा अत्याचारी कौन है ? अर्थात यही सबसे बड़ा अत्याचारी है ।

[3]कहा जाता है कि यह संकेत उस मिलन की ओर है जो मेराज की रात्रि (आकाश यात्रा की रात्रि) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदरणीय मूसा से हुई, जिसमें आदरणीय मुसा ने नमाज़ों में कमी कराने की सलाह दी थी ।

[4] 'उसे' से तात्पर्य किताब (तौरात) है अथवा स्वयं आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ।

[5]इस आयत से धैर्य का महत्व प्रकट होता है । धैर्य एवं संयम का अर्थ है कि अल्लाह के आदेशों का पालन करने तथा पाप को छोड़ने में तथा अल्लाह के संदेष्टाओं की पुष्टि एवं उनके अनुसरण में जो कष्ट सहन करने पड़े, उन्हें प्रसन्नता पूर्ण सहन करना । अल्लाह ने फ़रमाया : उनके धैर्य रखने तथा अल्लाह की आयतों पर विश्वास करने के कारण

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

(२५) आपका प्रभु उन सबके मध्य इन समस्त बातों का निर्णय क़ियामत के दिन करेगा, जिनमें वे मतभेद कर रहे हैं।[1]

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

(२६) क्या इस बात ने भी उन्हें मार्गदर्शन प्रदान न किया कि हमने उनसे पूर्व के बहुत से सम्प्रदायों को ध्वस्त कर दिया, जिनके आवासों में ये चल फिर रहे हैं।[2] उसमें तो बड़ी-बड़ी शिक्षायें हैं। क्या फिर भी यह नहीं सुनते।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) क्या यह नहीं देखते कि हम पानी को उसर (निर्जन) धरती की ओर बहाकर ले जाते हैं फिर उससे हम खेतियाँ उपजाते हैं जिसे उनके पशु एवं वे स्वयं खाते हैं[3] क्या फिर भी यह नहीं देखते ?

हमने उन्हें धार्मिक अगुवाई एवं प्रतिनिधित्व के स्थान पर नियुक्त कर दिया, परन्तु जब उन्होंने उसके विपरीत परिवर्तन एवं संशोधन का कार्य प्रारम्भ कर दिया, तो उनसे यह पद छीन लिये गये। अतः उसके पश्चात उनके दिल कड़े हो गये, फिर न उनका कर्म सदाचारी रहा न उनका विश्वास ठीक।

[1]इससे वह मतभेद तात्पर्य है जो अहले किताब में आपस में व्यापत था, इसके अन्तर्गत वह मतभेद भी आ जाते हैं, जो ईमानवालों तथा काफ़िरों, सत्यवादियों एवं अज्ञानियों तथा एकेश्वरवादियों एवं बहुदेववादियों के मध्य संसार में रहे, तथा हैं। चूँकि संसार में प्रत्येक गुट अपने तर्क के आधार पर संतुष्ट तथा अपने मार्ग पर दृढ़ रहता है। इसलिए इन मतभेदों का निर्णय क़ियामत के दिन अल्लाह तआला कर देगा, जिसका अर्थ यह है कि सत्यवादियों को स्वर्ग में तथा काफ़िरों एवं अंधकार में भटकने वालों को नरक में डाल देगा।

[2]अर्थात विगत समुदाय, जो झुठलाने एवं ईमान से शून्य होने के कारण नाश हुए, क्या ये नहीं देखते कि आज संसार में उनका अस्तित्व शेष नहीं रहा, परन्तु उनके घर हैं, जिनके ये उत्तराधिकारी बने हुए हैं। अर्थ इसका मक्कावासियों को चेतावनी है कि तुम्हारा भी परिणाम ऐसा ही हो सकता है, यदि ईमान न लाये।

[3]पानी से तात्पर्य आकाशीय वर्षा तथा श्रोतों, नाले एवं घाटियों का पानी है। जिसे अल्लाह तआला बंजर तथा निर्जन स्थान की ओर बहाकर ले जाता है तथा उससे पैदावार

(२८) तथा कहते हैं कि यह निर्णय कब होगा ? यदि तुम सच्चे हो तो बतलाओ ?[1]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾

(२९) उत्तर दे दो कि निर्णय के दिन ईमान लाना बेईमानों को कुछ काम न आयेगा। तथा न उन्हें ढील दी जायेगी।[2]

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾

(३०) अब आप इनका विचार भी छोड़ दीजिए [3]

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ

होती है, जो मुनष्य खाता है, तथा जो भूसा एवं चारा होता है, वह पशु खा लेते हैं। इससे तात्पर्य कोई विशेष क्षेत्र अथवा धरती एवं भूमि नहीं है, अपितु सामान्य है, जो प्रत्येक निर्जन, बंजर समतल भूमि को सम्मिलित करता है।

[1]इस निर्णय (विजय) से तात्पर्य अल्लाह तआला का वह प्रकोप है जो मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से माँगा करते थे तथा कहा करते थे कि ऐ मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तेरे अल्लाह की सहायता तेरे लिए कब आयेगी, जिससे तू हमें डराता रहता है। अभी तो हम यही देख रहे हैं कि तुझ पर ईमान लाने वाले छुपे फिरते हैं।

[2]इस विजय दिवस से तात्पर्य आख़िरत के निर्णय का दिन है, जहाँ ईमान स्वीकार किया जायेगा तथा न अवसर प्रदान किया जायेगा। मक्का विजय का दिन नहीं है क्योंकि उस दिन طُلَقاء का इस्लाम स्वीकार कर लिया गया था, जिनकी संख्या लगभग दो हज़ार थी। (इब्ने कसीर) طُلَقـاء से अभिप्राय, वह मक्कावासी हैं जिनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का की विजय के दिन दण्ड एवं संज्ञा देने के बजाय क्षमा कर दिया तथा यह कहकर स्वतन्त्र कर दिया था कि आज तुम्हारी पूर्व कालिक क्रूरता एवं अत्याचार का वदला नहीं लिया जायेगा। अत: उनका बहुमत मुसलमान हो गया था।

[3]अर्थात इन मूर्तिपूजकों से विमुख हो जायें तथा उपदेश एवं आमंत्रण का कार्य अपने ढ़ग से करते रहें, जो प्रकाशना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर की गयी है उसका अनुकरण करें। जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ﴾

"आप स्वयं उस मार्ग पर चलिये। जिसकी प्रकाशना आपके प्रभु की ओर से आपके पास आई है। अल्लाह के अतिरिक्त कोई सच्चा पूज्य नहीं और बहूदेववादियों का विचार न कीजिए।" (*सूर: अल-अनआम*-१०६)

إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ۝٣٠

तथा प्रतीक्षा में रहें[1] यह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।[2]

सूरतुल अहज़ाब-३३

سُورَةُ الأَحْزَابِ

सूर: अहज़ाब मदीने में अवतरित हुई तथा इसमें तिहत्तर आयतें तथा नौ रूकुऊ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूं जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝١

(१) हे नबी ! अल्लाह तआला से डरते रहना[3] तथा काफ़िर एवं मुनाफ़िकों की बातों में न आ जाना, अल्लाह तआला असीम ज्ञान वाला अत्यधिक हिक्मत वाला है ।[4]

---

[1]अर्थात अल्लाह के वचन का कि वह कब पूरा होता है तथा तेरे विरोधियों पर तुझे कब प्रभुत्व प्रदान करता है ? वह अवश्य पूरा होकर रहेगा ।

[2]अर्थात ये काफ़िर प्रतीक्षा में है कि शायद यह रसूल ही कालचक्र का शिकार हो जाये तथा उसका आमन्त्रण समाप्त हो जाये । परन्तु दुनिया ने देख लिया कि अल्लाह ने अपने नबी के साथ दिये हुए सभी वचनों को पूरा किया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कालचक्र से ग्रसित होने की प्रतीक्षा करने वाले को लज्जित एवं अपमानित किया अथवा उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दास बना दिया ।

[3]आयत में संयम पर नित्यता तथा धर्म के प्रचार-प्रसार में दृढ़ता का आदेश है । तलक बिन हबीब कहते हैं संयम का अर्थ है कि अल्लाह की आज्ञापालन अल्लाह के प्रदान किये हुए प्रकाश के अनुसार करें तथा अल्लाह से पुण्य की आशा रखे तथा अल्लाह की अवैज्ञा अल्लाह के प्रदान किये हुए प्रकाश के आधार पर छोड़ दें, अल्लाह के प्रकोप से डरते हुए । (इब्ने कसीर)

[4]तो वही इस बात का अधिकारी है कि उसकी आज्ञापालन की जाय इसलिए कि परलोक को वही जानता है तथा अपने कथन तथा वचन एवं कार्यों में वह निपुण है ।

(२) तथा जो कुछ आप की ओर आपके प्रभु की ओर से प्रकाशना (वह्यी) की जाती है[1] उसका पालन करें (विश्वास करो) कि अल्लाह तुम्हारे प्रत्येक कर्म से परिचित है।[2]

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٢﴾

(३) तथा आप अल्लाह ही पर भरोसा रखें[3] अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।[4]

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿٣﴾

(४) किसी व्यक्ति की छाती (वक्ष) में अल्लाह तआला ने दो दिल नहीं रखे[5] तथा

مَّا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّن قَلْبَيْنِ

---

[1]अर्थात क़ुरआन की तथा हदीसों की भी, इसलिए कि हदीसों के शब्द यद्यपि *नबी* सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र मुख से मुखरित हुए हैं, परन्तु उसके अर्थ एवं व्याख्या अल्लाह की ओर से ही हैं। इसीलिए उनको गुप्त प्रकाशना अथवा पाठ न की जाने वाली (अपाठ्य) प्रकाशना कहा जाता है।

[2]तो उससे तुम्हारी कोई बात गुप्त नहीं रह सकती।

[3]अपनी समस्त समस्याओं एवं परिस्थितयों में।

[4]उन लोगों के लिए जो उस पर भरोसा रखते, तथा उसकी ओर आकर्षित होते हैं।

[5]कुछ कथनों से यह बात ज्ञात होती है कि एक मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) यह दावा करता था कि उसके दो दिल हैं एक दिल मुसलमानों के साथ है तथा दूसरा कुफ्र एवं काफ़िरों के साथ है। (मुसनद अहमद१/२६७) ये आयत उसके खण्डन में अवतरित हुई। अभिप्राय यह है कि यह संभव ही नहीं है कि एक दिल में अल्लाह का प्रेम तथा उसके शत्रुओं का प्रेम, एकत्रित हो जाये । कुछ कहते हैं कि मक्का के मूर्तिपूजकों में एक व्यक्ति जमील बिन मामर फहरी था, जो बड़ा चतुर, पाखण्डी तथा अत्यन्त वाक्पटु था, उसका दावा था कि मेरे तो दो दिल हैं, जिनसे मैं सोचता हूँ, जबकि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के एक ही दिल है। यह आयत उसके खण्डन में अवतरित हुई। (ऐसरूत्तफासीर) कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि आगे दो समस्याओं का वर्णन हो रहा है, यह उनका प्रस्तावना है। अर्थात जिस प्रकार एक व्यक्ति के दो दिल नहीं हो सकते उसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से 'जेहार' कर ले अर्थात यह कह दे कि तेरी पीठ मेरे लिए ऐसी ही है जैसे मेरे माँ की पीठ। तो इस प्रकार कहने से उसकी पत्नी उसकी माता नहीं बन जायेगी । जिस प्रकार उसकी दो मातायें नहीं हो सकती। इसी प्रकार कोई व्यक्ति किसी

فِي جَوْفِهِ ۚ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ اللَّائِي تُظَاهِرُونَ مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُم بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ﴿٤﴾

अपनी जिन पत्नियों को तुम माता कह बैठते हो, उन्हें अल्लाह ने तुम्हारी (सचमुच) मातायें नहीं बनाया [1] तथा न तुम्हारे गोद लिये हुए बालकों को (वास्तव में) तुम्हारे पुत्र बनाये हैं।[2] यह तो तुम्हारे अपने मुख की बातें हैं।[3] अल्लाह (तआला) सत्य बात कहता है।[4] तथा वही (सीधी) राह सुझाता है।

ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِندَ اللَّهِ ۚ فَإِن لَّمْ تَعْلَمُوا

(५) लेपालकों को उनके (वास्तविक) पिताओं की ओर सम्बन्धित करके बुलाओ। अल्लाह के निकट पूर्ण न्याय यही है।[5] फिर यदि

को अपना पुत्र (गोद ले) बना ले तो उसका वास्तविक पुत्र नहीं बन जायेगा, बल्कि वह पुत्र तो अपने पिता ही का रहेगा, उसके दो पिता नहीं हो सकते। (इब्ने कसीर)

[1]यह समस्या जिहार कहलाती है, उसका विवरण सूरः *मुजादिला* में आयेगा।

[2]इसका विवरण इसी सूरः में आगे चलकर आयेगा। دعيٌّ का बहुवचन أَدْعِيَاء है। मुँह बोला पुत्र।

[3]अर्थात किसी को माता कह देने से वह माता नहीं बन जायेगी, न पुत्र कहने से पुत्र बन जायेगा, अर्थात उन पर मातृत्व तथा पुत्रत्व का धार्मिक विधान लागू नहीं होंगे।

[4]इसलिए उसका अनुकरण करो तथा मुख बोली स्त्री को माता तथा गोद लिए बालक को पुत्र न कहो, ध्यान रहे कि किसी को प्यार-मोहब्बत में पुत्र कहना अलग बात है तथा गोद लिये बालक को वास्तविक पुत्र मान कर पुत्र कहना अन्य बात है। प्रथम बात मान्य है, यहाँ उद्देश्य दूसरी बात का निषेध करना है।

[5]इस आदेश से उस प्रथा को निषेध कर दिया गया, जो अज्ञान काल से चली आ रही थी तथा इस्लाम के प्रारम्भिक काल में विद्यमान थी कि गोद लिये हुए बालक को वास्तविक पुत्र समझा जाता था। सहाबा केराम का कथन है कि हम ज़ैद बिन हारिसा को जिन्हें रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वतन्त्र करके पुत्र बना लिया था। ज़ैद बिन मोहम्मद कहकर पुकारा करते थे, यहाँ तक कि क़ुरआन की आयत ادعوهم لآبائهم अवतरित हो गयी। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरः अहज़ाब) इस आयत के अवतरित होने के पश्चात आदरणीय अबू हुज़ैफ़ा के घर में समस्या उठ खड़ी हुई, जिन्होंने सालिम को पुत्र बनाया हुआ था, जब मुख बोले पुत्र को वास्तविक पुत्र समझने को रोक दिया गया,

ابَآءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ۗ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ أَخْطَأْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑤

तुम्हें उनके (वास्तविक) पिता का ज्ञान ही न हो, तो वे तुम्हारे धर्मबन्धु एवं मित्र हैं।[1] तुम से भूल चूक से जो कुछ हो जाये उसमें तुम पर कोई पाप नहीं,[2] परन्तु पाप वह है जिसका तुम निश्चय करो तथा निश्चय दिल से करो।[3] अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमा करने वाला दयालु है।

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

(६) पैग़म्बर ईमानवालों पर स्वयं उनसे भी अधिक अधिकार रखने वाले हैं।[4] तथा

तो उससे पर्दा करना भी आवश्यक हो गया नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू हुज़ैफ़ा की पत्नी से कहा कि उसे दूध पिलाकर उसे दूध का साझीदार पुत्र बना लो क्योंकि तुम उस पर हराम हो जाओगी। अत: उन्होंने ऐसा ही किया। (सहीह मुस्लिम किताबुर्रदाअ, बाब रदाअतिल कबीर, अबू दाऊद किताबुन्निकाह बाब फ़ीमन हर्रमा बेही)

[1]अर्थात जिनके वास्तविक पिताओं का ज्ञान है। अब अन्य सम्बन्ध समाप्त करके उन्हीं से उनको सम्बन्धित करो। परन्तु जिनके पिताओं का ज्ञान न हो सके, तो तुम उन्हें अपना भाई तथा मित्र समझो, पुत्र न समझो।

[2]इसलिए कि भूल चूक माफ़ है, जैसाकि हदीस में भी व्याख्या है।

[3]अर्थात जो जान बूझकर ग़लत सम्बन्धित करेगा, वह माहपापी होगा। हदीस में आता है, "जिसने जानते बूझते अन्य पिता से सम्बन्धित किया, उसने कुफ़्र का कार्य किया।" (सहीह बुख़ारी किताबुल मनाक़िब)

[4]नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने समुदाय के जितने हितैषी एवं शुभचिन्तक थे, स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस प्रेम एवं शुभचिन्ता को देखकर इस आयत में आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ईमानवालों के अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करने योग्य, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम अन्य समस्त प्रेम से उच्चतम तथा आपका आदेश अपनी समस्त इच्छाओं से उत्तम बताया है। इसलिए मुसलमानों के लिए आवश्यक है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस माल की माँग अल्लाह के लिए करें। वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर निछावर कर दें, चाहे उन्हें स्वयं कितनी ही आवश्यकता हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने प्राण से भी अधिक प्रेम करें। (जैसे

وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَن تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ﴿٦﴾

पैग़म्बर की पत्नियाँ ईमानवालों की मातायें हैं[1] तथा सम्बन्धी अल्लाह की किताब के आधार पर अन्य ईमानवालों तथा मुहाजिरों के अपेक्षा अधिक अधिकारी हैं।[2] (हाँ) तुम्हें अपने मित्रों के साथ सदव्यवहार करने की आज्ञा है।[3] यह आदेश 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ है।[4]

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ

(७) तथा जबकि हमने समस्त नबियों से वचन लिया (विशेषरूप से) आप से तथा नूह से तथा इब्राहीम से तथा मूसा से तथा

आदरणीय उमर की घटना है) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश सर्वोपरि तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञापालन को महत्वपूर्ण समझें।

जब तक यह आत्म समर्पण नहीं होगा فلا و ربك لا يؤمنون (सूर: अल-निसा-६५) के अनुसार मनुष्य मुसलमान नहीं होगा। इसी प्रकार जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम समस्त प्रेम पर प्रभावशाली नहीं होगा। "لا يؤمن أحدكم حتى أكون" (अलहदीस) के आधार पर मुसलमान नहीं। ठीक उसी प्रकार सन्देष्टा की आज्ञापालन में आलस्य भी "لا يؤمن أحدكم حتى يكون هواه تبعا لما جئت" के अनुरूप होंगे।

[1]अर्थात आदर व सम्मान के करने में तथा उनसे विवाह न करने में मुसलमान पुरूष तथा मुसलमान महिलाओं की मातायें भी हैं।

[2]अर्थात अब देश त्याग, भाईचारे एवं संधि के कारण, उत्तराधिकार न होगा। अब उत्तराधिकार वंशज समीप सम्बन्ध के कारण मिलेगा।

[3]परन्तु तुम अन्य लोगों के साथ परोपकार तथा सहायता देने का कार्य कर सकते हो। इसके अतिरिक्त अपने एक तिहाई माल में से वसीयत (उत्तरदान) कर सकते हो।

[4]अर्थात सुरक्षित पुस्तक में मूल आदेश यही है, यद्यपि अस्थाई रूप से समयानुसार अन्यों को भी उत्तराधिकारी बना दिया गया था, परन्तु अल्लाह के ज्ञान में था कि यह निरस्त कर दिया जायेगा। अतः उसे निरस्त करके पूर्वादेश को लागू कर दिया गया।

وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۖ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ⑦

मरियम के पुत्र ईसा से और हमने उनसे वचन भी पक्का एवं सुदृढ़ लिया।[1]

لِّيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَن صِدْقِهِمْ ۚ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ⑧

(८) ताकि अल्लाह तआला सच्चों से उनकी सच्चाई के विषय में पूछे,[2] तथा न मानने वालों के लिए हमने दुखद यातनायें तैयार कर रखी हैं।

---

[1]इस वचन से क्या अभिप्राय है ? कुछ के निकट यह वह वचन है जो एक-दूसरे की सहायता एवं पुष्टि का सन्देष्टाओं से लिया गया था जैसाकि *सूर: आले इमरान* की आयत संख्या ८१ में है। कुछ के निकट यह वह वचन है जिसका वर्णन *सूर: शूरा* की आयत संख्या १३ में है कि धर्म को स्थापित करना तथा उसमें भेद न डालना। यह वचन यद्यपि समस्त सन्देष्टाओं से लिया गया था, परन्तु यहाँ पर विशेष रूप से पाँच सन्देष्टाओं का नाम है, जिनसे उनके महत्व एवं विशेषता का परिलक्षण होता है तथा उनमें भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन सर्वप्रथम है, जबकि संदेष्टा के आधार पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्तिम हैं, इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मान तथा सम्मान का जिस प्रकार स्पष्टीकरण हो रहा है, उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है।

[2]अर्थात यह वचन इसलिए लिया गया ताकि अल्लाह सच्चे सन्देष्टाओं से पूछे कि उन्होंने अल्लाह का संदेश अपने समुदाय तक उसी प्रकार से पहुँचा दिया था ? अथवा दूसरा अर्थ यह है कि वह सन्देष्टाओं से पूछे कि तुम्हारे समुदाय ने तुम्हारे आमन्त्रण का उत्तर किस प्रकार दिया ? सकारात्मक अथवा नकारात्मक ? जिस प्रकार अन्य स्थान पर है,

﴿ فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ﴾

"हम उनसे भी पूछेंगे जिनकी ओर सन्देष्टा भेजे गये तथा सन्देष्टाओं से भी पूछेंगे।" *(सूर: अल-आराफ़-६)*

इसमें सत्य की ओर आमन्त्रित करने वालों को भी चेतावनी है कि वह सत्य के उपदेश का दायित्व पूर्ण सतर्कता तथा निःस्वार्थ रूप से निभायें ताकि अल्लाह के समक्ष सम्मानित हो सकें तथा उन लोगों के लिए भी चेतावनी है जिनको सत्य का उपदेश दिया गया हो कि वे उसे स्वीकार न करेंगे तो अल्लाह के समक्ष अपराधी तथा दण्ड के भोगी समझे जायेंगे।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱذْكُرُوا۟ نِعْمَةَ ٱللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٩﴾

(९) हे ईमानवालो ! अल्लाह तआला ने जो उपकार तुम पर किया, उसे याद करो जबकि तुम्हारा सामना करने के लिए सेनाओं पर सेनायें आयीं फिर हमने उन पर तीब्रगति वाली आँधी तथा ऐसी सेना भेजी जिन्हें तुमने देखा ही नहीं,[1] तथा जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) सबको देखता है ।

---

[1]इस आयत में अहज़ाब के युद्ध की संक्षिप्त जानकारी है जो ५ हिजरी में घटित हुआ। इसे अहज़ाब इसलिए कहते हैं कि इस अवसर पर समस्त इस्लाम के शत्रु एकत्रित होकर मुसलमानों के केन्द्र मदीने पर आक्रमण करने के लिए आये। अहज़ाब अरबी भाषा में हिज़्ब (गिरोह) का बहुवचन है। इसे ख़न्दक़ का युद्ध भी कहते हैं, इसलिए कि मुसलमानों ने मदीने के बचाओ के लिए मदीने की ओर ख़न्दक़ (खाई) खोद दी थी, ताकि शत्रु मदीने के अन्दर न आ सकें। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि यहूदियों के क़बीले बनु नदीर, जिसको रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके निरन्तर वचन तोड़ने के कारण मदीने से निष्कासित कर दिया था, यह क़बीला ख़ैबर में जाकर आबाद हुआ, उसने मक्का के काफ़िरों को मुसलमानों पर आक्रमण करने के लिए उकसाया, इसी प्रकार ग़त्फ़ान आदि नजद् के क़बीलों को भी सहायता का विश्वास दिलाकर युद्ध के लिए तैयार किया तथा इस प्रकार यह यहूदी इस्लाम तथा मुसलमानों के सभी शत्रुओं को एकत्रित करके मदीने पर आक्रमणकारी होने में सफल हो गये। मक्का के मूर्तिपूजकों का नेतृत्व अबू सुफ़ियान के हाथ में था, उनमें से उन्होंने ओहद के आस-पास पड़ाव डालकर मदीने की नाकाबन्दी कर दी। उनकी कुल संख्या लगभग १० हज़ार थी। जबकि मुसलमान तीन हज़ार थे। इसके अतिरिक्त दक्षिण की ओर यहूदियों का तीसरा क़बीला बनू कुरैज़ा आबाद था, जिससे अभी तक मुसलमानों की संधि थी तथा वे मुसलमानों की सहायता करने के लिए बाध्य थे। परन्तु उसे भी बनू नदीर के यहूदी नेता हुयय बिन अख़्तब ने भड़का कर मुसलमानों पर घातक प्रहार के लिए अपने साथ मिला लिया। इस प्रकार मुसलमान चारों ओर से शत्रुओं के घेरे में फंस गये थे। इस अवसर पर आदरणीय सुलेमान फ़ारसी की सलाह पर ख़न्दक खोदी गयी, जिसके कारण शत्रुओं की सेनायें मदीने में न आ सकीं तथा मदीने के बाहर ही डेरा डालें रहीं। फिर भी इस नाकेबन्दी तथा शत्रुओं के संयुक्त आक्रमण से मुसलमान अत्याधिक भयभीत थे। लगभग एक महीने तक यह नाकाबन्दी रही तथा मुसलमान अत्याधिक भयभीत एवं कठिनाई की परिस्थिति में थे। अन्त में अल्लाह तआला ने दैवी सहायता मुसलमानों को प्रदान की। इन आयतों में उन्हीं भयावाह एवं व्याकुलता की परिस्थितयों में दैवी सहायता का वर्णन

إِذْ جَاءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ⑩

(१०) जबकि (शत्रु) तुम्हारे ऊपर से तथा नीचे से आ गये [1] तथा जबकि आँखें पथरा गयीं तथा कलेजा मुँह को आने लगा। तथा तुम अल्लाह के सम्बन्ध में विभिन्न विचार करने लगे।[2]

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ⑪

(११) यहीं ईमानवालों की परीक्षा ली गयी तथा पूर्णरूप से वे झिंझोड़ दिये गये।[3]

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ⑫

(१२) तथा उस समय बहुमुखी (मिथ्याचारी) एवं रोगी हृदय वाले कहने लगे कि अल्लाह (तआला) तथा उसके रसूल ने हमसे मात्र छल तथा कपट के ही वादे किये थे।

وَإِذْ قَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ

(१३) तथा उन ही के एक गुट ने आवाज लगायी कि हे यथरिब वालो ![4] तुम्हारे

है। प्रथम جنود से तात्पर्य काफ़िरों की सेना है, जो एकत्रित होकर आयी थीं। तीव्रगति की वायु से तात्पर्य वह हवा हो जो तीव्र तूफ़ान के रूप में आयी थी, जिसने शत्रुओं के ख़ेमों को उखाड़ फेंका था, जानवर रस्सियाँ तुड़ाकर भाग खड़े हुए थे, हाँडियाँ उलट गयीं थी तथा सब भागने को बाध्य हो गये। यह वही हवा है जिसके विषय में हदीस में आता है। «نُصِرْتُ بِالصَّبَا، وَأُهْلِكَتْ عَادٌ بِالدَّبُورِ». (सहीह बुख़ारी किताबु इस्तिसक़ा, मुस्लिम बाब फ़ी रीहिस्सबा वददबूर) मेरी सहायता सबा (पूर्वायी) से की गयी तथा 'आद' दबूर (पछुवा) हवा से नाश किये गये।(و جنوداً لم تروها)से तात्पर्य फ़रिश्ते हैं जो मुसलमानों की सहायता के लिए आये। उन्होंने शत्रओं के हृदय में ऐसा भय तथा डर डाल दिया कि उन्होंने वहाँ से शीघ्र भाग जाने में ही अपनी सुरक्षा समझी।

[1]इससे तात्पर्य यह है कि प्रत्येक ओर से शत्रु आ गये अथवा ऊपर से तात्पर्य गत्फ़ान हवाज़िन तथा अन्य नजद के मूर्तिपूजक हैं और नीचे के ओर से क़ुरैश तथा उनके साथी एवं सहयोगी।

[2]यह मुसलमानों की उस अवस्था का वर्णन है जिससे वे उस समय पीड़ित थे।

[3]अर्थात मुसलमानों को भय, हत्या, भूख एवं नाकेबन्दी से पीड़ित करके उनकी परीक्षा ली गयी ताकि द्वयवादी अलग हो जायें।

[4]यथरिब उस सम्पूर्ण क्षेत्र का नाम था, मदीना उसी का एक भाग था, जिसे यहाँ यथरिब का नाम दिया गया है। कहा जाता है कि इसका नाम यथरिब इसलिए पड़ा कि किसी

يَٰٓأَهۡلَ يَثۡرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمۡ فَٱرۡجِعُواْۚ وَيَسۡتَـٔۡذِنُ فَرِيقٞ مِّنۡهُمُ ٱلنَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوۡرَةٞ وَمَا هِيَ بِعَوۡرَةٍۖ إِن يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارٗا ١٣

ठहरने का (यह) स्थान नहीं चलो लौट चलो ।[1] तथा उनका एक अन्य गुट यह आज्ञा नबी से माँगने लगा कि हमारे घर ख़ाली तथा असुरक्षित हैं ।[2] वास्तव में वे (खुले हुए) असुरक्षित न थे, (परन्तु) उनका दृढ़ निश्चय भाग खड़े होने का हो चुका था ।[3]

وَلَوۡ دُخِلَتۡ عَلَيۡهِم مِّنۡ أَقۡطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُواْ ٱلۡفِتۡنَةَ لَأٓتَوۡهَا وَمَا تَلَبَّثُواْ بِهَآ إِلَّا يَسِيرٗا ١٤

(१४) तथा यदि मदीने की चारों ओर से उन पर (सेनायें) प्रवेश करायी जातीं । फिर उन से उपद्रव की माँग की जाती तो ये अवश्य उपद्रव मचा देते तथा कुछ लड़ते भी तो थोड़ी सी ।[4]

समय अमालिका में से किसी ने यहाँ पड़ाव डाला था जिसका नाम यथरिब बिन अमील था । (फ़तहुल क़दीर)

[1]अर्थात मुसलमानों की सेना में रहना अत्यधिक भयावह है, अपने-अपने घरों को वापस लौट जाओ ।

[2]अर्थात वनू कुरैज़ा की ओर से आक्रमण का भय है । इस प्रकार घर वालों के प्राणों एवं माल तथा सम्मान को ख़तरा है ।

[3]अर्थात जो भय वे व्यक्त कर रहे हैं, वह नहीं है, बल्कि वे इसके द्वारा भागने का मार्ग खोज रहे हैं । عَوۡرَةٞ के शाब्दिक अर्थ के लिए देखिए सूर: नूर की आयत संख्या ५८ की व्याख्या ।

[4]अर्थात मदीने अथवा उनके घरों में चारो ओर से शत्रु घुस जायें तथा उनसे माँग करें कि तुम पुन: कुफ्र तथा शिर्क एवं मूर्तिपूजा की ओर लौट आओ, तो ये तनिक देर न करेंगे तथा उस समय घरों को असुरक्षित होने का तर्क भी प्रस्तुत न करेंगे बल्कि तुरन्त मूर्तिपूजा की माँग की ओर झुक जायेंगे । अभिप्राय यह है कि कुफ्र तथा शिर्क उनको प्रिय हैं तथा उसकी ओर ये लपकते हैं ।

(१५) तथा इससे पूर्व तो उन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि पीठ न फेरेंगे [1] तथा अल्लाह (तआला) से किये गये वादे की पूछताछ अवश्य है ।[2]

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ﴿١٥﴾

(१६) कह दीजिए कि यदि तुम मृत्यु अथवा हत्या के भय से भागो तो यह भागना तुम्हें कुछ काम न आयेगा तथा उस समय तुम अत्यन्त कम लाभान्वित किये जाओगे ।[3]

قُل لَّن يَنفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِن فَرَرْتُم مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٦﴾

(१७) पूछिये तो कि यदि अल्लाह (तआला) तुम्हें कोई बुराई पहुँचाना चाहे अथवा तुम पर कोई कृपा करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें बचा सके (अथवा तुमसे रोक सके) ?[4] अपने लिए अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त न कोई पक्षधर पायेगा न सहायता करने वाला ।

قُلْ مَن ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧﴾

---

[1]वताया जाता है कि ये बहुमुखी (मुनाफ़िक) बद्र के युद्ध तक मुसलमान नहीं हुए थे परन्तु जव मुसलमान विजयी होकर विजय सामग्री लेकर मदीने वापस लौटे तो उन्होंने न तो केवल यह कि इस्लाम धर्म धारण करने का प्रदर्शन किया, बल्कि यह भी वचन दिया कि यदि पुन: काफ़िरों से युद्ध का अवसर आया तो वे मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध अवश्य करेंगे यहाँ उनको वही वचन याद दिलाया जा रहा है ।

[2]अर्थात उसे पूरा करने की उनसे माँग की जायेगी तथा वचन तोड़ने की स्थिति में दण्ड के भोगी होंगे ।

[3]अर्थात मृत्यु से तो किसी स्थिति में भी भाग नहीं सकते । यदि रणभूमि से भाग कर भी तुम आ जाओगे, तो क्या लाभ ? कुछ समय पश्चात मृत्यु का प्याला तो तुम्हें पीना ही पड़ेगा ।

[4]अर्थात तुम्हें मारना, रोगी वनाना अथवा व्यवसाय में हानि पहुँचाना अथवा अकाल से पीड़ित करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें उससे बचा सके ? अथवा अपनी दया एवं उपकार करना चाहे तो वह रोक सके ?

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٨﴾

(१८) अल्लाह (तआला) तुम में से (भली-भाँति) जानता है जो दूसरों को रोकते हैं तथा अपने भाई बन्धुओं से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ ।[1] तथा कभी-कभी ही लड़ाई में आ जाते हैं ।[2]

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُم بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا

(१९) तुम्हारी सहायता में (पूरे) कंजूस हैं,[3] फिर जब डर, भय का अवसर आ जाये तो आप उन्हें देखेंगे कि वह आपकी ओर दृष्टि जमा देते हैं तथा उनकी आँखें इस प्रकार घूमती हैं, जैसे उस व्यक्ति की जिस पर मृत्यु की बेहोशी हो ।[4] फिर जब भय जाता रहता है, तो तुम पर अपनी तेज ज़बान से बड़ी बातें बनाते हैं ।[5] माल के बड़े लोभी हैं,[6] यह

---

[1]यह कहने वाले मिथ्याचारी थे, जो अपने दूसरे साथियों को भी मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध करने से रोकते थे ।

[2]क्योंकि वह मृत्यु के भय से पीछे ही रहते थे ।

[3]अर्थात तुम्हारे साथ ख़न्दक (खाई) खोदकर तुमको साथ देने में अथवा अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने में अथवा तुम्हारे साथ मिलकर युद्ध करने में कंजूस हैं ।

[4]यह उनकी कायरता तथा दुस्साहस की स्थिति का वर्णन है ।

[5]अर्थात अपनी बहादुरी एवं वीरता के विषय में डींगें मारते हैं, जो सर्वथा से झूठ पर आधारित होती है अथवा विजय में प्राप्त सामान के विभाजन के समय अपनी वाकपटुता के कारण लोगों को प्रभावित करके अधिक से अधिक माल प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं । आदरणीय कतादह का कथन है, "विजय में प्राप्त सामग्री के विभाजन के समय यह अत्याधिक कृपण एवं अत्याधिक बुरा भाग लेने वाले तथा युद्ध के समय सबसे अधिक कायर तथा साथियों को निस्सहाय छोड़कर भाग जाने वाले हैं ।"

[6]अथवा दूसरा अर्थ यह है कि पुण्य का विचार भी उनके अन्दर नहीं है । अर्थात पूर्वोक्त दोषों एवं त्रुटियों के साथ पुण्य एवं भलाई से भी वे वंचित हैं ।

فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٩﴾

लोग ईमान लाये ही नहीं हैं ।[1] अल्लाह (तआला) ने उनके सम्पूर्ण कर्म अनर्थ कर दिये हैं ।[2] तथा अल्लाह (तआला) पर यह अत्यन्त सरल है ।[3]

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِن يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُم بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُم مَّا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾

(२०) समझते हैं कि अब तक सेनायें चली नहीं गयीं ।[4] तथा यदि सेनायें आ जायें तो ये कामना करते हैं कि काश कि वह वनवासियों में बंजारों के साथ होते कि तुम्हारे समाचार प्राप्त करते रहते,[5] यदि वे तुम में उपस्थिति होते (तब भी क्या) ? यूँ ही बात रखने के लिए तनिक लड़ लेते ।[6]

---

[1]अर्थात हृदय से बल्कि ये भ्रष्टाचारी हैं, क्योंकि उनके हृदय कुफ़्र एवं बैर से भरे हुए हैं ।

[2]इसलिए कि वे मूर्तिपूजक एवं नास्तिक ही हैं तथा नास्तिक एवं मूर्तिपूजक के कर्म व्यर्थ हैं, जिन पर कोई बदला अथवा पुण्य नहीं । अथवा أحبط ، أظهر के अर्थ में है, अर्थात उनके कर्मों की व्यर्थता को व्यक्त कर दिया, इसलिए कि उनके कर्म ऐसे हैं ही नहीं कि वे पुण्य के योग्य हों तथा अल्लाह उन्हें अयोग्य कर दे । (फ़तहुल क़दीर)

[3]उनके कर्मों को अनर्थ कर देना अथवा उनका मिथ्यावाद ।

[4]अर्थात इन मिथ्याचारियों की कायरता, साहस की कमी, भय तथा आतंक की यह दशा है कि काफ़िरों के गिरोह यद्यपि असफल हो कर वापस जा चुके हैं । ये अब भी समझते हैं कि वे अभी तक मोर्चा तथा खेमों में उपस्थिति हैं ।

[5]अर्थात यदि मान भी लिया कि यदि वे काफ़िरों के गिरोह पुन: युद्ध के विचार से वापस आ जायें त भ्रष्टाचारी की इच्छा यही होगी कि वे मदीना नगर में आने के बजाय, बाहर रेगिस्तान में बद्दुओं के साथ हों तथा वहाँ लोगों से तुम्हारे विषय में पूछते रहें कि मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तथा उसके साथी नाश हुए अथवा नहीं ? अथवा काफ़िरों की सेना सफल रही अथवा असफल ।

[6]मात्र अपमान के भय से अथवा स्वदेशी के पक्ष के कारण से । इसमें उन लोगों के लिए घोर चेतावनी है जो धर्मयुद्ध से पीठ मोड़ते हैं अथवा उससे पीछे हटते रहते हैं ।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿٢١﴾

(२१) अवश्य तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह में उत्तम आदर्श हैं ।[1] प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह (तआला) की तथा क़यामत के दिन की संभावना रखता है तथा अत्याधिकता अल्लाह को स्मरण करता है ।[2]

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ

(२२) तथा जब ईमानवालों ने (काफ़िरों की) सेनाओं को देखा तो (सहसा) कह उठे कि इन्हीं का वचन हमें अल्लाह तआला ने तथा उसके रसूल ने दिया था तथा अल्लाह (तआला)

---

[1]अर्थात हे मुसलमानों एवं मुनाफ़िकों ! तुम सबके लिए रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में आदर्श है, तो तुम धर्मयुद्ध में तथा धैर्य एवं संयम में उसका अनुसरण करो। हमारा संदेष्टा धर्मयुद्ध के समय भूखा रहा यहाँ तक कि पेट पर पत्थर बाँधने पड़े, उसका मुख आहत हो गया उसका दाँत टूट गया, खंदक अपने हाथों से खोदी तथा लगभग एक महीने शत्रु के सामने डटा रहा। यह आयत यद्यपि अहज़ाब के युद्ध के विषय में अवतरित हुई है, जिसमें युद्ध के अवसर पर विशेषरूप से रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के व्यक्तिगत आचरण को समक्ष रखने तथा अनुकरण करने का आदेश दिया गया है। परन्तु यह आदेश सामान्य है अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त कथनी, करनी एवं अवस्था में मुसलमानों के लिए अनुकरण अनिवार्य है चाहे उसका सम्बन्ध इबादत से हो अथवा सामाजिक, अर्थव्यवस्था से अथवा राजनीति से, जीवन के प्रत्येक कोण में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्गदर्शन का अनुकरण अनिवार्य है ।-----﴿وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ﴾ (सूर: अल-हश्र) तथा ﴿إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ﴾ (सूरे आले इमरान-३१) का अर्थ भी यही है।

[2]इससे यह स्पष्ट हो गया कि संदेष्टा के आचरण का अनुकरण वही करेगा जो आख़िरत में अल्लाह के मिलन पर विश्वास रखता तथा अत्याधिक अल्लाह का वर्णन तथा स्मरण करता है । आज मुसलमान भी सामान्य रूप से इन दोनों गुणों से वंचित हैं। इसलिए रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण का भी कोई महत्व उनके दिलों में नहीं है। उनमें जो धार्मिक लोग हैं उनके नेता, मुखिया, महात्मा, गुरू तथा ज्ञानी हैं तथा जो सांसारिक लोग तथा राजनैतिक लोग हैं उनके गुरू तथा नेता पाश्चात्य देश के स्वामी हैं । रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम के मौखिक दावे बड़े हैं, परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुखिया तथा गुरू मानने के लिए उनमें से कोई तैयार नहीं है। فإلى الله المشتكى

وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢٢﴾

तथा उसके रसूल सत्य हैं ।[1] और उस (वस्तु) ने उनके ईमान में तथा आज्ञापालन में और भी बढ़ोत्तरी कर दी ।[2]

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ ۖ فَمِنْهُم مَّن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُم مَّن يَنتَظِرُ ۖ

(२३) ईमानवालों में (ऐसे) लोग भी हैं जिन्होंने जो प्रतिज्ञा अल्लाह (तआला) से की थी, उन्हें सच्चा कर दिखाया [3] कुछ ने तो अपना वचन पूरा कर दिया[4] तथा कुछ

---

[1]अर्थात मिथ्याचारियों ने तो शत्रुओं की अधिक संख्या तथा घोर परिस्थितियों को देखकर कहा था कि अल्लाह और रसूल के वचन धोखा थे, उनके विपरीत ईमानवालों ने कहा कि अल्लाह तथा रसूल ने जो वादा किया है कि दुख एवं परीक्षा की घड़ी से गुज़ार कर तुम्हें विजय एवं सफलता प्रदान की जायेगी, वह सत्य है ।

[2]अर्थात परिस्थितियों की कठिनाई एवं भयानकता ने उनके ईमान को डगमग नहीं किया, अपितु उनके ईमान में तथा आज्ञाकारिता एवं स्वीकृति तथा प्रसन्नता की भावना को और वढ़ा दिया । इसमें इस बात का प्रमाण है कि लोगों तथा उसकी विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर ईमान तथा उसकी शक्ति में कमी एवं वृद्धि होती है, जैसाकि मुहद्दसीन (हदीस के विशेषज्ञों) का मत है ।

[3]यह आयत उन कुछ सहाबा के विषय में अवतरित हुई है, जिन्होंने इस अवसर पर अपने प्राणों की आहुति देने के विचित्र एवं आश्चर्यजनक करतब दिखाये थे तथा उन्हीं में वे सहावा भी सम्मिलित थे जो बद्र के रण में सम्मिलित न हो सके थे, परन्तु उन्होंने यह प्रतिज्ञा कर रखी थी कि यदि अब पुन: कोई अवसर आया तो धर्मयुद्ध में भरपूर भाग लेंगे, जैसे नज़र बिन अनस आदि जो अन्त में लड़ते हुए ओहद के युद्ध में शहीद हुए । उनके शरीर पर तलवार, भाले तथा तीरों के ८० से ऊपर घाव थे, शहादत के पश्चात उनकी बहन ने उन्हें उनकी ऊँगली के पोर से पहचाना (मुसनद अहमद भाग ४ पृष्ठ संख्या १९३)

[4] نَحْب के अर्थ वचन, मनौती (मन्नत) तथा मृत्यु किये गये हैं । अभिप्राय यह है कि उन सत्यवादियों में से कुछ ने अपना वचन अथवा मन्नत पूरी करते हुए शहीद हो गये ।

وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾

(अवसर की) प्रतीक्षा में हैं तथा उन्होंने कोई परिवर्तन नहीं किया ।[1]

لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٤﴾

(२४) ताकि अल्लाह (तआला) सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे दे तथा यदि चाहे तो द्रुयवादियों को दण्ड दे अथवा उन की भी क्षमा-याचना स्वीकार करे,[2] अल्लाह (तआला) अत्यन्त क्षमाशील एवं अत्यन्त दयालु है ।

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۚ وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ﴿٢٥﴾

(२५) तथा अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों को क्रोध में भरे हुए ही (असफल) लौटा दिया कि उनकी कोई कामना पूरी न हुई ।[3] तथा उस युद्ध में अल्लाह (तआला) स्वयं ही ईमानवालों को काफ़ी हो गया ।[4] अल्लाह (तआला) अत्यन्त शक्तिशाली एवं प्रभावशाली है ।

---

[1]तथा अन्य भी हैं जो शहीद नहीं हो सके, जबकि उसकी चेष्टा में धर्मयुद्ध में भाग लेते हैं तथा शहादत का सौभाग्य प्राप्त करने की कामना रखते हैं ।

[2]अर्थात उन्हें इस्लाम धर्म धारण करने का सौभाग्य प्रदान कर दे ।

[3]अर्थात मूर्तिपूजक जो विभिन्न क्षेत्र से एकत्रित होकर आये थे ताकि मुसलमानों का अस्तित्व ही समाप्त कर दें । अल्लाह ने उन्हें अपने क्रोध तथा बुरे विचार के साथ वापस लौटा दिया न तो सांसारिक धन दौलत उनके हाथ लगी तथा न आख़िरत में प्रतिफल अथवा पुण्य प्राप्त करने के अधिकारी होंगे, किसी भी प्रकार का पुण्य उन्हें प्राप्त न होगा ।

[4]अर्थात मुसलमानों को उनसे लड़ने की आवश्यकता ही नहीं हुई, बल्कि अल्लाह तआला ने अपने ईमानदार भक्तों को वायु तथा फ़रिश्तों के द्वारा सहायता पहुँचायी इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया. «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ، صَدَقَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَأَعَزَّ جُنْدَهُ، وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ، فَلَا شَيْءَ بَعْدَهُ» . (सहीह बुख़ारी किताबुल उमरा) "एक अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्यनीय नहीं, उसने अपना वचन सत्य कर दिखाया, अपने दास को सहायता की, अपनी सेना को सफल किया तथा समस्त गिरोहों को अकेले उसने पराजित

(२६) तथा जिन अहले किताब ने उनके साथ साँठ गाँठ कर ली थी उन्हें (भी) अल्लाह तआला ने दुर्गों से निकाल दिया तथा उनके दिलों में (भी) भय डाल दिया कि तुम उनके एक गुट को हत कर रहे हो तथा एक गुट को बंदी बना रहे हो।

وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُم مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِن صَيَاصِيهِمْ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ﴿٢٦﴾

(२७) तथा उसने तुम्हें उनकी भूमि का तथा उनके घरों का तथा धन-सम्पत्ति का स्वामी बना दिया[1] तथा उस भूमि का भी जिस पर

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَئُوهَا

किया, उसके पश्चात कोई शक्ति नहीं।" यह प्रार्थना हज, उमरह, धर्मयुद्ध तथा यात्रा से वापसी पर भी पढ़नी चाहिए।

[1]इसमें बनी कुरैज़ा के युद्ध का वर्णन है। जैसाकि पहले व्यतीत हो चुका है कि उसने संधि को तोड़कर अहज़ाब के युद्ध के समय मूर्तिपूजकों तथा अन्य यहूदियों का साथ दिया था। अत: अहज़ाब के युद्ध से वापस जाकर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी स्नान ही कर पाये थे कि आदरणीय जिबरील आ गये तथा कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हथियार रख दिये ? हम फ़रिश्तों ने तो नहीं रखा है। चलिए अब बनू कुरैज़ा से निपटना है। मुझे अल्लाह ने इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजा है। अत: आपने मुसलमानों में घोषणा करा दी बल्कि उनको विशेषरूप से कह दिया कि अस्र की नमाज़ वहाँ जाकर पढ़नी है। यह आबादी मदीने से कुछ मील की दूरी पर थी। ये अपने दुर्गों में बंद हो गये। बाहर से मुसलमानों ने घेराबन्दी कर ली, जो लगभग पच्चीस दिन निरन्तर रही। अन्त में उन्होंने साद बिन मुआज़ को अपना मध्यस्थ मान लिया कि वह जो निर्णय देंगे हमें स्वीकार होगा। अत: उन्होंने निर्णय दिया कि उनमें से लड़ने वालों की हत्या कर दी जाये तथा बच्चे बूढ़े तथा स्त्रियों को बन्दी बना लिया जाये तथा उनका धन मुसलमानों में विभाजित कर दिया जाये। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह निर्णय सुनकर फ़रमाया कि यही निर्णय आकाश पर अल्लाह तआला का है इसके अनुसार उनके लड़ाकूओं की गर्दनें उड़ा दी गयी। तथा मदीने को उनके अपवित्र अस्तित्व से प्रतिपकार दिया गया। (देखिये सहीह बुख़ारी बाब गज्वतिल खंदक) أنزل दुर्गों से नीचे उतार दिया, ظاهروهم काफ़िरों की उन्होंने सहायता की।

وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾

तुम्हारे पग ही नहीं गये ।[1] अल्लाह तआला सब कुछ कर सकने का सामर्थ्य रखता है ।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾

(२८) हे नबी ! अपनी पत्नियों से कह दो कि यदि तुम्हारी इच्छा सांसारिक जीवन तथा सांसारिक शोभा की है, तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिला दूँ तथा तुम्हें अच्छाई के साथ छोड़ दूँ ।

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

(२९) तथा यदि तुम्हारी इच्छा अल्लाह तथा उसका रसूल एवं आख़िरत का घर है तो (विश्वास करो कि) तुममें से पुण्य कार्य करने वालियों के लिए अल्लाह (तआला) ने अत्यन्त उत्तम बदला रख छोड़े हैं ।[2]

---

[1]कुछ ने इससे ख़ैबर की भूमि का अर्थ लिया है क्योंकि उसके पश्चात ही हुदैबिया संधि के पश्चात मुसलमानों ने ख़ैबर पर विजय प्राप्त की है । कुछ ने कहा कि मक्का की भूमि है तथा कुछ ने फारस तथा रोम की भूमि को इसका अभिप्राय बताया है तथा कुछ ने उन समस्त धरती को बताया जो मुसलमान क़यामत तक विजय द्वारा प्राप्त करेंगे । (फ़तहुल क़दीर)

[2]विजय प्राप्त होने के परिणाम स्वरूप जब मुसलमानों की स्थिति पहले की अपेक्षा कुछ सुधर गयी थी तो अंसार तथा मुहाजिरों की महिलाओं को देखकर पवित्र पत्नियों ने भी अपने पोषण ख़र्च को बढ़ाने की माँग की । चूँकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सरलता प्रिय थे, इसीलिए पवित्र पत्नियों की इस माँग पर अत्यन्त दुखी हुए तथा पत्नियों से अलग रहने लगे, जो एक महीने तक निरन्तर रहा अन्त में अल्लाह तआला ने यह आयत अवतरित की । इसके पश्चात आपने सर्वप्रथम आदरणीय आयशा को यह आयत सुनाकर उन्हें अधिकार दिया फिर भी उन्हें कहा कि स्वयं निर्णय करने के बजाय अपने माता-पिता से परामर्श के पश्चात ही कोई निर्णय लेना । आदरणीय आयशा ने कहा कि यह कैसे हो सकता हैं कि मैं आपके विषय में परामर्श करूँ, बल्कि मैंने अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को छोड़कर सांसारिक सुख-सुविधा को अधिमान नहीं दिया । (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अहज़ाब) उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाहित सम्बन्ध में नौ पत्नियां थीं, पांच कुरैश में से थीं आदरणीया आयशा, हफ़सा, उम्मे हबीबा, सौदह एवं उम्मे सलमा तथा चार उनके अतिरिक्त अर्थात

(३0) हे नबी की पत्नियो ! तुममें से जो भी अश्लील कर्म करेगी उसे दुगुनी यातना दी जायेगी[1] अल्लाह तआला ने निकट यह अत्यन्त सरल बात है।

يَٰنِسَآءَ ٱلنَّبِيِّ مَن يَأْتِ مِنكُنَّ بِفَٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُضَٰعَفْ لَهَا ٱلْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرًا ⑳

आदरणीया सफ़िया, मैमूना, ज़ैनब तथा जवैरिया थीं। رضي الله عنهن कुछ लोग पुरूष की ओर से अलग होने को तलाक़ (विवाह-विच्छेद) कहते हैं। परन्तु यह बात उचित नहीं है। उचित बात यह है कि अलग होने का अधिकार देने के पश्चात स्त्री अलगाव पसन्द नहीं करती तो फिर तलाक़ न होगी, जैसे कि पवित्र पत्नियों ने अलगाव के बजाय रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विवाह के बन्धन में रहना ही पसन्द किया, तो अधिकार देने को तलाक नहीं माना गया। (सहीह बुख़ारी किताबुन तलाक़)

[1] क़ुरआन में الفاحشة (लाम अक्षर के साथ) को व्याभिचार के अर्थ में प्रयोग किया गया है परन्तु فاحشة (जातिवाचक संज्ञा) को बुराई के लिए। यहाँ इसका अर्थ दुराचार तथा असभ्य व्यवहार के हैं। क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ दुराचार उनको दुख पहुँचाना है, जिसका करना कुफ़्र है। इसके अतिरिक्त पवित्र पत्नियाँ स्वयं भी उच्च पद पर थीं । तथा सर्वोच्च पद पर आसीन लोगों की साधारण त्रुटि भी बड़ी त्रुटियों में गणित होती है। इसलिए उन्हें दोगुने यातना के दण्ड की चेतावनी दी गयी है।